राष्ट्रीय दैनिक

प्रात:किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 मार्च 2026 तक देश को नसली हिंसा से मंव्द्धत करा देंगे........ बसपा का अब किसी चंव्द्धनाव में सपा या कांग्रेस से कोई गठबंधन नहीं होगा........ 12

वर्ष : 12 | अंक : 135 | पटना, सोमवार, 26 अगस्त, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

संक्षिप्त खबरें

मुख्यमंत्री ने श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की दी बधाई

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व के अवसर पर प्रदेश एवं देशवासियों को बधाई एवं शुभकाम शुभकामनायें दी है हैं। मुख्यमंत्री ने अपने बधाई संदेश में कहा है कि भारतीय संस्कृति और परम्परा में पर्व-त्योहारों की एक लंबी श्रृंखला है, जो हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं विविधता में एकता का प्रतीक है। उन्होंने कहा है कि प्रतिवर्ष भादो माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव जन्माष्टमी के त्योहार के रूप में बड़े धूमधाम से पारम्परिक रीति रिवाज के अनुसार मनाया जाता है। इस अवसर पर भगवान श्रीकृष्ण के आदर्शों और उनके कर्मयोग के उपदेश को लोग आत्मसात करने का संकल्प लेते हैं तथा अपने सुख, समृद्धि एवं सफलता की कामना करते हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया है कि यह पर्व प्रदेश में सामाजिक समरसता, प्रेम और उत्साह के वातावरण को और मजबूत करेगा तथा बिहार सुखी, समृद्ध और विकसित प्रदेश बनेगा।

मुख्यमंत्री ने हजरत इमाम हुसैन को दी श्रद्धांजलि

पटना मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने चेहल्लुम के अवसर पर हजरत इमाम हुसैन और कर्बला के तमाम शहीदों को याद करते हुये उन्हें अपनी श्रद्धांजलि पेश की और कहा कि हजरत इमाम हुसैन की कुबार्नी अमर है। हम सबको इससे प्रेरणा लेकर नफरत के विरूद्ध इंसाफ, सच्चाई, भलाई और हक के परचम को बुलंद रखने का संकल्प लेना चाहिये। यही हजरत इमाम हुसैन और कर्बला के तमाम शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मुख्यमंत्री ने चेहल्लुम को आपसी भाईचारा, पारस्परिक प्रेम, सामाजिक सद्भाव, शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनाये जाने की प्रदेश एवं देशवासियों से अपील की।

मोदी ने तेलुगू भाषा दिवस, जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी और ओणम की दी शुभकामनाएं

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस महीने 29 तारीख को तेलुगू भाषा दिवस के मद्देनजर तेलुगु भाषियों को इसकी शुभकामनाएं दी है। इसके साथ ही उन्होंने जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, ओणम और मिलाद उन नबी की शुभकामनाएं दी है। श्री मोदी ने रविवार को आकाशवाणी पर अपने मासिक कार्यक्रम मन की बात में ये शुभकामनाएं देते हुये कहा, प्रपंच व्याप्तंगा उन्न, तेलुगु वारिकि, तेलुगु भाषा दिनोत्सव शुभाकांक्षलु। उन्होंने कहा, ह्लकुछ ही दिनों में अनेक त्योहार आने वाले हैं। मैं, आप सभी को उनकी ढेर सारी शुभकामनाएँ देता हूँ। जन्माष्टमी का त्योहार भी है। अगले महीने शुरूआत में ही गणेश चतुर्थी का भी पर्व है। ओणम का त्योहार भी करीब है। मिलाद-उन-नबी की भी बधाई देता हूं। उन्होंने लोगों से बारिश के इस मौसम में सावधानी बरतने की अपील करते हुए कहा कि वह कैच द रेन मूवमेंट का हिस्सा बनने का भी आग्रह भी दोहरा रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने आकाशवाणी पर अपने मासिक कार्यक्रम मन की बात में कई बिंदुओं पर की चर्चा

बिना राजनीतिक पृष्ठभूमि वाले नई युवा पीढ़ी के राजनीति में आने से लोकतंत्र होगा मजबूत: मोदी

प्रात : किरण

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कहा कि स्वतंत्रता दिवस पर उनके आह्वान पर बड़ी संख्या में ऐसे नौजवान राजनीति में आने के लिये तैयार बैठे हैं जिनकी पृष्ठभूमि राजनीतिक नहीं है और इससे देश को विकसित भारत का लक्ष्य हासिल करने के लिए नई उर्जा, नया जोश एवं नया अनुभव मिलेगा। श्री मोदी ने आकाशवाणी पर अपने मासिक कार्यक्रम मन की बात में इसका उल्लेख करते हुए कहा कि इस साल उन्होंने लाल किले से बिना किसी राजनीतिक पृष्ठभूमि वाले एक लाख युवाओं को राजनीतिक व्यवस्था से जोड़ने का आह्वान किया है। उनकी इस बात पर जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई है। इससे पता चलता है कि कितनी बड़ी संख्या में देश के युवा, राजनीति में आने को तैयार बैठे हैं। बस उन्हें सही मौके और सही मार्गदर्शन की तलाश है। प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्हें इस विषय पर देश-भर के युवाओं के पत्र भी मिले हैं। सोशल मीडिया पर भी जबरदस्त

उत्साह देखने को मिल रहा है। लोगों ने कई तरह के सुझाव भी भेजे हैं। कुछ युवाओं ने पत्र में लिखा है कि ये उनके लिए वाकई अकल्पनीय है। दादा या माता-पिता की कोई राजनीतिक विरासत नहीं होने की वजह से, वे, राजनीति में चाहकर भी नहीं आ पाते थे। कुछ युवाओं ने लिखा कि उनके पास जमीनी स्तर पर काम करने का अच्छा अनुभव है, इसलिए, वे लोगों की समस्याओं को सुलझाने में मददगार बन सकते हैं। कुछ युवाओं ने ये भी लिखा कि परिवारवादी राजनीति, नई प्रतिभाओं का दमन कर देती है। कुछ युवाओं ने कहा कि इस तरह के प्रयासों से हमारे लोकतंत्र को और मजबूती मिलेगी।

श्री मोदी ने कहा, मैं इस विषय पर सुझाव भेजने के लिए हर किसी का धन्यवाद करता हूँ। मुझे उम्मीद है कि अब हमारे सामूहिक प्रयास से ऐसे युवा, जिनका कोई राजनीतिक पृष्ठभूमि नहीं है, वे भी राजनीति में आगे आ सकेंगे, उनका अनुभव, और उनका जोश, देश के काम आएगा। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी समाज के हर क्षेत्र से ऐसे अनेकों लोग सामने आए थे जिनकी कोई राजनीतिक पृष्ठभूमि नहीं थी। उन्होंने खुद को भारत की आजादी के लिए झोंक दिया था। आज हमें विकसित भारत का लक्ष्य पाने के लिए एक बार फिर उसी भावना की जरूरत है। उन्होंने कहा, ह्यमैं अपने सभी युवा साथियों को कहूंगा इस अभियान से जरूर जुड़ें। आपका ये कदम आपके और देश के भविष्य को बदलने वाला होगा।

स्पेस टेक्नोलॉजी से होगा जय जवान और जय किसान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को मन की बात कार्यक्रम के दौरान स्पेस सेक्टर में भारत की उपलब्धियों पर रोशनी डाली। उन्होंने कहा कि 23 अगस्त को ही सब देशवासियों ने पहला नेशनल स्पेस डे मनाया। प्रधानमंत्री ने कहा, पिछले बार इसी दिन चंद्रयान 3 ने चांद के दक्षिणी हिस्से में शिव शक्ति पॉइंट पर सफलतापूर्वक लैंडिंग की थी। भारत इस गौरवपूर्ण उपलब्धि को हासिल करने वाला दुनिया का पहला देश बना है। उन्होंने कहा कि 21वीं सदी के भारत में कितना कुछ हो रहा है जो विकसित भारत की नींव मजबूत कर रहा है। प्रधानमंत्री ने मन की बात के इस एपिसोड में स्पेस सेक्टर से जुड़े आईआईटी मद्रास के पूर्व छात्रों के स्टार्टअप गैलेक्सी -ई के युवाओं से बात की। प्रधानमंत्री ने इन युवाओं से पूछा कि आपकी टेक्नोलॉजी से देश को कितना लाभ होने वाला है? छात्रों ने बताया कि उनकी यह टेक्नोलॉजी अंतरिक्ष से बादलों के आरपार देख सकती है। इस तकनीक की मदद से रात के समय भी स्पष्ट देखा जा सकता है। इससे देश के किसी भी कोने के ऊपर रोज एक साफ तस्वीर खींच सकते हैं। युवाओं ने प्रधानमंत्री को बताया कि इस डाटा का इस्तेमाल दो क्षेत्र में करेंगे। पहला है भारत को अत्यंत सुरक्षित बनाना। हमारे बॉर्डर और समुद्र के ऊपर हम रोज मॉनिटरिंग करेंगे। दुश्मन की गतिविधियों पर नजर रखेंगे और इससे जुड़ी इंटेलिजेंस अपने सुरक्षा बलों को देंगे। इसके साथ ही इससे किसानों की मदद भी की जाएगी।

मादक पदार्थों का अवैध कारोबार भारत के लिए चुनौती : शाह

गृह मंत्री ने छत्तीसगढ़ में मादक पदार्थों के परिदृश्य पर एक बैठक को किया संबोधित

प्रात : किरण

रायपुर। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को कहा कि मादक पदार्थों का अवैध कारोबार ना केवल भारत के लिए चुनौती है, बल्कि यह एक अंतरराष्ट्रीय समस्या है। उन्होंने कहा कि यदि दृढ़ संकल्प और रणनीति के साथ आगे बढ़ा जाए, तो देश इस खतरे के खिलाफ लड़ाई जीत सकता है। शाह ने रविवार को नवा रायपुर के एक होटल में छत्तीसगढ़ में मादक पदार्थों के परिदृश्य पर एक बैठक को संबोधित किया। इस दौरान शाह ने मादक पदार्थों के अवैध कारोबार के खिलाफ लड़ाई में सफलता प्राप्त करने के लिए मादक पदार्थों का पता लगाने, नेटवर्क को नष्ट करने, अपराधी को हिरासत में लेने और नशे के आदी लोगों का पुनर्वासह्ल करने के चार सूत्रों पर जोर दिया। शाह ने कहा, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2047 तक देश को नशा मुक्त बनाने का संकल्प लिया है, जब देश की आजादी का 100 वां वर्ष मनाया जाएगा। धीरे-धीरे यह संकल्प 130 करोड़ आबादी का संकल्प बन गया है। मेरा मानना है कि नशा मुक्त भारत का संकल्प एक समृद्ध, सुरक्षित और गौरवशाली भारत बनाने में बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा, अवैध मादक पदार्थों का कारोबार ना केवल भारत के लिए एक चुनौती है, बल्कि यह एक वैश्विक मुद्दा है। मेरा मानना है कि देश में लोगों को इसके प्रति जागरूक करने की ज्यादा जरूरत है। अगर हम दृढ़ संकल्प और रणनीति के साथ लड़ें तो हम यह लड़ाई जीत सकते हैं। मुझे कहने में झिझक नहीं है कि कई देश इसके खिलाफ अपनी लड़ाई हार चुके हैं। शाह ने कहा, मादक पदार्थों के अवैध व्यापार का उद्देश्य ना केवल युवाओं को बर्बाद करना है बल्कि मादक पदार्थों के व्यापार से उत्पन्न अवैध धन का उपयोग राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में भी किया जाता है। यह हमारी राष्ट्रीय जिम्मेदारी भी है कि कतई बर्दाश्त नहीं करने (जीरो टॉलरेंस) की नीति के साथ देश को नशा मुक्त बनाया जाए।

चिराग फिर बने लोजपा रामबिलास के राष्ट्रीय अध्यक्ष

- बोलें-झारखंड की राजनीति में मजबूत उपस्थिति दर्ज कराना चाहती है लोजपा रामविलास

प्रात : किरण

रांची। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की रविवार को होने वाली बैठक में भाग लेने के लिए पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण मंत्री चिराग पासवान सेवा विमान से रांची पहुंचे थे। रांची एयरपोर्ट से लेकर होटल रेडिशन ब्लू तक पार्टी कार्यकताओं ने चिराग पासवान का जोरदार स्वागत किया। इसके बाद उन्होंने राष्ट्रीय कार्यकारणी की बैठक हिस्सा लिया, जहां सर्वसम्मति से उन्हें लोजपा का फिर से राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया। अध्यक्ष चुने जाने का बाद उन्होंने सभी नेताओं और कार्यकताओं के प्रति आभार प्रकट किया। इसके पूर्व एयरपोर्ट पर पत्रकारों से बातचीत में केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने कहा कि उनकी इच्छा है कि राज्य में उनकी पार्टी विधानसभा का चुनाव लड़े और अपनी पार्टी की मजबूत उपस्थिति झारखंड में दर्ज कराए। हम इस राज्य के लिए बेहतर सोचते हैं। चिराग पासवान ने एक सवाल के जवाब में कहा कि वह बिहारी हैं और जब उन्होंने जन्म लिया था तब बिहार झारखंड एक था। आज वह केंद्र की सरकार में मजबूत विभाग के मंत्री हैं। ऐसे में वह चाहेंगे कि यह राज्य विकास के मामले में मजबूती से आगे बढ़े। अपने विभाग के माध्यम से वह राज्य की हरसंभव मदद करने की कोशिश करेंगे। चिराग पासवान ने कहा कि रांची में होने वाली पार्टी की राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक में कई एजेंडे पर चर्चा होगी, जिसमें एससी-एसटी आरक्षण में उप वर्गीकरण के सर्वोच्च न्यायालय के फैसले पर भी बात होगी। उन्होंने उम्मीद जताई कि इस मामले पर जल्द केंद्र सरकार सकारात्मक फैसला ले लेगी। इसके बाद वे सीधा बिरसा चौक गये, जहां उन्होंने बिरसा मुंडा की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और उन्हें श्रद्धांजलि। इसके बाद वे पार्टी की बैठक में हिस्सा लेने के लिए रवाना हो गये।

सीबीआई ने आरजी कर अस्पताल में वित्तीय अनियमितताओं को लेकर कोलकाता में मारे छापे

प्रात : किरण

नई दिल्ली/कोलकाता। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो के अधिकारियों ने आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में कथित वित्तीय अनियमितताओं की जांच के सिलसिले में इसके पूर्व प्राचार्य संदीप घोष, पूर्व चिकित्सा अधीक्षक सह उप प्राचार्य (एमएसवीपी) संजय वशिष्ठ और 13 अन्य लोगों के कोलकाता में एवं उसके आसपास स्थित परिसरों में रविवार को छापे मारे। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। सीबीआई की भ्रष्टाचार निरोधक इकाई ने मरीजों की देखभाल और प्रबंधन के लिए सामग्री की आपूर्ति से जुड़े लोगों के आवासों और कार्यालयों पर भी छापे मारे। अधिकारियों ने बताया कि केंद्रीय जांच एजेंसी के कम से कम सात अधिकारी सुबह आठ बजे से घोष से बेलियाघाटा स्थित उनके आवास पर पूछताछ कर रहे हैं, जबकि अन्य अधिकारी वशिष्ठ एवं चिकित्सा प्रतिष्ठान के फॉरेंसिक-मेडिसिन विभाग के एक और प्रोफेसर समेत अन्य से पूछताछ कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि केंद्रीय बलों के एक बड़े दल के साथ सुबह करीब छह बजे घोष के आवास पर पहुंची सीबीआई की टीम को करीब डेढ़ घंटे तक इंतजार करना पड़ा, जिसके बाद पूर्व प्राचार्य ने दरवाजा खोला। अधिकारियों ने बताया कि केंद्रीय एजेंसी के अन्य अधिकारी हावड़ा में एक आपूर्तिकर्ता के घर गए। उन्होंने कहा, वशिष्ठ से पूछताछ की जा रही है कि जब वह एमएसवीपी थे, तब अस्पताल में हुई वित्तीय अनियमितताओं के बारे में उन्हें कितनी जानकारी थी। सीबीआई अधिकारियों के एक अन्य दल ने अस्पताल में पूर्व प्राचार्य के कार्यालय पर भी छापा मारा और वह शैक्षणिक भवन की कैंटीन (भोजनालय) में भी गया।

कांग्रेस ने घरेलू आय में अभूतपूर्व गिरावट को लेकर की सरकार की आलोचना

प्रात : किरण

नई दिल्ली। कांग्रेस ने रविवार को दावा किया कि धीमी वेतन वृद्धि और कमरतोड़ महंगाई के कारण वास्तविक घरेलू आय में अभूतपूर्व गिरावट आई है और उसने कहा कि शुतुरमुर्ग वाली कहावत की तरह सरकार भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष खड़ी सबसे बुनियादी चुनौती के प्रति आंखें बंद किए हुए है। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि एक जानी-मानी ब्रोकरेज कंपनी की नई रिपोर्ट ने एक बार फिर उस सच्चाई को सामने ला दिया है जिसे केंद्र सरकार लगातार नकारती रही है : भारत में वास्तविक घरेलू आय में लगातार गिरावट आ रही है। उन्होंने एक बयान में कहा, धीमी वेतन वृद्धि और कमरतोड़ महंगाई के कारण वास्तविक मजदूरी (महंगाई के हिसाब से समायोजित वेतन) या कहें कि आय में अभूतपूर्व गिरावट आयी है। रमेश ने कहा कि कई सर्वेक्षण और डेटा, जिनमें अपंजीकृत उद्योगों का वार्षिक सर्वेक्षण, भारतीय रिजर्व बैंक के केएलईएमएस डेटा और घरेलू उपभोक्ता व्यय सर्वेक्षण शामिल हैं, ने कामकाजी भारतीयों के बीच वित्तीय संकट को दशार्या है। उन्होंने कहा कि सरकार के अपने आधिकारिक आंकड़ों सहित डेटा के कई स्रोतों ने इस बात के स्पष्ट प्रमाण भी दिखाए हैं कि श्रमिकों की क्रय शक्ति (खरीदारी करने की क्षमता) 10 साल पहले की तुलना में आज कम हो गयी है। कांग्रेस नेता ने कहा, श्रम ब्यूरो का वेतन दर सूचकांक (सरकारी डेटा) : श्रमिकों की वास्तविक मजदूरी 2014-2023 के बीच स्थिर रही और 2019-2024 के बीच इसमें गिरावट आयी है। कृषि मंत्रालय की कृषि सांख्यिकी (सरकारी डेटा) : डॉ. मनमोहन सिंह के कार्यकाल में खेतिहर मजदूरों की वास्तविक मजदूरी हर साल 6.8 प्रतिशत की दर से बढ़ी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में खेतिहर मजदूरों की वास्तविक मजदूरी में हर साल शून्य से नीचे 1.3 प्रतिशत की गिरावट आयी।

राजनाथ ने अमेरिका के नौसेना वारफेयर सेंटर का किया दौरा

नई दिल्ली। अमेरिका की यात्रा पर गये रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शनिवार को मेम्फिस, टेनेसी में नेवल सर्फेस वारफेयर सेंटर में विलियम बी मॉर्गन लार्ज कैविटेशन चैनल (एलसीसी) का दौरा किया। एलसीसी पनडुब्बियों,

टॉरपीडो, नौसैनिक जहाजों और प्रोपेलर के परीक्षण के लिए दुनिया की सबसे बड़ी और तकनीकी रूप से सबसे उन्नत जल सुरंग सुविधा में से एक है। रक्षा मंत्री को सुविधा के बारे में जानकारी दी गई और उन्होंने एक वास्तविक सुरंग प्रयोग भी देखा। श्री सिंह के साथ अमेरिका में भारत के राजदूत, भारतीय नौसेना के महानिदेशक संचालन और डीआरडीओ रक्षा प्रौद्योगिकी के अधिकारियों सहित अन्य लोग मौजूद थे। अमेरिकी नौसेना के उप अवर सचिव ने उनका स्वागत किया और कमांडर तथा तकनीकी निदेशक ने उन्हें जानकारी दी। इस चर्चा का उद्देश्य भारत में स्वदेशी डिजाइन और विकास के लिए समान सुविधा की स्थापना के लिए मौजूदा प्रस्ताव पर विचार करना भी है।

समापन दोनों देशों ने आपसी हित और द्विपक्षीय रक्षा सहयोग के मुद्दों पर चर्चा की...............

खत्म हुआ भारत-श्रीलंका की सेनाओं का संयुक्त सैन्य अभ्यास मित्र शक्ति

प्रात : किरण

नई दिल्ली। भारत और श्रीलंका की सेनाओं के बीच श्रीलंका के मदुरु ओया स्थित आर्मी ट्रेनिंग स्कूल में चल रहा संयुक्त सैन्य अभ्यास मित्र शक्ति का समापन रविवार को भव्य समारोह के साथ हो गया। अभ्यास के आखिरी दिन भारतीय सेना प्रमुख जनरल उपेन्द्र द्विवेदी ने श्रीलंका के सीडीएस जनरल शैवेन्द्र सिल्वा से टेलीफोनिक वार्ता करके दोनों देशों की सेनाओं के संयुक्त सैन्य अभ्यास मित्र शक्ति सहित आपसी हित और द्विपक्षीय रक्षा सहयोग के मुद्दों पर चर्चा की। भारत और श्रीलंका के बीच 12 अगस्त से शुरू हुए संयुक्त सैन्य अभ्यास मित्र शक्ति के 10वें संस्करण का उद्देश्य दोनों सेनाओं के बीच अंतर-संचालन क्षमता को बढ़ाना और शहरी आतंकवाद से निपटने में क्षमताओं को बढ़ाना और

दोनों सेनाओं के बीच सहयोग को मजबूत करना था। इस लिहाज से भारतीय और श्रीलंकाई सेना के बीच अंतर-संचालन क्षमता में वृद्धि होने के साथ ही आपसी सहयोग मजबूत हुआ। इस दौरान भारत और श्रीलंका की सेनाओं ने आर्मी ट्रेनिंग स्कूल में 78वें भारतीय स्वतंत्रता दिवस पर संयुक्त रूप से योगाभ्यास किया। सेना प्रमुख जनरल उपेन्द्र द्विवेदी ने टेलीफोन पर श्रीलंका के सीडीएस जनरल शैवेन्द्र सिल्वा से बातचीत की। उन्होंने भारत और श्रीलंका के बीच चल रहे संयुक्त सैन्य अभ्यास मित्र शक्ति सहित आपसी हित और द्विपक्षीय रक्षा सहयोग के मुद्दों पर चर्चा की। दोनों सैन्य अधिकारियों ने माना कि भारत और श्रीलंका की सेनाओं ने अभ्यास के दौरान आतंकवाद विरोधी सफल अभियानों में अद्वितीय विशेषज्ञता का प्रदर्शन किया है, जो जटिल सुरक्षा चुनौतियों के प्रबंधन में उनके व्यापक अनुभव और दक्षता का प्रमाण है। भारतीय सेना ने एक बयान में कहा कि संयुक्त अभ्यास मित्र शक्ति में दोनों सेनाओं ने आपसी समझ और परिचालन प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए अपने-अपने ज्ञान और रणनीतियों का लाभ उठाया है। इस संयुक्त अभ्यास ने सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने, सामरिक दृष्टिकोण को परिष्कृत करने और आतंकवाद के खिलाफ सहयोगी प्रयासों को मजबूत करने के लिए एक मंच प्रदान किया है। अपने कौशल और अनुभवों को एकीकृत करके भारतीय और श्रीलंकाई सेनाओं ने अपनी क्षमताओं को मजबूत किया है और आतंकवाद विरोधी प्रयासों में एक गहरी रणनीतिक साझेदारी को बढ़ावा दिया है।

राज्यपाल - मुख्यमंत्री ने बीपी मंडल की जयंती पर दी श्रद्धांजलि

प्रात : किरण

पटना। भूतपूर्व मुख्यमंत्री बीपी मंडल की जयंती पर राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर एवं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने रविवार को उनकी आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। पटना के देशरत्न मार्ग एवं सर्कुलर पथ चौराहा स्थित आदम कद प्रतिमा के समीप जयंती के मौके पर राजकीय समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, बिहार विधानसभा के अध्यक्ष नन्द किशोर यादव, सूचना एवं जन सम्पर्क मंत्री महेश्वर हजारी, मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबंधन मंत्री रत्नेश सादा सहित अनेक सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकताओं एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी पूर्व मुख्यमंत्री स्व बीपी मंडल की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के कलाकारों ने आरती पूजन, भजन-कीर्तन एवं बिहार गीत का गायन किया।

पीएम ने जलगांव में लखपति दीदियों से की बातचीत

मुंबई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को महाराष्ट्र के जलगांव में लखपति दीदियों से बातचीत की। लखपति दीदी स्वयं सहायता समूहों की उन महिलाओं को कहा जाता है जो सालाना एक लाख रुपये कमा रही हैं। प्रधानमंत्री 11 लाख नई लखपति दीदियों को सम्मानित करने के लिए आयोजित एक कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं। जलगांव में महिलाओं के एक समूह ने प्रधानमंत्री मोदी का स्वागत किया, जिसके बाद उन्होंने कुछ स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) की सदस्यों से बातचीत की। अधिकारियों ने बताया कि स्वयं सहायता समूह पशुधन क्षेत्र में सक्रिय हैं, जबकि अन्य कृषि सखी और नमो ड्रोन दीदी जैसी सरकारी योजनाओं में काम कर रही हैं। योजनाओं को क्रियान्वित करने वाले अधिकारियों ने कहा कि स्वयं सहायता समूह कौशल प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में आवश्यकताओं को पूरा करने और स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन में मदद मिलती है।

राष्ट्रीय दैनिक
प्रात:किरण
पटना, सोमवार, 26 अगस्त, 2024

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com

संक्षिप्त खबरें

ईंट लदे ट्रैक्टर ने वृद्ध को रौंदा, वृद्ध की हुई मौत

फतुहा। नदी थाना क्षेत्र के जेठुली गांव में रविवार को तेज रफ्तार से जा रही ईंट लदे ट्रैक्टर ने एक व्यक्ति को कुचल दिया। इस हादसे में एक व्यक्ति की मौत घटनास्थल पर ही हो गई। इसी क्रम में तेज रफ्तार से भागने के दौरान ट्रैक्टर ने एक कार में टक्कर मारते हुए पेड़ से टकरा गई। घटना के बाद ट्रैक्टर का ड्राइवर गाड़ी मौके पर छोड़कर फरार हो गया। मिली जानकारी अनुसार रविवार की सुबह जेठुली गांव के सकल दास (65वर्ष) चाय पीने के लिए एक चाय की दुकान के नजदीक जा रहे थे। इसी क्रम में तेज रफ्तार से आ रही एक ट्रैक्टर ने सकल दास को कुचल डाला। इस हादसे में सकल दास की मौत घटनास्थल पर ही हो गई। घटना की सूचना मिलते ही आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और पटना-बख्तियारपुर स्टेट हाईवे को पूरी तरह जाम कर दिया। स्थानीय लोगों ने इसकी सूचना नदी थाने को दी। सूचना मिलते ही नदी थाने की पुलिस के साथ-साथ दीदारगंज, फतुहा थाने के पुलिस मौके पर पहुंचे और लोगों को समझाने बुझाने का प्रयास शुरू कर दिया। काफी मशक्कत के बाद लोगों ने जाम खत्म किया। घटना की जानकारी देते हुए नदी थाना प्रभारी राजू कुमार ने बताया कि सकल दास के शव को पोस्टमार्टम के लिए अनुमंडल अस्पताल भेज दी गई है और मामले की छानबीन शुरू कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि ट्रैक्टर ड्राइवर की भी तलाश की जा रही है।

विनोद सिंह को जदयू दल के प्रदेश महासचिव बनाएं जाने पर कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर

दानापुर। नगर के अंतर्गत जनता दल यू में विनोद कुमार सिंह को प्रदेश महासचिव बनाएं जाने पर समर्थकों में खुशी की लहर दौड़ पड़ी है। जदयू कार्यकर्ताओं ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा कुमार, एवं प्रदेश अध्यक्ष उमेश कुशवाहा जी का आभार व्यक करते जदयू परिवार की ओर से बधाई एवं शुभकामना दी है। रविवार को प्रखंड अध्यक्ष जदयू मनोज कुमार, नगर अध्यक्ष अरविन्द कुमार, खगौल नगर अध्यद गौरव गुप्ता, पटना महानगर उपाध्यक्ष संजय कुमार सिन्हा, ओमसिंह, पटना जिला दलित प्रकोष्ट अध्यक्ष रामनाथ राम ने विनोद सिंह से मिलकर उन्हे बधाई व सुभकामना दी है।

पूर्व सैनिक संघ के वार्षिक आम सभा की बैठक की गई

दानापुर। नगर के अंतर्गत थोड़ा सब कुछ ना बताओ जरा बिहार राज्य पूर्व सैनिक संघ के वार्षिक आम सभा का आयोजन विश्वसरैयानगर स्थित प्रदेश कार्यालय में आयोजित किया गया। आम सभा की अध्यक्षता प्रदेश उपाध्यक्ष आरएन उपाध्याय ने किया। आम सभा के प्रदेश अध्यक्ष लेफ्टिनेंट एन के सिंह ने केंद्र सरकार के नये यूनिफाइड पेंशन स्कीम का स्वागत करते हुए वार्षिक आय व्यय का ब्योरा प्रस्तुत किया। आम सभा में उपस्थित जिलाध्यक्षों ने सर्व सम्मति से उसे पास कर दिया। प्रदेश मीडिया प्रभारी उपेन्द्र सिंह ने पूर्व सैनिकों को आपसी एकता बनाए रखने की बात कही। बैठक में संरक्षक कर्नल आरके सिंह, आरएन सिंह, वरुण चौधरी एवं रामाकांत झा समेत विभिन्न जिलों से आए जिलाध्यक्ष शामिल हुए।

फायरिंग के मामले में दो लोगों को गिरफ्तार किया

दानापुर नगर के अंतर्गत। पुलिस ने दो दिन पूर्व मछुआटोली स्थित जेनरल स्टोर पर किये गये फायरिंग के मामले में दो लोगो को गिरफ्तार किया। इसके पास से एक देसी कट्टा, एक जिंदा कारतूस व बाइक बरामद किया है। थानाध्यक्ष प्रशांत कुमार भारद्वाज ने बताया कि छोटी मछुआटोली में 23 अगस्त की रात जेनरल स्टोर के मालिक विक्की कुमार पर कुछ बदमाशों ने फायरिंग किया था। जिसमें मामला दर्ज कर छानबीन शुरू किया गया। गभताल निवासी रिशू कुमार व किशोर को गिरफ्तार किया गया। रिशू के पास से एक देसी कट्टा एक जिंदा कारतूस व बाइक बरामद किया गया। पूछताछ के बाद रिशू को न्यायिक हिरासत में एवं किशोर को बाल सुधार गृह भेज दिया गया। घटना में शामिल अन्य की तलाश की जा रही है।

गुरुद्वारा रोड में चाकू मारकर एक युवक को किया जख्मी

दानापुर। नगर के अंतर्गत शनिवार की देर रात गुरुद्वारा रोड में चाकू मारकर जख्मी कर दिया वहीं भाई के बयान पर मामला दर्ज किया। जिसमें चार लोगों को नामजद किया है। पुलिस मामले की छानबीन में लगी है। जख्मी को खतरे के बाहर बताया जाता है। फिलहाल करण का पीएमसीएच में इलाज चल रहा है। शनिवार की देर रात आपसी विवाद को लेकर घर के पास ही बदमाशों ने चाकू मार दी थी। दारोगा मनजीत ठाकुर ने बताया कि जख्मी के भाई अरविंद कुमार के बयान पर मामला दर्ज कर चार लोगों को नामजद किया गया है। पुलिस को दिये बयान में श्रवण व चुन्नू लाल व उनके पुत्र को आरोपित किया। उसने बताया कि देर रात करण घर की ओर आ रहा था। तभी चुन्नू लाल व उनके लड़को ने गाली गलौज मारपीट करने लगा। बाद में उसे चाकू मार कर जख्मी कर दिया।

राज्य के जेलों में बंदियों एवं जेल कर्मियों को खिलाई जा रही है फाइलेरिया की दवा

संयुक्त सचिव सह निदेशक, गृह विभाग कारा ने पत्र द्वारा दिए निर्देश

- सरकारी दफ्तरों एवं वेश्यालयों में भी खिलाई जाएगी फाइलेरिया की दवा

प्रात : किरण संवाददाता

पटना- 10 अगस्त से राज्य में संचालित एमडीए कार्यक्रम में राज्य के विभिन्न कारागृह में बंदियों एवं जेल कर्मियों को फाइलेरिया की दवा खिलाई जा रही है. इस बाबत संयुक्त सचिव सह निदेशक, गृह विभाग (कारा), रजनीश कुमार सिंह द्वारा पहले ही पत्र जारी कर केंद्रीय कारा/ मंडल कारा/ महिला मंडल कारा/ उपकार/ मुक्त कारा के अधीक्षक को आवश्यक निर्देश दिए जा चुके हैं। जारी पत्र में बताया गया है कि सर्वजन दवा सेवन के सफल क्रियान्वयन के लिए स्वास्थ्य विभाग के जो अधिकारी / कर्मचारी आपके काराओं में आयेंगे उन्हें इस कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्णतः सहयोग किया जाये. जेल कर्मियों एवं बंदियों को दवा खिलाने में स्वास्थ्य विभाग को पिरामल स्वास्थ्य की टीम द्वारा सहयोग किया जा रहा है. राज्य के सभी 59 कारागृह में फाइलेरिया की दवा खिलाने की योजना है। पिरामल स्वास्थ्य के राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, फाइलेरिया बासब रूज ने बताया कि कारागृह के साथ सभी सरकारी कार्यालयों एवं जहाँ वैश्यालय हैं, जो समुदाय दवा खाने से वंचित रह जाते थे, वहां भी जाकर फाइलेरिया की दवा खिलाई जाएगी। उन्होंने बताया कि हर स्तर पर प्रयास किया जा रहा है कि अधिक से अधिक संख्या में लोगों को दवा का सेवन कराया जाए जिससे 2027 तक फाइलेरिया उन्मूलन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सके। विदित हो कि जून 2024 के आंकड़ों के अनुसार राज्य में इस समय लिम्फेडेमा के लगभग 1,60,168 एवं हाइड्रोसील के 22,270 केस चिन्हित किये गए हैं।

उत्पाद विभाग ने चार स्थान पर छापेमारी कर 1330 लीटर देसी - विदेशी शराब किया बरामद

तीन चार पहिया और दो मोटरसाइकिल जब्त, छह गिरफ्तार

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

उत्पाद विभाग की टीम के लिए रविवार छुट्टी का दिन उपलब्धियों से भरा रहा। पटना की टीम ने चार स्थानों पर छापेमारी कर छह लोगों को गिरफ्तार किया। इस दौरान छह वाहन जब्त किए गए। वहीं 1330 लीटर देसी और विदेशी शराब जब्त किया गया। उत्पाद विभाग के सहायक आयुक्त प्रेम प्रकाश ने बताया कि सुबह में अगमकुआं थाना क्षेत्र के भूतनाथ सब्जी मंडी के पीछे शराब होने की सूचना मिली। इस दौरान मद्य निषेध विभाग के इंस्पेक्टर विजय कुमार के नेतृत्व में सिपाही रोशन कुमार, चंचल कुमार, राम इकबाल के अलावा होमगार्ड और सैप जवानों को लगाया गया। इस दौरान एक पिकअप वैन से 225 लीटर विदेशी शराब और 78 लीटर बीयर बरामद किया गया। इस दौरान एक पिकअप वैन, जिस पर रजिस्ट्रेशन नंबर बीआर 01जीबी 9224 लिखा था, को बरामद किया गया। साथ ही दो लोगों को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार लोगों में कुम्हरार दाउद बीघा का राजू कुमार और कुम्हरार गुमटी के पास का रहने वाला गुगु सागर है। सहायक आयुक्त ने बताया कि इसके पूर्व जनार्दन घाट पर भी शराब होने की सूचना मिली। यहां प्रशिक्षु अधीक्षक मद्य निषेध के शशांक कुमार एवं गौतम कुमार के नेतृत्व में टीम बनाकर छापेमारी की गई। जनार्दन घाट से 450 लीटर देसी जुलाई शराब जब्त किया गया। इस दौरान यहां से तीन मोटरसाइकिल बरामद किया गया। उन तीनों बाइक पर रजिस्ट्रेशन नंबर बीआर 01सीए 3242, बीआर 01बीएक्स 0099 और बीआर 01एचएन 3583 लिखा था। सहायक आयुक्त प्रेम प्रकाश ने बताया कि इसके बाद बहादुरपुर गोलंबर के पास से एक इनोवा वाहन से 34 कार्टन शराब बरामद किया गया। इनोवा पर रजिस्ट्रेशन नंबर जेएच 01एई 4967 लिखा था। कुल 34 कॉर्टन में 1632 पीस शराब था, जिसकी मात्रा 293.760 लीटर था। इस छापामारी में मद्य निषेध के निरीक्षक अजीत कुमार, एएसआई जितेंद्र झा, भरत झा और सिपाही शशि ऋषि शामिल थे। इसके बाद दीघा थाना अंतर्गत मरीन ड्राइव में मद्य निषेध के निरीक्षक कुलवंत सिंह, एएसआई साहब गुप्ता, शशि ठाकुर के साथ उत्पाद के सिपाही और सैप के जवानों ने छापेमारी की। यहां से कूरियर डाक पार्सल, जिस पर रजिस्ट्रेशन नंबर बीआर 01जेई 4238 लिखा था, को जब्त किया गया। इस कूरियर डाक पार्सल के अंदर से 42 कार्टून विदेशी शराब जब्त किया गया। इसमें कुल 2016 पीस टेट्रा पैक था यानी इसकी मात्रा 362 लीटर थी। वाहन के अंदर से एक नंबर प्लेट भी मिला, जिस पर बीआर 1एम 7026 लिखा था। जब्त किए गए सभी देसी-विदेशी शराब की कीमत करीब 10 लाख रुपया

थाईलैंड के पीएम ने पवन दर्शन को राष्ट्रीय आयुर्वेदा रत्न से नवाजा

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। बिहार के लाल ने विदेशी धरती पर भारत का मान बढ़ाया है। थाईलैंड के प्रधानमंत्री ने बीते 13 अगस्त को विश्व मानवाधिकार आयोग के सदस्य व पटना सिटी सेंट्रल स्कूल के डायरेक्टर डॉ. पवन कुमार दर्शन को राष्ट्रीय आयुवेर्दा रत्न से नवाजा है। सम्मानित होने के बाद रविवार को आचार्य डॉ. पवन पटना पहुंचे। एयरपोर्ट पर उनके समर्थकों ने उन्हें बुके व माला पहनाकर स्वागत किया। इस दौरान मीडिया से बात करते हुए डॉ. पवन दर्शन ने कहा कि थाईलैंड के प्रधानमंत्री होना बहुत ही गर्व का पल है। हम इसी तरह और भी अच्छे कार्य करते रहेंगे। आचार्य डॉ. पवन ने बिहार के राजनीतिक हालात पर कहा कि बिहार के जितने भी राजनेता हैं, वह अगर सच्चे मन से काम करेंगे तो बिहार में विकास संभव है। हमने थाईलैंड का विकास देखा है, जो बिहार के अपेक्षा 200 गुना ज्यादा है। जब उनसे सवाल किया कि बिहार के अपेक्षा थाईलैंड में भी धर्म व जाति को लेकर झगड़ा होता है तो उन्होंने कहा नहीं। कहा कि हम बिहार में भी वह जागरूकता फैलाएंगे ताकि यहां सभी जाति व धर्म के लोग मिलकर व शांति से रहे। उन्होंने वक्फ बोर्ड अधिनियम में संसोधन की बात कही। उन्होंने एक अन्य सवाल के जवाब में कहा कि देश में गैंगरेप की घटनाओं में हुई वृद्धि चिंताजनक है। रेप पीड़िताओं को इंसाफ दिलाने के लिए हरसंभव प्रयास करेंगे।

जन्माष्टमी को लेकर मंदिरों में हुई तैयारी, जमकर हो रही खरीदारी

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

वैष्णव मंदिरों, राधा कृष्ण ठाकुरबाड़ी समेत अन्य मंदिरों से लेकर घरों तक में श्री कृष्ण अवतरण पर्व जन्माष्टमी को लेकर तैयारी की गई है। आकर्षक ढंग से सजाए गए मंदिरों में संघोर का अनुष्ठान रखा गया। जन्माष्टमी के अनुष्ठान को ले मच्छरहट्टा स्थित गोपीनाथ जी मंदिर, चौक स्थित श्री सत्यनारायण जी मंदिर, हाजीगंज स्थित सांवलिया जी मंदिर, लल्लू बाबू के कूचा स्थित सांवलिया जी मंदिर, जगन्नाथ मंदिर, सादिकपुर, बेलरवगंज, खाजेकलां पानीटंकी स्थित श्री राधाकृष्ण ठाकुरबाड़ी, घसियारी गली स्थित मुक्तेश्वरनाथ शिव मंदिर, कूंचा बांके राय सदर गली बनवारी टोला में स्थित प्राचीन ठाकुरबाड़ी मंदिर, चौधरी गली स्थित प्राचीन ठाकुर श्री मदन मोहन लाल जी गोविंद बाग मंदिर, गौरीशंकर मंदिर, कचौड़ी गली स्थित छोटी मंदिर, चौक के राजाराम लेन स्थित श्री श्याम मंदिर सहित अन्य जगहों पर तैयारी की गई है। दूसरी और चौक मच्छरहट्टा गली पश्चिम दरवाजा चौक शिकारपुर मोर्चा रोड मीना बाजार महेंद्रू आदि स्थानों पर श्री कृष्णा राधे वह लड्डू गोपाल जी के वस्त्र बांसुरी उनका श्रृंगार सामान हर मुकुट मोर पंख झुलुआ आदि खरीदने की होड़सी लगी रही वहीं बाजार में कदम्ब, भुट्टा, खीरा, सेब, नाशपाती, अमरूद, केला आदि फल, खिलौना, टॉफी, नमकीन व्यंजन से लेकर नाशपाती, खीरा का लच्छा का बना मिठाई, सिंघाड़ा आटा से बना बर्फी, हलवा आदि की खरीदारी शुरू हो गई है।

पूर्व सांसद रामकृपाल यादव ने सामुदायिक भवन एवं छठ घाट का उद्घाटन किया

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर खगौलः नगर के अंतर्गत रविवार को पूर्व सांसद रामकृपाल यादव ने अपने सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजना अंतर्गत खगौल नगर परिषद के वार्ड नंबर २२ सैदपुर में पूर्व से निर्मित सामुदायिक भवन के दुसरे तल्ले का निर्माण कार्य राशि 7,49,900.00 रूपए की राशि का उद्घाटन किया गया ।

वही चक्रदाहा मोर स्थित छठ घाट का निर्माण कार्य का राशि 572000 रूपया का उद्घाटन किया गया।पूर्व सांसद रामकृपाल यादव ने अपने जनता को संबोधित करते हुए कहा कि जनता के प्रति के विकास के प्रति मैं सदा उत्तर दायित्व के रूप में कार्य करते आया हुआ और पाटलिपुत्र लोकसभा क्षेत्र में अपने सांसद निधि एवं केंद्र सरकार एवं बिहार सरकार के सहयोग से विकास की गंगा बहाया और आगे भी आम जनता के लिए सदवय खरा रहुंगा और मैं सांसद रहूं या ना रहूं जनता की सेवा उसी मेहनत और लगन के साथ करते रहुंगा साथियों। सभा की अध्यक्षता खगौल मंडल अध्यक्ष ने किया। इस अवसर पर प्रदेश भाजपा नेता एवं पाटलिपुत्र लोकसभा चुनाव प्रबंधन समिति मिडिया प्रभारी भाई सनोज यादव, सुजीत कुमार,अजीत यादव , संजय यादव, माला सिन्हा, आशुतोष श्रीवास्तव, नवाब आलम, एवं सैकड़ों लोग एवं कार्यकर्तागण उपस्थित थे।

वर्षों से बंद पड़े ट्रामा सेंटर में चिकित्सकीय सुविधा बहाल करने की मांग को लेकर दो वर्षों से अनिश्चितकालीन धरना पर स्थानीय लोग

प्रात :किरण संवाददाता

बिक्रम : बीते 23 वर्षों से बिक्रम के असपुरा में बनकर तैयार ट्रामा सेंटर में चिकित्सकीय सुविधा बहाल करने की मांग को लेकर स्थानीय लोग बीते दो सालों से अनिश्चितकालीन धरना पर है विदित हो कि 2001 में अटल सरकार में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ सीपी ठाकुर ने उक्त ट्रामा सेंटर बनवाया था, जिसमें आजतक चिकित्सकीय सुविधा बहाल नहीं किया जा सका, जिसे नाराज लोग बीते दो सालों से ट्रामा सेंटर संघर्ष समिति के बैनर तले अनिश्चितकालीन धरना पर बैठे हैं लोगों का मानना है कि करोड़ों की लागत से बनकर तैयार ट्रामा सेंटर भवन सभी तरह की आधुनिक सुविधाओं से लैस है, बावजूद इसके सरकार चिकित्सकीय सुविधा बहाल नहीं कर सकीं इसे लेकर रविवार को धरनास्थल पर समिति के संयोजक दीपक कुमार की अध्यक्षता में एक बैठक आयोजित की गई बैठक में मुखिया अंजनी सिंह समेत दर्जनों अन्य लोग मौजूद थे। मौके पर आयोजित बैठक को संबोधित करते हुए मुखिया अंजनी सिंह ने कहा कि हम अपनी माँगों को लेकर सरकार व विभाग को सदैव याद दिलाते रहेंगे, धरना ट्रामा सेंटर में चिकित्सकीय सुविधा बहाल किए जाने तक पुरजोर तरीके से जारी रहेगा। उन्होंने स्थानीय विधायक सिद्धार्थ सिंह व पूर्व सांसद रामकृपाल यादव के प्रति उनकी मांग का समर्थन कर उपमुख्यमंत्री के संज्ञान में देने के लिए आभार जताया` उन्होंने कहा कि अगर ट्रामा सेंटर चालू हो गया तो हमारे क्षेत्र समेत अन्य जगहों के लोगों के लिए लाभप्रद साबित होगा। उन्होंने कहा कि समाज के सभी मुद्दो को लेकर हम सदैव खड़ा रहेंगे, सरकार व विभाग को उनके कर्तव्यों को याद दिलाते रहेंगे` वहीं संघर्ष समिति के संयोजक दीपक कुमार ने कहा कि क्षेत्रीय लोगों के सहयोग से हम सभी अपनी मांग को लेकर धरना को आगे भी जारी रखेंगे तबतक कि ट्रामा सेंटर में चिकित्सकीय सुविधा बहाल नहीं किया जाए` बैठक को मौके पर मौजूद कई अन्य लोगों ने भी संबोधित किया व ट्रामा सेंटर में सरकार से अविलम्ब चिकित्सकीय सुविधा बहाल करने की मांग की।

आपसी रंजिश में देवा की दोस्तों ने गला दबाकर की हत्या

पुलिस ने तीन को किया गिरफ्तार, चेन व मोबाइल की करते थे स्नेचिंग

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पुरानी रंजिश और और लूट के रुपया बंटवारा को लेकर हुए विवाद में दोस्तों ने ही युवक देवा कुमार चौधरी की गला दबा कर हत्या कर दी। हत्याकांड में पकड़े गए तीन अभियुक्तों के बयान से इस बात का खुलासा हुआ है। रविवार को यह जानकारी सिटी एसपी भारत सोनी ने प्रेस वार्ता के दौरान दी। सिटी एसपी ने बताया कि मेहंदीगंज थाना क्षेत्र के काठ का पुल निवासी धर्मशीला देवी को बेटा देवा कुमार चौधरी 18 अगस्त की शाम दोस्त के कॉल आने के बाद घर से निकला था। इसके बाद वह घर वापस नहीं लौटा। बेटा को लगातार कॉल करने पर मोबाइल भी स्वीच आफ बता रहा था। मेहंदीगंज थाना में 20 अगस्त को गुमशुदगी का कांड अंकित किया गया। 22 अगस्त को देवा का शव आलमगंज थाना क्षेत्र के रेल ओवरब्रिज से पुल 538/06 के पास से आलमगंज थाना की पुलिस ने बरामद किया था। सिटी एसपी ने बताया कि हत्याकांड में तीन अभियुक्त आलमगंज थाना क्षेत्र के गुलजारबाग निवासी शिवम कुमार उर्फ चाइनीज पिता शिवचंद्र राय, दादरमंडी का रहने वाला रोहित कुमार पिता योगेंद्र चौधरी और चौक थाना क्षेत्र के लाल इमली का डब्ल्यू चौधरी पिता राजू चौधरी की गिरफ्तारी हुई है। गिरफ्तार तीनों अभियुक्त चेन व मोबाइल झपटमारी किया करता था। तीनों ने पुलिस को बताया कि पटना सिटी और बिस्कोमान सहित अन्य इलाकों में चेन और मोबाइल की झपटमारी की घटना को अंजाम देने का काम करता था। सिटी एसपी ने बताया कि गिरफ्तार लोगों का मारे गये देवा चौधरी से पुरानी रंजिश थी। साजिश के तहत शिवम ने ही देवा को कॉल कर बुलाया था। इसके बाद उसे खिला-खिला कर गला दबा कर हत्या कर दी गई। पुलिस ने गिरफ्तार अभियुक्तों के आपराधिक इतिहास को खंगाल रही है। टीएसपी ने बताया कि घटना घटित होने के बाद डीएसपी-2 डॉक्टर गौरव कुमार के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया था। इसमें मेहंदीगंज थाना के पुलिस निरीक्षक सह थानाध्यक्ष अरविंद कुमार, एसआई दरोगा कुमार प्रजापति, उत्तम सिंह के अलावा सिपाही रंजीत कुमार रौशन, कृष्ण कुमार और संजय कुमार शामिल थे। दरअसल देव कुमार को 18 अगस्त की शाम कॉल कर उसके साथी ने बुलाया था जब उसका कोई पता नहीं चला तब उसकी मां धर्मशिला देवी ने लिखित आवेदन गुमशुदगी का दिया, जिस पर कांड संख्या 138/24 दर्ज किया गया था, जो बाद में शव मिलने के बाद हत्या में बदल गया। देव भी चेन स्नेचिंग का काम करता था दरअसल इसी रुपए के बंटवारा को लेकर हुए विवाद में ही उसके साथियों ने हत्या की घटना को अंजाम दिया। मामले का उद्वेदन तकनीकी साक्षी या और तीनों के बयान सीसीटीवी आदि के आधार पर किया गया है। साथ ही मृतक के परिजनों का बयान भी है।

नालंदा मेडिकल कॉलेज में डेढ़ सौ डॉक्टरों ने देखी लाइव सोल्डर रिप्लेसमेंट सर्जरी

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

नालंदा मेडिकल कॉलेज के ऑडिटोरियम में रविवार को बिहार शोल्डर ऑर्थोप्लास्टी कोर्स, 2024 का आयोजन किया गया। एनएमसीएच के हड्डी रोग और एनाटोमी विभाग द्वारा बिहार ऑर्थोपेडिक एसोसिएशन (बीओए) के तहत आयोजित इस कोर्स में तीन सौ से अधिक हड्डी रोग के विशेषज्ञ डॉक्टरों ने हिस्सा लिया। इसमें बिहार के अलावा देश के अन्य राज्यों के प्रतिष्ठित डॉक्टर भी शामिल हुए। कोर्स के दौरान करीब डेढ़ सौ डॉक्टरों को कैडेवर (डेडबॉडी) और ड्राई बोन मॉडल पर लाइव सर्जरी करने का मौका मिला। कार्यक्रम में मुख्य रूप से डॉ बिप्लव दोलुई, डॉ मनित अरोड़ा और डॉ प्रियदर्शी अमित ने टोटल शोल्डर रिप्लेसमेंट सर्जरी के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि रिवर्स टोटल शोल्डर रिप्लेसमेंट सर्जरी एक विशेष प्रकार की कंधे की सर्जरी होती है। इसमें कंधे के क्षतिग्रस्त हिस्सों को हटा दिया जाता है और उनकी जगह कृत्रिम हिस्से को लगा दिया जाता है। इस प्रकार की सर्जरी का उपयोग उन लोगों के लिए किया जा सकता है, जो नियमित रूप से कंधे की रिप्लेसमेंट सर्जरी नहीं करा सकते हैं या जिनके लिए रिवर्स प्रोथेस बेहतर परिणाम दे सकता है। आयोजनकर्ता संघ बिहार ऑर्थोपेडिक एसोसिएशन,

पटना के सचिव डॉ प्रवीण कुमार साहू ने बताया कि रिवर्स टोटल शोल्डर रिप्लेसमेंट, जिसे रिवर्स शोल्डर ऑर्थोप्लास्टी भी कहा जाता है, विशेषज्ञ के द्वारा की जाने वाली सुपरस्पेशियलिटी की सर्जरी है। ऐसी तीन लाइव सर्जरी यहां मुफ्त में की गई। इस तरह की सर्जरी बिहार में भी होती रही है, मगर इसकी संख्या काफी कम है। इस कोर्स के दौरान देश के तीन विशेषज्ञ डॉक्टरों ने यह सर्जरी की, जिनकी अंतरराष्ट्रीय पहचान है। उन्होंने इस कार्यक्रम में यहां के डॉक्टरों को बहुत कुछ बताया और यहां के डॉक्टरों से भी बहुत बातें जानीं। इस तरह की सर्जरी से यहां के डॉक्टर प्रेरित होंगे और इस सर्जरी को और सुचारु रूप से कर पाएंगे। उन्होंने बताया कि कोर्स के दौरान एनएमसीएच के ओटी में लाइव सर्जरी की गयी। करीब डेड़ सौ डॉक्टरों को कैडेवरी (डेडबॉडी) और ड्राई बोन मॉडल पर लाइव सर्जरी करने का मौका मिला। डॉ प्रवीण ने एनएमसीएच में हड्डी रोग के विभागाध्यक्ष डाप्रो रंजीत कुमार सिंह की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह आयोजन उन्हीं की सोच का परिणाम है। उन्हीं ने शोल्डर जैसे विषय को चुना। बीओए के अध्यक्ष डॉ अनिल कुमार ने बताया कि हमें उम्मीद है कि इस कोर्स के माध्यम से डॉक्टर अब कंधे की बीमारियों के इलाज में अधिक कुशल होंगे। इससे मरीजों को बेहतर इलाज मिल सकेगा और उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार होगा। कार्यक्रम में ऑर्गनाइजिंग चेयरमैन डॉ रंजीत सिंह, ऑर्गनाइजिंग सचिव डॉ अभिषेक दास, डॉ जॉन मुखोपाध्याय, डॉ अमूल्या सिंह और साइंटिफिक कमेटी के चेयरमैन डॉप्रो ओमप्रकाश कुमार ने सक्रिय भूमिका निभाई।

प्रोग्राम को नालंदा मेडिकल कॉलेज की प्राचार्या डॉ प्रो उषा कुमारी, डॉ डीके सिन्हा, एनाटॉमी की विभागाध्यक्ष डॉप्रो रश्मि प्रसाद, डॉ प्रियदर्शी अमित, डॉ बिप्लव, डॉ मनीष अरोड़ा आदि ने भी संबोधित किया। आयोजन में अधीक्षक डॉप्रो बिनोद कुमार सिंह ने आने में असमर्थता जताई, मगर उन्होंने संबोधन पत्र भेजा। इस लाइव सर्जरी में डॉ राजेंद्र प्रसाद, डॉप्रो बिजॉय प्रसाद, डॉप्रो मोतीलाल दास, डॉ अरविंद प्रसाद गुप्ता, डॉ कौशलेंद्र, डॉ शंभू प्रसाद, डॉ बैद्यनाथ, डॉ सुबोध शर्मा, डॉ मनीष, डॉ सराफ आदि मौजूद थे। मंच का बखूबी संचालन डॉ प्रवीण कुमार साहू ने किया।

तख्तश्री कमेटी का चुनाव कराना व धार्मिक मयार्दा बनाए रखना काम : चरणजीत

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना साहिब पंथ सेवक जत्था के कार्यालय का उद्घाटन हरिमंदिर गली में रविवार को अपराह्न में किया गया। इस दौरान तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के अतिरिक्त मुख्य ग्रंथी ज्ञानी दिलीप सिंह ने अरदास कर कार्यालय का श्रीगणेश किया। मौके पर कथावाचक सुखदेव सिंह, सतनाम सिंह, गुरुद्वारा बाललीला मैनी संगत के स्थानीय प्रमुख बाबा गुरविंदर सिंह, पंथ सेवक जत्था के अध्यक्ष चरणजीत सिंह, महासचिव इकबाल सिंह उर्फ लकी बग्गा, मेजर गुरशरण सिंह चावला, तख्तश्री कमेटी के महासचिव इंद्रजीत सिंह, पूर्व कनीय उपाध्यक्ष महाराजा सिंह सोनू, दीपक लांबा, उदय सिंह, अवतार सिंह, गेंदा सिंह, दर्शनजीत सिंह बिल्लू आदि मौजूद थे। इस दौरान अध्यक्ष चरणजीत सिंह ने कहा कि पटना साहिब पंथ सेवक जत्था का उद्घाटन हुआ है। उन्होंने गुरु का आशीर्वाद मांगा, ताकि हमारे नए गठन किए गए निगरानी निकाय के पंथक प्रयास सफल हों। हम सिख समुदाय की सेवा करने और हमारे धार्मिक प्रथाओं की पवित्रता को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि प्रबंधक कमेटी, तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब का कार्यकाल पिछले साल जुलाई में ही समाप्त हो चुका है। मगर चुनाव कराने और बजट पास करने का प्रयास नहीं किया जा रहा है। मगर चुनाव को टालने के लिए कोर्ट में याचिका दाखिल कर जरूर इसे लंबा खींचने का प्रयास किया जा रहा है। दूसरी ओर तख्तश्री कमेटी के महासचिव इंद्रजीत सिंह के खिलाफ जो अविश्वास प्रस्ताव का नोटिस दिया गया है, वह बिल्कुल नियमसम्मत नहीं है। अब जबकि अब तक कमेटी का चुनाव होकर नई कमेटी गठित हो जानी चाहिए थी, ऐसे में महासचिव को परेशान करने की साजिश की जा रही है, ताकि उन्हें उस पद से हटाकर मनोनुकूल व्यक्ति को बैठाया जा सके और चुनाव को जितना हो सके, लंबा खींचा जा सके। चरणजीत सिंह ने कहा कि वह न केवल पटना साहिब, बल्कि बिहार और झारखंड के किसी भी गुरुद्वारा में धार्मिक मयार्दा का उल्लंघन व सिखों के साथ घटित घटना आदि को लेकर अभियान चलाते रहेंगे। उनका फिलहाल उद्देश्य तख्तश्री कमेटी का चुनाव कराना है और गुरु के गोलक के पैसे की हिफाजत करना है। इसमें स्थानीय संगतों की अहम भूमिका है। वह सिख संगतों से अपील करेंगे कि राजनीति से ऊपर उठ कर पंथ की मयार्दा की रक्षा और कमेटी की बदनामी को बचाने के लिए सभी मिलजुल कर कम करें। अध्यक्ष चरणजीत सिंह ने कहा कि गुरु महाराज के 350 में प्रकाश पर्व पर जिस तरीके से मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने व्यवस्था की उसके बाद से उन्होंने सिखों की एक बड़ी आबादी का दिल जीतने का काम किया है।

एकीकृत पेंशन योजना लाना केंद्र सरकार का ऐतिहासिक फैसला : जायसवाल

यूपीएस से देश के 25 लाख सरकारी कर्मचारियों को मिलेगा लाभ

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार भाजपा के अध्यक्ष सह राजस्व और भूमि सुधार मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल ने केंद्रीय कैबिनेट द्वारा सरकारी कर्मचारियों के लिए एकीकृत पेंशन योजना (यूपीएस) के स्वीकृति दिए जाने पर प्रसन्नता जताई है। उन्होंने इस निर्णय को ऐतिहासिक फैसला बताते हुए इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विशेष आभार जताया। इस मौके पर उन्होंने सरकारी कर्मचारियों को बधाई भी दी। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. जायसवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हर वर्ग के कल्याण के बारे में सोचते हैं। यूपीएस कर्मचारियों को बहुत बड़ी सौगात मिली है। केंद्र सरकार द्वारा लिए गए फैसले से आने वाले समय में बड़े परिणाम सामने आएंगे, इस बड़े फैसले से सरकारी कर्मचारियों को फायदा होगा। प्रधानमंत्री सभी वर्गों के लिए एक अभिभावक के रूप में काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि देशभर में इस योजना से 25 लाख कर्मचारियों को फायदा मिलेगा। केंद्र सरकार द्वारा कर्मचारियों के परिश्रम का उचित मुआवजा और उचित दाम देने का काम किया गया है। इसके लिए हम सभी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार व्यक्त करते हैं। बिहार सरकार में मंत्री डॉ. जायसवाल ने कहा कि जिन भी सरकारी काम करने वाले कर्मचारियों को रिटायरमेंट के समय पेंशन देना सरकार का बेहतरीन फैसला है। इस योजना से हर वर्ग का कर्मचारी खुश है।

उन्होंने बताया कि इसके अंतर्गत पेंशन की राशि रिटायरमेंट के पहले के 12 महीने के औसत बेसिक पे का 50 प्रतिशत होगी एवं न्यूनतम 25 वर्ष की सेवा करने वाले सभी कर्मचारी पेंशन के लिए पात्र होंगे। इसके लिए कर्मचारियों को अलग से अंशदान भी नहीं करना होगा। 10 साल से अधिक सेवा देने वाले सभी कर्मचारियों को न्यूनतम 10 हजार रुपये की पेंशन मिलेगी। उन्होंने दावा करते हुए कहा कि इस योजना में सरकार ने अपना अंशदान बढ़ाकर ज्यादा लाभकारी बनाया है।

यूनिफाइड पेंशन स्कीम से 23 लाख कर्मचारियों को मिलेगा लाभ : सम्राट

- यूपीएस में नई पेंशन स्कीम की तर्ज पर ही 10 प्रतिशत योगदान देना होगा
- अगर सेवा काल 10 से 25 वर्षों का है तो पेंशन की राशि समानुपातिक आवंटन के आधार पर होगी तय

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा है कि केंद्र सरकार के 23 लाख कर्मचारियों के लिए सरकार ने यूनिफाइड पेंशन स्कीम (यूपीएस) लागू करने का फैसला किया है, जो स्वागतयोग्य है। उन्होंने कहा है कि यह मौजूदा एनपीएस के साथ ही लागू रहेगा। यूपीएस के तहत कर्मचारियों को 25 साल काम करने पर पूरी पेंशन मिलेगी। श्री चौधरी ने कहा कि यूपीएस का फॉर्मूला यह है कि अगर कोई कर्मचारी ने 25 वर्षों की सेवा दी है तो उसके अंतिम कार्य-वर्ष के 12 महीनों के औसत मूल वेतन की 50 प्रतिशत राशि बतौर पेंशन दी जाएगी। अगर सेवा काल 10 से 25 वर्षों का है तो पेंशन की राशि समानुपातिक आवंटन के आधार पर तय होगी। यूपीएस में सुनिश्चित पेंशन, परिवार को पेंशन, सुनिश्चित न्यूनतम पेंशन, पेंशन की राशि को महंगाई दर के साथ जोड़ने और सेवानिवृत्ति के समय ग्रेच्युटी के अलावा भी एक सुनिश्चित राशि के भुगतान की व्यवस्था की गई है। उन्होंने कहा कि एक तरह से यह पुरानी पेंशन स्कीम की तरह ही होगी, लेकिन अंतर सिर्फ इतना होगा कि ओपीएस में जहां कर्मचारियों को योगदान नहीं देना होता था, यूपीएस में नई पेंशन स्कीम (एनपीएस) की तर्ज पर ही 10 प्रतिशत योगदान देना होगा। श्री चौधरी ने कहा कि केंद्र सरकार के आकलन है कि अभी करीब 99 प्रतिशत से ज्यादा केंद्रीय कर्मियों के लिए एनपीएस से ज्यादा यूपीएस आर्थिक तौर पर फायदेमंद होगा। एनपीएस वर्ष 2004 से लागू है और तब से अभी तक जितने सरकारी कर्मचारी सेवानिवृत्त हुए हैं, उनको यूपीएस के तहत पेंशन सुविधा लेने का विकल्प मिलेगा। अगर कर्मचारी ऐसा करते हैं तो उन्हें जो अतिरिक्त राशि व उसका ब्याज बनेगा, उसका भुगतान केंद्र से होगा।

मुलाकात

पटना। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री एवं केन्द्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने रविवार को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के आवास पर उनसे औपचारिक मुलाकात की। इस दौरान मेरे साथ हम सेक्यूलर के राष्ट्रीय अध्यक्ष और बिहार सरकार के मंत्री संतोष सुमन मौजूद रहें। केन्द्रीय मंत्री ने सोशल मीडिया के एक्स पर मुलाकात की फोटो पोस्ट किया।

राजद कोटे के मंत्री काम में फिसड्डी रहे और बयान देने में अव्वल : विप्लव

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भारतीय जनता पार्टी के प्रवक्ता जयराम विप्लव ने कहा कि शिक्षा और रोजगार पर झूठ श्रेय चाहने वाले युवराज की पोल खुल चुकी है। जैसे वो अपने पांच मंत्रालयों में एक भी भर्ती नहीं कर पाए, वैसे ही उनके चेले शिक्षा विभाग में एक भी क्लासरूम नहीं बना सके। ऐसे अनेकों मुद्दे हैं जो राजद का विकास के प्रति नकारात्मक रवैए को प्रमाणित करता है। यह वही पार्टी है जो सत्ता में रहकर विकास कार्यों के लिए आवंटित फंड खर्च नहीं कर पाती लेकिन व्यक्तिगत फंड जमा करने के लिए सीधे ट्रेजरी लूट लेती है। जयराम विप्लव ने कहा कि चंद्रशेखर यादव भी राबड़ी देवी की तरह फंड के उपयोग में नाकाम रहे हैं। उन्होंने बताया कि जंगलराज के दिनों में केंद्र का पैसा हर साल लौट जाता था, खासकर राबड़ी देवी के मुख्यमंत्री रहते कई बार योजनाओं का फंड खर्च नहीं हो पाया था। वही विरासत तेजस्वी यादव ने भी आगे बढ़ाई है। तेजस्वी की पसंदीदा शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर यादव ने 2023-24 में केंद्र से मिले फंड के बावजूद अतिरिक्त कक्षाओं का निर्माण नहीं कराया, जिससे शिक्षा का इंफ्रास्ट्रक्चर ठप सा हो गया। चंद्रशेखर यादव की निष्क्रियता के कारण 2023-24 में 1,017 स्वीकृत कक्षाओं में से एक भी कक्षा का निर्माण नहीं हुआ। कक्षा 9 और 10 के लिए 2,152 स्वीकृत कक्षाओं में से केवल 567 कक्षाएं बनीं, जबकि कक्षा 1 से 8 के लिए 7,568 स्वीकृत कक्षाओं में से मात्र 2,568 कक्षाएं बनीं। जयराम विप्लव ने कहा कि यह मंत्री की शिक्षा के प्रति उदासीनता और फंड के प्रबंधन में अक्षमता का स्पष्ट उदाहरण है। तेजस्वी यादव का शिक्षा मंत्री हिंदुओं के विरुद्ध घृणा फैलाने और हिंदू ग्रंथों तथा देवी-देवताओं पर अपमानजनक टिप्पणियां करने में व्यस्त रहा, जबकि अपने समय का बड़ा हिस्सा ट्रांसफर-पोस्टिंग के भ्रष्टाचार में और विभागीय अधिकारियों से अहंकार की लड़ाई में बर्बाद करता रहा।

झूठा ढिंढोरा पीटने से तेजस्वी को सत्ता नसीब नहीं होगा : उमेश

बोलें-नेता प्रतिपक्ष को अपने गिरेबान में झांकना चाहिए

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार जदयू के माननीय प्रदेश अध्यक्ष श्री उमेश सिंह कुशवाहा ने रविवार को बयान जारी कर लालू परिवार को निशाने पर लिया। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि बिहार के आर्थिक पिछड़ेपन का असली गुनाहगार लालू एंड फैमिली है। लालू परिवार ने अपनी तिजोरी भरने के लिए बिहार के सरकारी खजाने को खाली करने का काम किया, जिसका खामियाजा प्रदेश की 14 करोड़ जनता आज भी भुगत रही है। साथ ही उन्होंने कहा कि लालू-राबड़ी के शासनकाल में हुए अनेकों घोटाले और लाचार व्यवस्था की वजह से बिहार विकास की दौड़ में देश के बाकी अन्य राज्यों से पीछे छूट गया। श्री कुशवाहा ने कहा कि नीतीश सरकार पर भ्रष्टाचार का अनर्गल और आधारहीन आरोप लगाने से पहले नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव को अपने गिरेबान में झांकना चाहिए। उनके माता-पिता ने फर्जी समाजवाद का मुखौटा लगाकर देश में भ्रष्टाचार का नया कीर्तिमान स्थापित किया। देश में दूसरा कोई ऐसा राजनीतिक परिवार नहीं है जिसके आधा दर्जन सदस्यों पर घोटाले और मनी लॉन्ड्रिंग के कई मुकदमे दर्ज हो। मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार की तरक्की इन्हें रास नहीं आ रही है। यह जगजाहिर है कि राजद की सोच हमेशा से बिहार को पीछे धकेलने की रही है(प्रदेश की जनता ने 15 वर्षों तक जंगलराज के दंश को झेल चुकी है।

राज्य की कानून व्यवस्था पूरी तरह हो चुका है ध्वस्त : अरुण

पटना। राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश प्रवक्ता अरुण कुमार यादव ने कहा राज्य की कानून व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो चुका है। बिहार सरकार अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का निर्वहन करने में पूरी तरह विफल साबित हुए हैं। जिसके कारण पूरे बिहार में हत्या, लूट,बलात्कार, अपहरण और रंगदारी की घटनाएं चरम पर है। राजद प्रवक्ता ने कहा कि दिनदहाड़े अपराधी अपराध कर रहे है। लोग भय के साये में जीने पर मजबूर है। घर में लोग सुरक्षित नहीं है। अपराधी घर में घुस कर लोगों को गोली मारकर हत्या और लूटपाट कर रहा है। अपराधियों में शासन और प्रशासन का भय समाप्त हो चुका है। इसलिए अपराधी बेखौफ होकर खुलेआम आपराधिक घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। बिहार में अपराधियों का राज कायम है। राजद प्रवक्ता ने कहा कि आपराधिक घटनाओं पर नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव जी जब सरकार को आईना दिखाने का काम करते हैं तो सत्तापक्ष के लोग तिलमिला उठते हैं। तिलमिलाहट में तेजस्वी और राजद के विरुद्ध अनर्गल प्रलाप करने लगते हैं। राजद प्रवक्ता ने कहा कि पिछले दो-तीन दिनों के अंदर राज्य के विभिन्न जिलों में सैकड़ों आपराधिक घटनाएं घटी है। बिहार की जनता भगवान भरोसे है।

स्व चौधरी नरसिंह पटेल का निधन से समाजिक जगत को अपूरणीय क्षति : श्रवण

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के निदेशार्नुसार उत्तरप्रदेश के जिला संत कबीरनगर के मनियरा के सत्या रिजार्ट में लोकप्रिय राजनेता स्व चौधरी नरसिंह पटेल अज्ञानी के श्रद्धांजलि सभा सह शोकसभा में शामिल होकर उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया। शोकसभा को संबोधित कर जनता दल यूनाइटेड उत्तरप्रदेश के संगठन प्रभारी सह बिहार सरकार के मंत्री श्रवण कुमार ने कहा कि अखिल भारतीय कुर्मी महासभा के पूर्व राष्ट्रीय महासचिव स्व चौधरी नरसिंह अज्ञानी के निधन से समाजिक जगत को एवं मेरे व्यक्तिगत जीवन को क्षति हुई है। वे हमेशा समाज की बात कर किया करते थे तथा विकास को चिंतित रहा करते थे। वे जीवन भर समाज के प्रति संघर्षरत रहें और हमेशा दूसरों की चिंता करते रहे। वे अपनें पीछे पत्नी कुसुम पटेल दो पुत्र अजय कुमार विजय कुमार पुत्री पुनम और सुमन कुमारी अपने पीछे छोड़ गयें। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश जदयू नेता सुशील सिंह पटेल ओमप्रकाश वर्मा रजनीश पटेल शैलेंद्र सिंह गंहवार अभिषेक राय दिवाकर सिंह जितेंद्र सिंह प्रशांत पटेल भैया हरिशंकर पटेल जयप्रकाश पटेल संतोष पटेल सहित कई कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सामाजिक उत्थान में बी पी मंडल का बड़ा योगदान रहा : जगदानन्द

राजद कार्यालय में पूर्व मुख्यमंत्री की मनी जयंती, दी गई श्रद्धांजलि

पटना। राष्ट्रीय जनता दल के राज्य कार्यालय में महान समाजवादी नेता, पूर्व मुख्यमंत्री एवं मंडल आयोग के पूर्व अध्यक्ष स्व बिन्देश्वरी प्रसाद मंडल की जयन्ती पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष जगदानन्द सिंह की अध्यक्षता में मनायी गयी। इस अवसर पर स्व मंडल के तैल चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। इस अवसर पर जगदानन्द सिंह ने कहा कि देश में जब भी सामाजिक परिवर्तन की बात होगी स्व मंडल का नाम गर्व से लिया जायेगा। देश और समाज उन्हें वंचितों का सच्चे हितैषी के रूप में हमेशा याद रखेगा। इस अवसर पर स्वर्गीय वी पी मंडल के चित्र पर माल्यार्पण करने वालों में राष्ट्रीय महासचिव जयप्रकाश नारायण यादव, बिनु यादव, प्रदेश प्रधान महासचिव रणविजय साहू, प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद, अरुण कुमार यादव, प्रदेश महासचिव मुकुंद सिंह, डॉ कुमार राहुल सिंह, प्रमोद कुमार राम, भाई अरुण कुमार, डॉ प्रेम कुमार गुप्ता, प्रदीप कुमार मेहता, मो एनामुल हक, सलमान अख्तर,अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष डॉ अनवर आलम, युवा राजद के प्रदेश अध्यक्ष राजेश यादव, बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ प्रदेश अध्यक्ष अशोक कुमार गुप्ता, चंदेश्वर प्रसाद सिंह, सहित अन्य गणमान्य लोगों ने स्व वीपी मंडल के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

भाजपा कार्यालय में पार्टी नेताओं ने सुनी प्रधानमंत्री के मन की बात

- प्रधानमंत्री ने स्पेस तकनीक के जरिए कीजय जवान-जय किसान की बात: सम्राट

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार भाजपा के प्रदेश कार्यालय में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जनसंवाद कार्यक्रम मन की बात को रविवार को भाजपा के पूर्व अध्यक्ष सह बिहार सरकार में उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी समेत तमाम नेता और कार्यकताओं ने बैठकर सुना। भाजपा कार्यालय में मन की बात के 113 वें एपिसोड को सुनने वालों में उप मुख्यमंत्री चौधरी के अलावा मंत्री मंगल पांडेय, सांसद भीम सिंह, मुख्यालय प्रभारी अरविंद शर्मा, सुरेश रुंगटा, कार्यालय मंत्री प्रवीण चंद्र राय, मनोज कुमार सहित प्रदेश के कई पदाधिकारी, नेता और बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे। मन की बात सुनने के बाद उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा कि प्रधानमंत्री जी ने मन की बात में स्पेस सेक्टर में भारत की उपलब्धियों का जिक्र करते हुए स्पेस तकनीक में किए गए प्रयासों की भी चर्चा की।

इस दौरान उन्होंने आईआईटी मद्रास के पूर्व छात्रों से भी रूबरू होते हुए जय जवान-जय किसान की बात कही। प्रधानमंत्री ने इसके अलावा वन्य जीवों और इंसानी रिश्तों की भी चर्चा की। इस क्रम में उन्होंने पशुओं के प्रति लोगों के प्रेम की अरुणाचल प्रदेश के एक गांव में किए जा रहे डी प्रिंटिंग की भी बात साझा की।

प्रदेश प्रवक्ता के पिता के निधन पर राजद में शोक

पटना। राजद के प्रदेश प्रवक्ता प्रमोद कुमार पिता दिनेश प्रसाद सिंहा के निधन पर लालू प्रसाद, राबड़ी देवी, तेजस्वी यादव ने गहरी शोक संवेदना प्रकट कर कहा कि दुख की घड़ी में राजद परिवार उनके साथ खड़ा है । सांसद डॉ मीसा भारती, पूर्व मंत्री तेज प्रताप यादव, प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह, राष्ट्रीय प्रधान महासचिव अब्दुल बारी सिद्दीकी,राष्ट्रीय मुख्य प्रवक्ता प्रो मनोज कुमार झा, राज्यसभा सांसद संजय यादव, प्रदेश उपाध्यक्ष शिवचंद्र राम, प्रदेश राजद के प्रधान महासचिव से रणविजय साहू, प्रदेश के मुख्य प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव, एमएलसी कारी मो शोऐब, प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद, अरुण कुमार यादवसहित अन्य नेताओ ने उनके निधन पर शोक जताया है।

बाढ प्रभावित क्षेत्रों में राहत कार्य चलाए सरकार : राजद

पटना। बिहार प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के प्रवक्ता एजाज अहमद ने बताया कि राजद के प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह ने राज्य सरकार से बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में राहत कार्य तेजी से चलाये जाने की मांग की है। इस संबंध में नेतृत्व के निदेशार्नुसार, प्रदेश राजद के प्रधान महासचिव रणविजय साहू ने बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में राहत के कार्यों में तेजी लाने तथा बेहतर ढंग से राहत कार्य चलाए जाने के लिए स्थानीय शासन और प्रशासन के द्वारा राहत कार्य चलाये जाने की दिशा में संबंधित पदाधिकारी से जानकारी भी प्राप्त कर रहे है। इस संबंध में जिला स्तर पर राहत कार्य चलाने में राष्ट्रीय जनता दल के द्वारा पार्टी संगठन के स्तर दिए गए सूची के अनुसार आवश्यक कार्रवाई करने की दिशा में बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में लघु कृषक तथा मजदूरों को राशन उपलब्ध कराये जाने, जानवरों के लिए चारे की व्यवस्था किए जाने, बरसात से बचने के लिए तिरपाल तथा सेड का निर्माण कराये जाने, स्वास्थ्य व्यवस्था को बेहतर करने के लिए तथा लोगों को सांप कट्टी से बचाव के लिए दवा उपलब्ध कराने जाने की मांग की है।इस संबंध में प्रदेश के महासचिव मदन शर्मा लगातार लोगों से संगठन के स्तर से वार्ता कर रिपोर्ट प्राप्त कर रहे हैं।

दादीजी मंदिर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव प्रारम्भ

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

श्याम मंडल द्वारा दादीजी मंदिर में 31 घण्टे की अखण्ड ज्योति जलाकर तीन दिवसीय श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव प्रारम्भ किया गया। मौके पर शक्तिधाम के मुख्य संयोजक अमर कुमार अग्रवाल ने बताया कि श्री श्याम मंडल पटना का 55 वाँ वार्षिकोत्सव जन्माष्टमी रविवार संध्या से प्रारम्भ हुआ जिसमे इस वर्ष श्याम बाबा का भव्य श्रृंगार कोलकाता से आये मशहूर कलाकार द्वारा किया गया है। भव्य दरवार के सजावट की छटा पूरे हॉल में फैल है। पूरा हॉल सैकड़ों की संख्या में उपस्थित महिलाओं एवं पुरुषों से खचाखच भरा हुआ था। मौके पर, भिवानी से पधारे हर्ष तनेजा, जयपुर से अमित नामा, समस्तीपुर से धर्मेन्द्र सिंह एवं श्याम मंडल पटना से प्रसिद्ध कलाकारों ने अपने अपने भजन सुनाकर सबको मंत्र मुग्ध कर दिया। मौके पर सचिव ध्रुव मोरारका ने बताया कि कल जन्माष्टमी के अवसर पर दिन के तीन बजे से राधा - कृष्ण नृत्य, भजन एवं मटकी का कार्यक्रम होगा जो देर रात तक चलेगा तथा रात्रि बारह बजे श्री कृष्ण जन्मोत्सव होगा। एम पी जैन ने बताया कि कार्यक्रम को सफल बनाने में अमर अग्रवाल, रूपेश अग्रवाल, रितेश तुलसियान, मनोज अग्रवाल, ललन लाठ, शंकर शर्मा, ऋषि शर्मा मुख्य रूप से लगे रहे।

बिहार निषाद संघ के मुख्य संरक्षक शशिभूषण के निधन पर शोक सभा

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार निषाद संघ के पूर्व महामंत्री,वर्तमान में संघ के मुख्य संरक्षक और निषाद जागरण पत्रिका के मुख्य सम्पादक रहे शशिभूषण कुमार का लम्बी बीमारी के बाद बीते 14 अगस्त को हुए निधन पर मछुआ टोली अखाड़ा परिसर में संघ के प्रदेश अध्यक्ष ई हरेन्द्र प्रसाद निषाद की अध्यक्षता में शोक सभा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने इनके तैल चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की।उनकी आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। मौके पर स्व. शशिभूषण कुमार की दोनों पुत्री, दामाद ऋषिकेश कश्यप, बिन्द विकास सामाजिक सेवा संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष गणेश कुमार बिन्द मौजूद थे। शोक सभा को सम्बोधित करते हुए प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि वे हमेशा संघ आगे कैसे बढ़े और निषाद समाज का हित और उत्थान कैसे हो सोचते थे और कार्य करते थे। संघ के कार्यकारी प्रधान महासचिव धीरेन्द्र निषाद ने कहा इनके आकस्मिक निधन से पूरे निषाद समाज और अति पिछड़ा वर्ग को अपूरणीय क्षति हुई है। संघ के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष जलेश्वर सहनी एवं प्रदेश उपाध्यक्ष मीना कुमारी निषाद, बिन्द बेलदार सामाजिक सेवा संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष गणेश कुमार बिन्द, प्रो मिथिलेश कुमार, निषाद संघ के महासचिव मनोज कुमार एवं सुरेश प्रसाद सहनी ने स्व. कुमार की जीवनी पर प्रकाश डाला। अन्य वक्ताओं ने कहा कि संघ की प्रदेश उपाध्यक्ष स्व. कुमार की पत्नि कृष्णा देवी भी निषाद महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र में जागरूकता लाने हेतु प्रयासरत हैं। मौके पर हरिहर सिंह, जयमंगल चौधरी,डॉ विनय कुमार, शिव शंकर निषाद, अनिल कुमार निषाद, नरेश केवट,विनय कुमार, शिवरतन निषाद, राजेश सहनी, संजय कुमार सहनी,नन्द किशोर सहनी,लवली सिंह, देशज जलज,वर्जना सिंह, श्याम बाबू सिह ,सुरेश कुमार, राजेश कुमार सहित कई लोगों ने शोक सभा में भाग लिया।

पूर्व मुख्यमंत्री बीपी मण्डल की जयंती के अवसर पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन

वक्ता बोलें-आरक्षण को बचाने के लिए सदन से सड़क तक बनाना होगा मोर्चा

- आरक्षण की लड़ाई जीतने के लिए शिक्षित व जागरूक होने की जरूरत

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जातिवार जनगणना, सुप्रीम कोर्ट तथा हाईकोर्ट के न्यायाधीशों की नियुक्ति में आरक्षण एवं बिहार में विस्तारित आरक्षण को संविधान की नवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर सेवा- इंडिया के तत्वावधान में जगजीवन राम संसदीय अध्ययन एवं राजनीतिक शोध संस्थान पटना में बी पी मण्डल की जयंती के अवसर पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार को संबोधित करते हुए प्रो शिवजतन ठाकुर ने कहा कि देश में आरक्षण की सबसे बड़ी दुश्मन भाजपा है और भाजपा की सहयोगी पार्टियाँ भी आरक्षण का दुश्मन बन गई हैं। उन्होंने आगे कहा कि आरक्षण की लड़ाई आप तब तक नहीं जीत पाएंगे जब तक शिक्षित नहीं हो सकेंगे। राज्यसभा के पूर्व सदस्य अली अनवर अंसारी ने कहा कि भारत का इतिहास मंडल के पहले और बाद जिस तरह की बहुजन चेतना से जाग्रत हुआ है वह अभूतपूर्व है। उन्होंने कहा कि अगर मंडलवादी राजनीति शक्तियां एकजुट रहतीं तो देश को आज यह फासीवादी दौर नहीं देखना पड़ता। कांग्रेस नेता चंदन यादव ने कहा कि सामाजिक न्याय और आरक्षण को मनुवादी ताकतें न कल पसंद करती थीं न उन्हें आज पसंद है। उ लोकसभा के सदस्य सुदामा प्रसाद ने कहा कि आरक्षण को बचाने के लिए न्यायपालिका एवं सदन की लड़ाई के साथ-साथ सड़क पर भी मोर्चा बनाना पड़ेगा। शशि प्रभा ने अपने वक्तव्य में श्रोताओं से अपील किया कि आप मानसिक गुलामी से मुक्त होकर अंधविश्वास और पाखण्ड का त्याग कीजिए। सेवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर गोविंद सिंह, सेवा के राष्ट्रीय संगठन प्रमुख डॉ वी सी यादव, सेवा उत्तर प्रदेश के प्रांतीय अध्यक्ष डॉ पी एन सिंह, सेवा बिहार के प्रदेश अध्यक्ष संजय कुसुम पटेल, सुप्रीम कोर्ट के एडवोकेट अरविंद गुप्ता, सेवा बिहार के प्रांतीय कोषाध्यक्ष अनुज कुशवाहा, सेवा बिहार के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं बहुजन बुद्धिजीवियों ने संबोधित किया। इस अवसर पर समाजसेवी डॉ बिनोद पाल ने कहा कि आरक्षण को बचाने के लिए सभी पिछड़े वर्गों को एकजुट होना होगा। खंडित होकर अपने लक्ष्य को नहीं हासिल कर सकते। पिछड़े वर्गों को तोड़ने की साजिश को हमे नाकाम करना होग।

पुस्तक नेपथ्य के नायक खंड-2 का लोकार्पण

इस मौके पर सेवा इंडिया द्वारा प्रकाशित पुस्तक नेपथ्य के नायक खंड-2 एवं सामाजिक न्याय का घोषणा पत्र का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री बीपी मंडल की फोटो पर माल्यार्पण कर तथा भारत के संविधान की प्रस्तावना का पाठ करके किया गया। प्रस्तावना का पठन संगठन सचिव कमलेश कुमार ने किया। इस मौके पर डॉ. दिनेश पाल ने बीपीमंडल के संघर्षपूर्ण जीवनी पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा की उनकी अनुशंसाओं ने पिछड़ा वर्ग समाज को एक नया आयाम मिला। नेपथ्य के नायक खंड-2 पुस्तक की चर्चा करते अरुण नारायण ने कहा कि यह साजिशन नेपथ्य में रखे गये नायकों को सामने रखने का उपक्रम है और यह लगातार जारी रहेगा। रामनरेश यादव ने सामाजिक न्याय का घोषणापत्र नामक पुस्तिका के प्रकाशन के उद्देश्यों पर बात करते हुए कहा कि पुस्तिका ओबीसी के सामाजिक न्याय की लड़ाई को धार देने में मददगार साबित होगी। ओबीसी की एकजुटता जरूरी है। हमारी एकजुटता ही बिहार में बढ़े हुए पिछड़े वर्गों का आरक्षण की सुरक्षा सुनिश्चित करेगी। कार्यक्रम का संचालन सेवा के राष्ट्रीय महासचिव राकेश यादव ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए सेवा संगठन की उपादेयता पर बात की।

ये रहें मौजूद :

अनुज कुशवाहा ने आगंतुक अतिथियों का स्वागत किया।धन्यवाद ज्ञापन ई प्रवीण यादव ने किया। इस मौके पर उपर्युक्त वक्ताओं के अलावे रविकांत निराला, विद्यार्थी विकास, अरविंद गुप्ता, डॉ. बिनोद पाल, संतलाल कुशवाहा, अरुण कुशवाहा, अब्दुल मनान, नीता यादव, धर्मवीर चौधरी, अनुराग यादव, अशोक यादव, राजनारायण आदि ने भी सभा को संबोधित किया।

श्री चित्रगुप्त आदि मन्दिर में हुआ संगत पंगत का आयोजन

पूर्व सांसद डॉ.आरके सिन्हा के साझेपन की उड़ान में शामिल हुए सैकड़ों चित्रांश

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

देश के प्राचीन एवं दुर्लभ मन्दिरों में से एक पटना सिटी के श्री चित्रगुप्त आदि मन्दिर प्रांगण में स्थित सभागार में मन्दिर प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष एवं पूर्व राज्यसभा सांसद डॉ आर के सिन्हा द्वारा संचालित संगत पंगत की मासिक बैठक आयोजित की गई। बैठक में पटना सहित बिहार के कई जिलों से आये संगत पंगत के प्रतिनिधि शामिल हुए। संगत पंगत का संयोजन अरविंद सिन्हा ने किया। मंच पर मन्दिर प्रबन्ध समिति के कार्यकारी अध्यक्ष निर्मल कुमार श्रीवास्तव, संगत, संजय सिन्हा, नवीन सिन्हा , डा सुरेंद्र प्रसाद सिन्हा, डा प्रोफेसर युवराज देव प्रसाद ,मंदिर समिति के प्रधान महासचिव सुदामा प्रसाद सिन्हा आदि मौजूद थे। संगत पंगत की शुरूआत सर्वप्रथम श्री चित्रगुप्त आरती एवं वन्दना से हुई। भगवान श्री चित्रगुप्त की आरती के साथ ही उनकी वन्दना में सैकड़ो कायस्थ परिवार के सदस्य शामिल हुए। आरती एवं वन्दना कार्यक्रम में काफी संख्या में संगत पंगत से जुड़ी महिलाएं भी शामिल हुई। भगवान श्री चित्रगुप्त की आरती एवं वन्दना के बाद राष्ट्रीय संयोजिका रत्ना सिन्हा जी के पति के निधन पर एक मिनट मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति हेतु सभी ने प्रार्थना की। पटना सहित राज्य के कोने कोने से आये प्रमुख कायस्थ प्रतिनिधियों ने संगत पंगत के कार्यों पर प्रकाश डाला। संगत पंगत के संयोजक अरविंद सिन्हा ने कहा कि डॉ. आरके सिन्हा का यह अभियान आने वाले दिनों में कायस्थ समाज की प्रगति, विकास एवं आर्थिक सशक्तिकरण का आधार बनेगा और आने वाले दिनों में संगत पंगत चित्रांश परिवार की एकता और सामाजिक उत्थान की दिशा में मिल का पत्थर साबित होगा। मन्दिर प्रबन्ध समिति के कार्यकारी अध्यक्ष निर्मल कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि संगत पंगत के कुछ उद्देश्य हैं और यह उद्देश्य कायस्थ समाज को एक नई दिशा देने में लगा है। सांस्कृतिक कार्यक्रम में गायन की प्रस्तुति रवि सिन्हा और उर्वशी सिन्हा द्वारा दी गई।

पटना सीटी अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष चुने जाने पर संगत पंगत की तरफ से संजय सिन्हा को सम्मानित किया गया। सौरभ एवं संजय कुमार कार्यकारणी सदस्य चुने जाने पर उन्हें भी सम्मानित किया गया और नवीन कुमार सिन्हा वरीय अधिवक्ता को संघ के संरक्षक बनाए जाने पर उन्हें भी सम्मानित किया गया। प्रमुख रूप से रंजन वर्मा, अंजनी, अमिताभ ,विजय कुमार सिंह , शशि शेखर , धीरज श्रीवास्तव, आनंद , सोनू जी से उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

समाचार वितरक को पत्नी शोक

दरभंगा।आयाची नगर बेता निवासी समाचार पत्र वितरक अशोक वर्मा की पत्नी पूनम सिन्हा का हृदय गति रुकने से असामयिक निधन हो गया। उनकी उम्र 54 वर्ष थी। उनके निधन पर समाचार पत्र वितरक संघ के महासचिव पिंटू कुमार के अलावे समाचार पत्र वितरक महावीर दास, पंकज गिरी, बैजनाथ गिरी, लालबाबू कुमार, सुनील दास, प्रमोद दास, अशोक झा, राजू पासवान, सुशील पासवान, अशोक सिंह, सुबोध कुमार, अवधेश, श्याम सहनी, परमानंद झा, सुनील कुमार, प्रेम कुमार, सुवास दास आदि ने शोक व्यक्त किया।

लोजपा प्रखंड अध्यक्ष के पुत्र पर मोबाइल फोन छीनने के क्रम में जानलेवा हमला

मधुबनी बीती रात ट्रेन संख्या 05533 जो दरभंगा से जयनगर आ रही पैसेंजर ट्रेन में कोरहिया स्टेशन पर जयनगर के लोजपा प्रखंड अध्यक्ष प्रदीप कुमार के छोटे पुत्र सोनू कुमार पासवान पर कुछ अज्ञात अपराधियों ने चाकू से वार किया। पीड़ित सोनू कुमार ने बताया कि वह मधुबनी में बजाज फाइनेंस कंपनी में काम करता है। वह रोज की भांति रविवार की रात ट्रेन से जयनगर यूनियन टोल अपने घर लौट रहा था तभी अचानक ट्रेन कोरहिया हॉल्ट पर पहुंचते ही कुछ अज्ञात अपराधियों ने चाकू से सोनू पर हमला किया और मोबाइल फोन छीनने लगा। इसी दरम्यान मोबाइल बचाने की चक्कर में बदमाशों के द्वारा पिछले जेब से पर्स छीन कर सभी बदमाश वहां से फरार हो गए। वही सोनू रेल डिब्बे के कंपार्टमेंट में अकेले था। जब हो हल्ला होने पर सुनकर दूसरे रेल डिब्बे से लोग वहां जब तक पहुंचे तबतक बदमाशों ने ट्रेन से उतरकर भागने में सफल हो गया। उक्त घटना की सूचना सोनू ने अपने परिजनों को दिया। तो वहीं परिजनों ने इस घटना की सूचना जयनगर जीआरपी थाना को दी गई। जयनगर के जीआरपी थाना प्रभारी वीणा देवी एएसआई संजय पासवान प्रशिक्षु एसआई ऋषि रमण ने त्वरित कारवाई करते हुए प्राथमिकी दर्ज की गई तथा उक्त ट्रेन के स्कॉट के जवानों को फटकार लगाते हुए इस संबंध मे जल्द से कारवाई करने का आश्वासन दिया।

संत बाबा नारायण दास के आकस्मिक निधन के बाद भक्तों के बीच शोक की लहर

मधुबनी जयनगर पवित्र कमला नदी से सटे काली मंदिर के पुजारी संत बाबा नारायण दास के आकस्मिक निधन के बाद भक्तों के बीच शोक की लहर दौड़ गई। काली मंदिर के संत नारायण दास विगत कुछ दिनों से बीमार चल रहे थे। तबीयत ज्यादा खराब होने के कारण उन्हें दरभंगा के एक निजी अस्पताल में इलाज के दौरान शनिवार की शाम उनका निधन हो गया। उसके बाद उनके पार्थिव शरीर को मंदिर परिसर लाया गया। जहां पूजा अर्चना कर रविवार को उनके पार्थिव शरीर के साथ शोभा यात्रा निकालते हुए नगर परिक्रमा करते हुए महाविद्यालय के पास में भू समाधि वैदिक मंत्र उच्चारण के साथ पंडित एवं भक्तों के साथ नम आंखों से दी गई। बाबा के भक्त एवं उनसे जुड़े श्रद्धालु उनके निधन की खबर पाते ही पूरा काली मंदिर परिसर पहुंच कर उन्हें अंतिम विदाई देकर उनका आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर समाजसेवी बोआ झा, वार्ड सदस्य रामआशीष साह, मंदिर से जुड़े अनुज नाई, गजेंद्र मोहन, अजय मिश्रा हम सभी भक्त प्रार्थना करते हैं माता उसे अपने चरणों में स्थान दें।

जिलाधिकारी ने दिया जन कल्याणकारी योजनाओं को समय से पूरा करने का निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिलाधिकारी सुब्रत कुमार सेन ने सरकार की विकासात्मक एवं जन कल्याणकारी योजनाओं की समीक्षात्मक बैठक समाहरणालय सभागार में की तथा अधिकारियों को संवेदनशील होकर पूरी जवाबदेही से ससमय कार्य पूरा करने का निर्देश दिया। धान अधिप्राप्ति की समीक्षा में पाया गया कि जिला में 137 लाट सीएमआर प्राप्त नहीं हुआ है। जिलाधिकारी ने कहा कि जिस मिलर द्वारा सीएमआर नहीं दिया जा रहा है वहां के प्रखंड विकास पदाधिकारी तथा प्रखंड सहकारिता प्रसार पदाधिकारी स्थलीय भ्रमण कर मिलर से सीएमआर उपलब्ध करायेंगे। मिलर जब तक धान अधिप्राप्ति के समतुल्य चावल नहीं देते है तब तक अपना निजी कारोबार नहीं करेंगे। इस कार्य की प्रभावी मॉनिटरिंग करने का निर्देश अनुमंडल पदाधिकारी, प्रखंड विकास पदाधिकारी एवं प्रखंड सहकारिता प्रसार पदाधिकारी को दिया गया। यदि किसी पैक्स के पास धान नहीं है तो उसके गोदाम का भौतिक सत्यापन करने का निर्देश प्रखंड सहकारिता प्रसार पदाधिकारी को दिया गया। धान नहीं रहने की स्थिति में गबन मानते हुए प्राथमिकी दर्ज करने का निर्देश दिया गया। धान अधिप्राप्ति के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु जिलाधिकारी ने प्रत्येक दिन कम से कम 8 लाट (290 क्विंटल) सीएमआर की प्राप्ति करने का निर्देश दिया। प्रत्येक दिन जिला आपूर्ति पदाधिकारी इस कार्य से संबंधित प्रगति प्रतिवेदन जिलाधिकारी को समर्पित करेंगे। उन्होंने डिस्पैच कार्य में तेजी लाने हेतु एकरारनामा के अनुसार सभी अभिकर्ता को वाहन रखने तथा वाहन में जीपीएस शीघ्र लगाने का निर्देश दिया। उन्होंने तीन दिनों के भीतर हर हाल में डिस्पैच को पूरा करने का सख्त निर्देश दिया। सभी सहायक गोदाम प्रबंधक को मुख्यालय में बने रहने तथा रविवार एवं छुट्टी के दिन भी उपस्थित रहकर खाद्यान्न का प्रेषण करने का निर्देश दिया। जो अभिकर्ता एकरारनामा के अनुसार वाहन नहीं रखते हैं उस पर जुमार्ना लगाए जाएंगे और आवश्यकता पड़ने पर एकरारनामा रद्द करने तथा उसे काली सूची में डालने की भी कार्रवाई की जाएगी। जिलाधिकारी ने सभी प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी को वितरण में तेजी लाने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी द्वारा म्यूटेशन मामलों की लगातार समीक्षा एवं मॉनिटरिंग करने के फलस्वरूप म्यूटेशन मामलों के निष्पादन में उल्लेखनीय तेजी आई है। जिलाधिकारी ने सभी अंचलाधिकारी को संवेदनशील होकर जनहित में म्यूटेशन के मामलों का विभागीय दिशा निर्देश के अनुरूप मिशन मोड में निष्पादन करने का सख्त निर्देश दिया। साथ ही अभियान बसेरा, भू स्वामित्व प्रमाण पत्र, जमीन मापी आदि के कार्यों में भी तेजी लाने का निर्देश दिया। बैठक में अवगत कराया गया की छूटे हुए जमाबंदी के डिजिटाइजेशन का कार्य अंचल स्तर से परिमार्जन प्लस के माध्यम से होगा।शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने तथा विद्यालयों में शैक्षणिक माहौल पैदा करने हेतु 90 स्मार्ट क्लास रूम बनाए जाएंगे तथा 10 स्कूलों में अटल लैब की स्थापना की जाएगी। विद्यालयों में बुनियादी ढांचे के निर्माण कार्य हेतु शिक्षा विभाग द्वारा प्रदत्त दिशानिर्देश के अनुरूप अब प्रधानाध्यापक 50हजार रुपये तक ही खर्च करेंगे जबकि 50 हजार से 5लाख तक जिला पदाधिकारी के अनुमोदन से कार्य किए जाएंगे। विद्यालय के कार्यों के संपादन के निमित्त कार्य की प्राथमिकता भी निर्धारित की गई है जो निम्नवत है। विद्यालय में शौचालय की सुविधा, शौचालय की मरम्मती, पेयजल की सुविधा, रसोईघर का निर्माण, विद्युतीकरण, बेंचडेस्क का क्रय, बृहद मरम्मती एवं जीर्णोद्धार का कार्य, अतिरिक्त कक्ष का निर्माण, प्रयोगशाला सामग्री का क्रय शामिल है। जिलाधिकारी ने सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी को प्रधानाध्यापक से बातचीत कर विद्यालय में आवश्यक मूलभूत सुविधाओं के निर्माण हेतु प्राथमिकता सूची मंगलवार तक तैयार करने तथा प्रतिवेदित करने का निर्देश दिया। प्रखंडों के वरीय पदाधिकारी को भी इस कार्य में सहयोग प्रदान करते हुए बुधवार तक हर हाल में रिपोर्ट उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया। उप विकास आयुक्त एवं डायरेक्टर डीआरडीए को इस कार्य की मॉनिटरिंग कर सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया।

325 लखपति दीदियों को किया गया सम्मानित

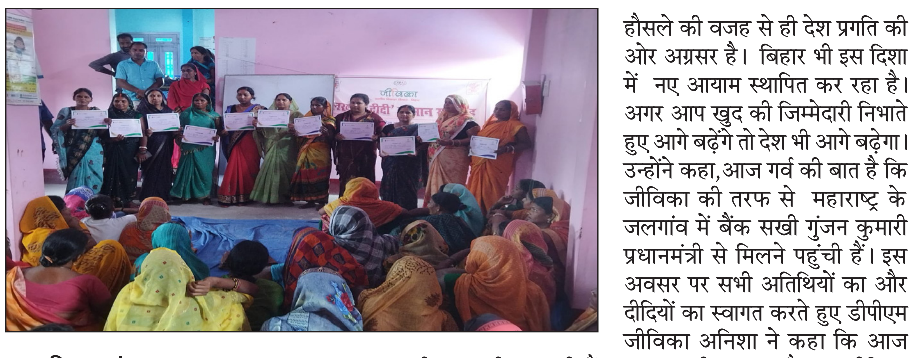

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिले में सभी प्रखंडों में लखपति दीदियों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। साहेबगंज की बैंक सखी गुंजन कुमारी महाराष्ट्र के जलगांव में आयोजित मुख्य समारोह में बिहार के प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुई। जलगांव से होने वाले कार्यक्रम का यहां भी सीधा प्रसारण किया गया। इसके साथ जिन दीदियों को सम्मानित किया उन्होंने अपनी कहानी सबके सामने रखी जो सबों के लिये काफी प्रेरणादायक थी। आखिर कैसे कठिन संघर्ष करते हुए चार सालों में वे अपने व्यवसाय को आगे बढ़ा रही हैं और अब लखपति दीदी बन चुकी है। ऐसा नहीं है कि साल में केवल एक लाख रुपए की आमदनी कर रही हैं बल्कि कई ऐसी दीदियाँ है जो साल में 4 से 5 लख रुपए भी कमा रही है। आज इन्हीं दीदियों को सम्मानित किया गया। जिला स्तरीय कार्यक्रम जागृति टीएलसी काँटी में रखा गया था जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में अपर समहर्ता आपदा प्रबंधन मनोज कुमार उपस्थित थे। उपस्थित सभी दीदियों को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि ने कहा कि जीविका एक ऐसा प्लेटफॉर्म है, जहां पर दीदियां अपने सपने साकार कर रही हैं आर्थिक रूप से सशक्त होने के साथ ही वह सामाजिक रूप से अपनी पहचान बना रही हैं। आज बड़ी खुशी की बात है कि जिले की कई दीदियाँ सम्मानित हो रही है। लखपति दीदियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। उन्होंने कहा, आपके इस हौसले की वजह से ही देश प्रगति की ओर अग्रसर है। बिहार भी इस दिशा में नए आयाम स्थापित कर रहा है। अगर आप खुद की जिम्मेदारी निभाते हुए आगे बढ़ेंगे तो देश भी आगे बढ़ेगा। उन्होंने कहा, आज गर्व की बात है कि जीविका की तरफ से महाराष्ट्र के जलगांव में बैंक सखी गुंजन कुमारी प्रधानमंत्री से मिलने पहुंची हैं। इस अवसर पर सभी अतिथियों का और दीदियों का स्वागत करते हुए डीपीएम जीविका अनिशा ने कहा कि आज बहुत खुशी का पल है जब जीविका से जुड़ी इतनी दीदियों को बड़े स्तर पर सभी प्रखंडों में सम्मानित किया गया है। इस अवसर पर मुजफ्फरपुर जिले के सभी प्रखंडों में एक स्थान पर कार्यक्रम आयोजित किया गया जहां पर प्रखंड भर की प्रमुख लखपति दीदियाँ को सम्मानित किया गया। जागृति टीएलसी में आयोजित कार्यक्रम का संचालन संचार प्रबंधक राजीव रंजन ने किया। इस दौरान रितेश कुमार, मनीष कुमार, शोभा साह, रौशन कुमार, प्रशांत कुमार राकेश कुमार, कुणाल कुमार, कृतिका, अर्चना कुमारी, शिप्रा सिंह, कल्याणी कुमारी प्रीति कुमारी कौशल्या कुमारी, चिंता देवी, निभा कुमारी, अनिता देवी सोनी कुमारी, उषा देवी सहित कई जीविका दीदी उपस्थित थी।

प्रधानमंत्री के मन की बात के संदेशों को आत्मसात करें पार्टी कार्यकर्ता : सांसद

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।प्रधानमंत्री के मन की बात की 113 वी एपिसोड में सशक्त और समर्थ भरत की झलक मिलती है। इस करी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जिस तरह से गैर राजनीतिक युवाओं को राजनीति से जोड़ने, तिरंगा यात्रा से देश में आए उत्साह तथा चंद्रयान 3 की सफलताझाबुआ का आर्ट वर्क फ्लावर पोरस आदि की चर्चा की है तथा उसका संदेश दिया है वह समर्थ और सशक्त भारत की झलक मिलती है। दरभंगा के भाजपा सांसद तथा लोकसभा में पार्टी के सचेतक डा गोपाल जी ठाकुर ने अलीनगर विधानसभा के नरमा स्थित बूथ पर प्रधानमंत्री के मन की बात की 113 वो एपीसोड को सुनने के बाद उपरोक्त विचार व्यक्त किए। सांसद डा ठाकुर ने प्रतिभावान तथा हुनरमंद युवा जिन्हे राजनीति में आने की ईच्छा है उन्हे राजनीति में आने के लिऐ प्रेरित करें तथा 1 लाख युवाओं को राजनीति से जोड़े।सांसद डा ठाकुर ने 23 अगस्त को देश स्तर पर स्पेस डे मनाने के पीएम के निर्णय को विज्ञान और देश के वैज्ञानिकों के लिऐ एक सुखद संदेश बताते हुए कहा की अब जय विज्ञान का नारा प्रतिपादित हो रहा है। इस अवसर पर पार्टी के जिलाध्यक्ष जीबछ सहनी किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष संजय कुमार सिंह उर्फ पप्पू सिंह लोकसभा सह प्रभारी प्रफुल्ल कुमार ठाकुर डा कौशलेंद्र कुमार लाल मुखिया रामानाथ सहनी, बलराम झा, कन्हैया चौधरी, रामभजन पासवान, सीता देवी, भगवान झा, शिवशंकर झा, पुरुषोत्तम सिंह आदी उपस्थित थे।

भोला टॉकीज गुमटी पर ट्रेन के आगे लेटकर महिला ने किया आत्महत्या का प्रयास

समस्तीपुर-मुजफ्फरपुर रेलखंड पर भोला टॉकीज गुमटी के निकट शनिवार की शाम एक महिला ने एक ट्रेन के नीचे आकर आत्महत्या करने का प्रयास किया। हालांकि चालक ने इमरजेंसी ब्रेक लगाकर महिला की जान बचा ली। जख्मी महिला को स्थानीय लोगों के द्वारा सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां उसका उपचार जारी है। महिला की पहचान मुफस्सिल थाना क्षेत्र के सिलौत गांव निवासी अविनाश झा की पत्नी शोभा देवी (30 वर्ष) के रूप में की गई। फिलहाल वह नगर थाना क्षेत्र के प्रोफेसर कॉलोनी में रहती है। बताया गया है कि घरेलू कलह से परेशान महिला ने अपनी जान देने का प्रयास किया। ट्रेन आते देख महिला पटरी पर लेट गई चालक ने जब तक इमरजेंसी ब्रेक लगे तब तक महिला के ऊपर इंजन चढ़ चुका था लेकिन, महिला सुरक्षित नीचे दबी हुई थी। हादसे में महिला जख्मी हो गई है। वहीं घटना के बाद स्थानीय लोगों की मदद से उसे इलाज को लेकर सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। स्थानीय मो. जहांगीर और लालो पासवान ने महिला को सदर में भर्ती कराने में अहम भूमिका निभाई जिससे समय पर महिला की जान बचाई जा सकी है। महिला के सर में काफी चोटें है जहां सदर अस्पताल में उसका उपचार जारी है। हालांकि महिला की स्थिति गंभीर बनी हुई है। वह बार नहीं जीने की बात बोलते हुए बेहोश हो जा रही है।

स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ गांव के गरीबों तक पहुंचाए : डीएम

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिला पदाधिकारी सुब्रत कुमार सेन की अध्यक्षता में शनिवार को रोगी कल्याण समिति की बैठक समाहरणालय स्थित कार्यालय प्रकोष्ठ में आयोजित की गई। बैठक में डीएम ने स्वास्थ्य सुविधाओं में गुणात्मक सुधार लाने तथा स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ सुदूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्र के गरीब लोगों को सुगम रूप से उपलब्ध कराने हेतु सभी डाक्टर एवं स्वास्थ्यकर्मियों को संवेदनशील होकर जवाबदेही से कार्य करने को कहा। बैठक में अवगत कराया गया कि जिले में बिहार मेडिकल इंफ्रास्ट्रक्टर कॉरपोरेशन लिमिटेड द्वारा 23 हेल्थ वेलनेस सेंटर का भवन तथा 4 अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का भवन बनकर तैयार है। जिलाधिकारी ने नवनिर्मित भवन को हस्तगत करने एवं एक सप्ताह के भीतर क्रियाशील बनाने का निर्देश दिया। उन्होंने उक्त ? केंद्र पर चिकित्सा पदाधिकारी, स्वास्थ्य कर्मी की तैनाती कर अविलंब कार्य शुरू करने एवं अनुपालन प्रतिवेदन भेजने का निर्देश दिया। साथ ही बैठक में अवगत कराया गया कि 14 जगहों पर हेल्थ सब-सेंटर का निर्माण होगा जिसके लिए जमीन चिन्हित करने का कार्य जारी है। जिलाधिकारी के निर्देश पर नेत्र रोगियों को अब सदर अस्पताल में ही ऑपरेशन की सुविधा उपलब्ध हो जाएगी। अस्पताल अधीक्षक द्वारा जिला पदाधिकारी को आश्वस्त किया गया कि 15 सितंबर तक सदर अस्पताल में नेत्र संबंधी ऑपरेशन थिएटर शुरू हो जाएगा। जिलाधिकारी ने अस्पताल अधीक्षक को सभी आवश्यक तैयारी समय से पूर्व सुनिश्चित करने का सख्त निर्देश दिया। अस्पताल अधीक्षक डॉक्टर बी एस झा ने जानकारी देते हुए बताया कि अस्पताल में 4 नेत्र रोग विशेषज्ञ, 3 नेत्र सहायक एवं 1 ओटी शल्य कक्ष सहायक कार्यरत है। सदर अस्पताल में ऑपरेशन थिएटर कार्यरत हो जाने से आम लोगों को मोतियाबिंद सहित नेत्र रोग संबंधी अन्य ऑपरेशन की सुविधा सहज रूप में ही इसी अस्पताल में मिल जाएगी। दिव्यांगजनों के लिए अस्पताल में आयोजित कैंप के समय उन्हें बैठने की सुविधा प्रदान करने हेतु ओपीडी के उत्तर पूर्वी भाग में शेड निर्माण का निर्णय लिया गया। इसके लिए वित्तीय नियमों का पालन करते हुए कार्य करने का निर्देश दिया गया। स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं के लिए प्रचार प्रसार का भी निर्णय लिया गया। अस्पताल परिसर के सौंदर्यीकरण तथा जल जमाव एवं निकासी की समुचित व्यवस्था करने, अग्निशमन यंत्र के समुचित रूप से कार्य करने, अस्पताल का रंग रोगन करने, प्रयोगशाला सामग्री एवं उपकरण का क्रय करने आदि बिंदुओं पर भी विचार कर आवश्यक निर्णय लिया गया। बैठक में उप विकास आयुक्त आशुतोष द्विवेदी, सदर अस्पताल अधीक्षक डॉ बी एस झा, डीजीएम बीएम आइसीएल सहित कई अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

सीएम साइंस कॉलेज में हुआ पौधरोपण

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। सीएम साइंस कॉलेज की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई एवं दरभंगा वन प्रमंडल के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को महाविद्यालय परिसर में पौधारोपण किया गया। ह्यएक पेड़ माँ के नामह्ण कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम की शुरूआत करते हुए महाविद्यालय के प्रधानाचार्य प्रो दिलीप कुमार चौधरी ने कहा कि वृक्ष हमारे स्वस्थ जीवन की अनिवार्य शर्त हैं। जहां वृक्ष है वहां जीवन तो है ही, उस जीवन को सुरक्षित होने की निश्चितता भी वृक्ष ही देती है। उन्होंने एनएसएस के स्वयंसेवकों से समाज के सभी तबके के लोगों के मन में पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन का भाव जागृत करने की सलाह दी। उन्होंने अपील की कि एक पेड़ मां के नाम के अभियान का संकल्प हर व्यक्ति ले और इसे लक्ष्य तक पहुंचाए। मौके पर उपस्थित वन प्रक्षेत्र पदाधिकारी अर्जुन प्रसाद गुप्ता ने कहा कि एक पेड़ मां के नाम अभियान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का प्रकृति की सेवा और मां के प्रति सम्मान का अनुकरणीय भाव है। उन्होंने दरभंगा जिला में इस अभियान को जन-जनअभियान बनाने का आह्वान किया। वन परिषद पदाधिकारी काजल कुमारी ने पौध-रोपण ज्यादा से ज्यादा हो इसके लिए सबको संकल्पित होने की जरूरत पर बल दिया। उन्होंने इस अभियान में महाविद्यालय की सक्रिय सहभागिता की सराहना करते हुए इस अभियान में अधिक से अधिक युवाओं को जोड़ने का आह्वान किया। इस अवसर पर एनएसएस के कार्यक्रम पदाधिकारी डा. सत्येंद्र कुमार झा ने वन विभाग को धन्यवाद देते हुए कहा कि पर्यावरण बचाना आज के दौर की पहली आवश्यकता है और वृक्षारोपण इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इस अवसर पर वन विभाग के अनेक अधिकारियों सहित महाविद्यालय के कई शिक्षक, शिक्षकेत्तर कर्मचारी और स्वयंसेवक उपस्थित थे। जिसमें उप वन परिषद विवेक कुमार, अनुराग रंजन, तारकेश्वर कुमार, डा. अजय कुमार ठाकुर, प्रवीण कुमार झा, चेतकर झा, राधेश्याम झा, चन्द्रकान्त चौधरी, कुमार राजर्षि, इकरा, आफिया, अम्बे, वैष्णवी, विवेक, केशव आदि उपस्थित थे। मौके पर एनएसएस के स्वयंसेवकों ने आज रोपित पौधे तथा प्रकृति के संरक्षण और संवर्धन का संकल्प भी लिया।

गुप्त सूचना के आधार पर प्रखंड मे विभिन्न जगह छापेमारी कर विदेशी शराब जब्त

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जयनगर पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर प्रखंड मे विभिन्न जगह छापामारी करते हुए भारी मात्रा मे लगभग कुल 5979. 27 लीटर विदेशी शराब के साथ 4 कारोबारी सहित एक पिकअप गाड़ी को जप्त कर शराब गिरोह का भंडाफोड़ किया है। थाना में आयोजित प्रेस वार्ता में डीएसपी विप्लव कुमार एवं प्रशिक्षु डीएसपी सह थाना प्रभारी अंकुर कुमार ने जानकारी देते हुए बताया की गुप्त सूचना पर शराब की खेप को पकड़ने के लिए टीम बनाकर प्रखंड के पिपरा टोल पर छापेमारी करते हुए एक पिकअप गाड़ी जिसका नंबर बीआर32 जी 7633 गाड़ी को चेकिंग के दौरान विभिन्न प्रकार के विदेशी शराब 827.28 लीटर के साथ चालक सर्वजीत सिंह उम्र 28 पिता भवानी सिंह हनुमानगढ़ राजस्थान सहित गाड़ी पर बैठा राजेश पासवान उम्र 27, पिता स्वर्गीय जितेन पासवान घर पड़वा एवं रामसुंदर यादव उम्र 35 पिता जय लाल यादव घर बैरा को तीनों को हिरासत में लेकर पूछताछ के क्रम में बताया कि यह सभी शराब देवेंद्र यादव घर बेला के स्थित बीज गोदाम एवम मुकेश यादव के राइस मिल पर लेकर जा रहे थे। इसकी सूचना मिलते पुलिस ने एक टीम बनाकर इन लोगों के गोदाम पर छापेमारी करते हुए देवेंद्र यादव के गोदाम से महाराष्ट्र से उत्पादित विदेशी शराब 322 लीटर एवं मुकेश यादव के राइस मिल से 4819 लीटर विभिन्न प्रकार के विदेशी शराब जप्त करते हुए वहां काम करने वाले मुंशी प्रभात कुमार को गिरफ्तार किया है। डीएसपी ने बताया कि इस घटना की छानबीन जारी है। इसमें बहुत से लोगों से पूछताछ की जा रही है।शराब तस्करों के द्वारा खाद एवं बीज के बोरे में शराब छुपा कर लाना एवं उसे बड़े पैमाने पर बेचेने के गिरोह के सदस्यों की छापेमारी कर शराब अधिनियम के तहत ठोस कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

समाहरणालय पर भाकपा 25 सितम्बर को करेगी रोषपूर्ण प्रदर्शन

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।वास रहित भूमिहीन परिवारों को 5 डीसमल जमीन तथा पक्का मकान, पचार्धारियों को जमीन पर कब्जा तथा कब्जा वाली जमीन का पर्चा, दाखिल-खारिज के अनियमितता को दूर कर लंबित आवेदनों का शीघ्र निराकरण, समेत विभिन्न मांगों को लेकर आगामी 25 सितम्बर को समाहरणालय पर विरोध प्रदर्शन करेगी। यह जानकारी भाकपा के राज्य सचिव मंडल सदस्य अजय कुमार सिंह ने एक प्रेस विज्ञप्ति में दी है। प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि बिहार की नीतीश सरकार में नौकरशाह पूरी तरह बेलगाम हो चुकी है। पूरा बिहार सूखा की चपेट में है। किसान हताशा में है। सरकारी नलकूप बंद पड़े हैं और निजी नलकूपों में बिजली का कनेक्शन नहीं दिया जा रहा है। प्रखंड-अंचल कार्यालय भ्रष्टाचार का केन्द्र बन चुका है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी प्रखंड से लेकर जिला स्तर तक चरणबद्ध आंदोलन संगठित कर सरकारी योजनाओं में भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज बुलंद करेगी। बैठक में समाहरणालय पर आहुत प्रदर्शन की तैयारी में प्रखंड तथा पंचायत स्तर पर सघन राजनैतिक अभियान चलाने का निर्णय लिया गया। बैठक में केन्द्र सरकार की गलत नीतियों से देश में व्याप्त कमरतोड़ महंगाई के खिलाफ आगामी 5 सितम्बर को प्रखंड स्तर पर प्रतिरोध मार्च निकालकर प्रधानमंत्री का पुतला दहन करने का निर्णय लिया गया। बैठक में 01-02 अक्टूबर को जिला स्तरीय दो दिवसीय शिक्षण शिविर चलाने का निर्णय लिया गया। शिक्षण शिविर में पार्टी के जिला परिषद् तथा अंचल परिषद् सदस्य भाग लेंगे। बैठक में एक प्रस्ताव पारित कर राज्य में लूट, हत्या, बलात्कार की बढ़ रही घटनाओं पर रोष प्रकट किया गया तथा कहा गया कि राज्य में कानून-व्यवस्था की स्थिति को नियंत्रित करने में सरकार पूरी तरह विफल हो गई है।बैठक में जिला सचिव रामकिशोर झा द्वारा प्रस्तुत कार्य प्रतिवेदन को बहस के बाद पारित किया गया। बैठक की अध्यक्षता राज्य परिषद् सदस्य शम्भू शरण ठाकुर ने की।

कलकत्ता की घटना के विरोध में डीपीएस कादिराबाद के छात्राओं ने निकाली रैली

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।दिल्ली पब्लिक स्कूल कादिराबाद, दरभंगा की छात्राओं द्वारा कोलकाता के आर. जी. कर मेडिकल कॉलेज की रेप पीड़िता डॉक्टर के साथ हुई घटना के विरोध में छात्राओं के द्वारा रैली निकाली गई। इसमें कक्षा छठी से दसवीं तक की छात्राओं ने विद्यालय परिसर से विश्वविद्यालय परिसर तक पैदल मार्च किया। जहां यह रैली एक सभा में बदल गई। इस घटना के विरोध में नारे के साथ-साथ विभिन्न पोस्टरों द्वारा सरकार को जगाने की कोशिश की गई और न्याय देने की मांग के साथ महिलाओं और लडकियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग करते हुए आक्रोश व्यक्त किया गया। सभा स्थल पर छात्राओं ने अपने संबोधन मे कहा कि जिस प्रदेश की मुख्यमंत्री स्वयं महिला हैं, उस प्रदेश में घटना होते हुए पंद्रह दिन हो गए हैं लेकिन अभी तक कोई निष्कर्ष नही निकला है, यह हमारे देश के सरकार और सरकारी तंत्रों के ऊपर प्रश्नचिन्ह बना हुआ है। इस रैली में छात्राओं के साथ-साथ प्रधानाचार्या महोदया एवं शिक्षक-शिक्षिकाओ की अहम भूमिका रही।

समता मूलक के अध्यक्ष अजय पासवान व महासचिव मिथिलेश कुमार निर्वाचित

प्रात : किरण संवाददाता

कुशेश्वरस्थान(दरभंगा)। समता मूलक समाज पार्टी की बैठक रविवार को कुशेश्वरस्थान बाजार स्थित निर्मल पैलेस के सभा भवन में अजय पासवान की अध्यक्षता में हुई। जिसमें पार्टी के प्रदेश कार्यकारिणी का गठन वोटिंग के माध्यम से किया गया। ग्राम भरैन मुशहरी, पोस्ट सुघराईन, थाना तिलकेश्वर, जिला दरभंगा निवासी अजय पासवान पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष निर्वाचित हुए। इसके अलावा मिथिलेश कुमार राय महासचिव, उमेश कुमार शर्मा कोषाध्यक्ष, रेणु राज प्रदेश अध्यक्ष महिला मोर्चा, महेश सदा, प्रदेश अध्यक्ष, दलित मोर्चा, उगन पासवान प्रदेश मिडिया प्रभारी दलित मोर्चा, मो0 निजाम प्रदेश अध्यक्ष अल्पसंख्यक मोर्चा, मो0 लाल बाबू, प्रदेश सचिव अल्पसंख्यक मोर्चा, धर्मवीर मुखिया, प्रदेश अध्यक्ष श्रमिक मोर्चा, गुड्डू चौपाल, प्रदेश प्रवक्ता तथा बालेश्वर पासवान प्रदेश अध्यक्ष किसान मोर्चा के पद पर निर्वाचित हुए। समता मूलक समाज पार्टी के नव निर्वाचित प्रदेश अध्यक्ष श्री पासवान ने पार्टी के स्थापना के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पार्टी समाज के वंचित एवं गरीब वर्गों के उत्थान करने, बेरोजगारी दूर करने, मजदूरों के पलायन रोकने, रोजगार उन्मुखीकरण उद्योग एवं कल कारखाना खोलने के लिए कार्य योजना तैयार करने, बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के शिक्षित बनो, संगठित होकर संघर्ष करो के मूल मंत्र का आत्मसात कर समाज को आगे बढ़ाना है। उन्होंने पार्टी के सभी नव निर्वाचित पदाधिकारियों को पार्टी के उद्देश्यों को जन जन तक पहुंचाने तथा अधिक से अधिक लोगों को पार्टी में शामिल करने के लिए सदस्यता अभियान में जुट जाने का आह्वान किया। कहा कि पार्टी आगामी 2025 के विधानसभा चुनाव में अपने उद्देश्य को लेकर जनता के बीच जाकर बेहतर और खुशहाल बिहार बनाने के लिए वोट मांगेगी। मौके पर भारी संख्या में लोग उपस्थित थे।

20 दिन पहले थानाध्यक्ष बनी सिंम्पी को एसपी ने कर दिया लाइन हाजिर

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

मात्र 20 पहले सरायरंजन थाने की कमान संभालने वाली सिंम्पी कुमारी पर गाज गिर गई है। निर्दोष युवक को थाने की हाजत में बंद कर निर्ममता पूर्वक पीटने पर एसपी ने उन्हें लाइन क्लोज कर दिया है। वह मात्र 20 दिन पहले ही सरायरंजन की थानेदार बनी थी। इससे पहले रविकांत कुमार थानाध्यक्ष थे। जिनपर थाने में निजी स्तर पर डाटा एंट्री ऑपरेटर रखने का आरोप सही साबित होने पर एसपी विनय तिवारी ने उन्हें निलंबित कर दिया था। रविकांत के निलंबन के बाद वहां की कमान सिंम्पी कुमारी को दी गई थी। वह पहले से भी सरायरंजन थाने में ही अपर थानाध्यक्ष के पद पर पोस्टेड थी। बताते चलें कि बीते सोमवार को सरायरंजन थाने की पुलिस ने शक के आधार पर रायपुर पंचायत के बरुणा रसलपुर निवासी राकेश शर्मा की थाने में जमकर निर्ममता पूर्वक पिटाई कर दी थी, जिससे वह गंभीर रूप से जख्मी हो गया। जिसके बाद स्थानीय ग्रामीणों में पुलिस के प्रति रोष व्याप्त था। पीड़ित युवक के नाजुक अंग के आसपास काफी चोटें आयी हैं।मामले को लेकर पीड़ित व उसके परिजनों ने तीन दिनों पहले इसकी लिखित शिकायत एसपी विनय तिवारी से भी करते हुए न्याय की मांग की थी। हालांकि उस दिन परिजनों की मुलाकात एसपी से हो नहीं सकी थी, वह हाईकोर्ट निकले हुए थे तो परिजनों ने ट्रैफिक डीएसपी आशीष राज को आवेदन सौंपा था। समस्तीपुर पहुंचने पर एसपी ने पूरा मामला समझ जांच का जिम्मा सदर एसडीपीओ सह एएसपी संजय पांडेय को सौंप दिया। इसके आलोक में शुक्रवार को एएसपी पीड़ित के घर पहुंच मामले की जांच व पीड़ित युवक से पूछताछ की थी। उन्होंने पीड़ित व्यक्ति से समस्तीपुर पुलिस की पूरी टीम की तरफ से माफी मांगते हुए दोषी पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई की बात कही थी। समस्तीपुर पहुंचते ही उन्होंने एसपी को जांच रिपोर्ट सौंपी। जिसके बाद एसपी ने थानाध्यक्ष की भूमिका को गलत पाते हुए उन्हे तत्काल थानाध्यक्ष के पद से हटाकर लाइन हाजिर कर दिया है। बता दें कि सरायरंजन पुलिस द्वारा युवक की पिटाई का फोटो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा था। लोग सरायरंजन पुलिस द्वारा युवक को निर्ममता पूर्वक पीटने पर आक्रोश भी जाहिर कर रहे थे। लोग एसपी से बार-बार थानाध्यक्ष पर कार्रवाई की मांग भी सोशल मीडिया पर कर रहे थे। बताते चलें की सोमवार की शाम बदमाशों ने एक राहगीर से लाखों रुपये का आभूषण लूट लिया था। इस मामले में शक के आधार पर राकेश शर्मा को पूछताछ के लिए पुलिस थाना पर ले गयी थी। बताया गया है कि हाजत में पुलिस ने उसकी निर्ममताापूर्वक पिटाई की। हालांकि उसके खिलाफ सबूत ना मिलने और मोबाईल लोकेशन उस एरिया में ना होने पर उसे छोड़ दिया गया था। ग्रामीणों का बताना है कि युवक निर्दोष था उसके बावजूद पुलिस उसे पकड़ कर थाना पर ले गयी और अमानवीय तरीके से उसकी पिटाई की। इस तरह की पिटाई पुलिस किसी दुर्दांत अपराधी के साथ भी नहीं करती है। उसके नाजुक अंगो के आसपास काफी चोटें आई है। डॉक्टर के अनुसार अगले 6 महीने तक पीड़ित युवक को बाथरूम जाने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है।

संक्षिप्त खबरें

एक शराबी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

संग्रामपुर (मुंगेर)। संग्रामपुर पुलिस ने थाना क्षेत्र के सरकटिया गांव निवासी अखिलेश कुमार सिंह को शराब के नशे में शोर शराबा करते हुए गिरफ्तार कर थाना लाया गया।जिसे ब्रेथ एनालाइजर से जांच में शराब पीने की पुष्टि होने के बाद न्यायिक हिरासत में मुंगेर भेज दिया गया। थाना अध्यक्ष रुबिकांत कच्छप ने बताया कि गिरफ्तार शराबी के विरुद्ध मद्य निषेध अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज कर न्यायालय को सुपुर्द कर दिया गया है।

श्रीकृष्ण जन्म अष्टमी के मौके पर सत्संग समारोह का आयोजन

सोनो जमुई : श्रीकृष्ण जन्म अष्टमी के शुभ उपलक्ष्य पर आदर्श ग्राम पंचायत राज दहियारी के भेड़िया गाँव में एक दिवसीय सद्भावना सत्संग कार्यक्रम का आयोजन सोमवार की संध्या 6 बजे से रात्रि 10 बजे तक किया जायेगा ।उक्त कार्यक्रम में मानव धर्म के प्रणेता सद्गुरुदेव श्री सतपाल जी महाराज के आत्म भावी महात्मा श्री ज्ञान प्रकाश आनंद एवं महात्मा श्यामा बाई जी के द्वारा गर्वित प्रवचन एवं भजनों का आनंद मिलेगा ।सत्संग प्रेमी देवेंद्र गुप्ता ने बताया कि उक्त कार्यक्रम हमारे निजी मकान भेड़िया गाँव में आयोजित किया जायेगा ।उन्होंने धर्म अनुरागी सत्संग प्रेमी सभी माता और बहनों एवं सभी इष्ट मित्रों को उक्त कार्यक्रम में पधारने का अपील करते हुए कहा कि इस कार्यक्रम में भाग लेकर आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ उठाकर धर्म का भागी बने

महिला के साथ कि गई मारपीट

जमुई [झाझा] रजला गांव में घर पर अकेली एक महिला के साथ उसके रिश्तेदारों के द्वारा मारपीट कर घायल कर दिया। घायल महिला बंसती देवी को इलाज के लिए परिजनों की मदद से सरकारी अस्पताल लाया जहां घायल महिला का इलाज किया गया। घायल महिला ने बताया कि मै और मेरी बहु के बीच घरेलू बात को लेकर झगड़ा हुआ जिसके बाद मेरी बहु बोलबम चली गई। इधर घर पर अकेली थी कि तभी गोतनी की बहु के साथ उसके रिश्तेदार तुलो यादव, पंकज यादव, चीकू ने घर में घुसकर मेरे साथ मारपीट किया।

गणित व विज्ञान में रुचि बढ़ेगी- गणित के 18 व विज्ञान के लिए 24 प्रोजेक्ट से पढ़ाया जाएगा पाठ

मिडिल स्कूलों के बच्चों को प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग विधि से मिलेगी शिक्षा

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौर। सरकार मिडिल स्कूलों के बच्चों को अब प्रोजेक्ट बेस्ड शिक्षा देने की योजना तैयार की है शिक्षा विभाग इसकी तैयारी कर तो रहा है, लेकिन शेड्यूल से पीछे चल रहा है। इस योजना के तहत कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों को गणित एवं विज्ञान की पढ़ाई प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग के जरिए कराया जाएगा। इसके लिए गणित के लिए 18 और विज्ञान के लिए 24 प्रोजेक्ट के माध्यम से पढ़ाने की व्यवस्था की जाएगी। इसके लिए सबसे पहले शिक्षकों को प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग की ट्रेनिंग दी जाएगी। इसके बाद शिक्षक बच्चों को गणित एवं विज्ञान की पढ़ाई को आसान एवं रुचिकर बनाकर प्रयोग के माध्यम से पढ़ाएंगे। जिससे बच्चों को समझने में आसानी हो। प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग में बच्चों को विज्ञान और गणित की शिक्षा रोजमर्रा की घटनाओं पर आधारित होगी। जिसमें बच्चों को गणित एवं विज्ञान की बारीकियां को घटनाओं से जोड़कर समझाया जाएगा ताकि बच्चे बताई गई चीजों को याद करने के साथ ही यह भी समझ सकें कि ऐसा होने के पीछे वैज्ञानिक या गणितज्ञ कारण है। इसके लिए जिला स्तर पर शिक्षकों को 17 अगस्त से पहले तक प्रशिक्षण दिया जाना था। जो अभी तक नहीं हो सका है प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग को सही से लागू करने के लिए जिले के सभी बीईओ,बीपीएम और बीआरपी को प्रशिक्षण दिया जा चुका है प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले बीईओ,बीआरपी और बीपीएम पहले बीआरसी पर फिर सीआरसी पर शिक्षकों को प्रशिक्षण देंगे। ट्रेनिंग का जल्द ही जारी होगा शेड्यूल डीपीओ मानस मिलिंद ने कहा कि प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग को लागू कराने की दिशा में तेजी से काम किया जा रहा है। पहले फेज की ट्रेनिंग का दौड़ पूरा हो चुका है। अब शिक्षकों को ट्रेनिंग देने के लिए शेड्यूल तैयार किया जा रहा है। जल्द ही प्रखंड स्तर पर प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग की ट्रेनिंग शुरू हो जाएगी। बच्चों में गणित एवं विज्ञान के प्रति रुचि पैदा हो जिले के सभी मिडिल स्कूलों में प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग को लागू किया जाएगा। ताकि बच्चों को गणित एवं विज्ञान के प्रति डर से न केवल बाहर निकालने के लिए किया जा रहा है। बल्कि गणित एवं विज्ञान के प्रति बच्चों की रुचि पैदा करना है। ताकि बच्चे नए-नए विचारों को अपनी पढ़ाई के साथ जोड़ने के काबिल बन सके। अपने विचारों को आकार देकर अपने अंदर के डर से निकाल सकें। बच्चों का गणित एवं विज्ञान के प्रति लगातार घट रहे रेशियों को बढ़ाने की भी कवायद है।

सफाई अपनाओ बीमारी भगाओ के तहत चलाया गया जागरूकता अभियान

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। स्वच्छ भारत मिशन के तहत सफाई अपनाओ बीमारी भगाओ अभियान को लेकर नगर पंचायत संग्रामपुर के विभिन्न वार्डों में जागरूकता रैली निकाली गई। अभियान का नेतृत्व कार्यपालक पदाधिकारी संग्रामपुर मनीला राज ने किया। जागरूकता अभियान की शुरूआत नगर पंचायत कार्यालय संग्रामपुर से की गई। इस कार्यक्रम का उद्देश्य लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना और साफ-सफाई के महत्व को समझाना था। इस दौरान नगर पंचायत वासियों को मानसून के समय में फैलने वाली बीमारियों से भी बचाव और सतर्कता के लिए जागरूक और सजग किया गया। कार्यपालक पदाधिकारी के द्वारा उपस्थित लोगों को बताया कि अपने आसपास साफ सफाई रखना और कचरे को केवल कचरा के डब्बे में ही डालना कितना महत्वपूर्ण है। उन्होंने जोर देकर कहा कि अगर शहर में सफाई रहेगी तभी शहर स्वच्छ व स्वस्थ रहेगा और बीमारियों से मुक्त रहेगा। स्वच्छता केवल एक व्यक्ति की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह पूरे समुदाय की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि नगर पंचायत क्षेत्र के विभिन्न स्कूल, आंगनबाड़ी केंद्र, सड़क, क्षेत्र व वार्डों में स्वच्छता जागरूकता का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यक्रम आगामी 31 अगस्त तक अनवरत चलता रहेगा। वहीं इस जागरूकता अभियान के मौके पर सहायक लोक स्वच्छता एवं अपशिष्ट प्रबंधन पदाधिकारी जय प्रकाश, नगर पंचायत के जनप्रतिनिधि, नप कर्मियों सहित सफाई कर्मी उपस्थित थे।

बिहार प्रदेश भवन एवं पथ निर्माण मजदूर संघ के जिला अध्यक्ष बने अमरेंद्र कुमार शर्मा

प्रात : किरण संवाददाता

सदर मुंगेर । एनपी एक्सपर्ट माधोपुर मंगल बाजार मुंगेर में बिहार प्रदेश भवन एवं पथ निर्माण मजदूर संघ की वार्षिक सम्मेलन हेतु बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता भारतीय मजदूर संघ के जिला महामंत्री रामप्रवेश यादव ने किया। वही सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए भारतीय मजदूर संघ के प्रदेश अध्यक्ष राजेश लाल एवं बिहार प्रदेश भवन एवं पथ निर्माण के प्रदेश महामंत्री सुनील कुमार सिंह वही सब सहमति से मुंगेर जिले बिहार प्रदेश भवन एवं पथ निर्माण मजदूर संघ के कमेटी को भंग करते हुए नए कमेटी का चयन किया गया। जिसमें अध्यक्ष पद पर सर्व सहमति से अमरेंद्र कुमार शर्मा को मुंगेर जिले के अध्यक्ष के रूप में चयन किया गया। तथा महामंत्री एवं कोषाध्यक्ष ,उपाध्यक्ष सहित अन्य सदस्यों का भी चयन किया गया। वही मौके पर उपस्थित प्रदेश से आए मुख्य अतिथि द्वारा संघ के मजबूती पर विस्तार पूर्वक चर्च किये किस प्रकार से संघ को आगे ले जाया जाए। वही भारतीय मजदूर संघ के जिला अध्यक्ष असद शम्सी ने भी बीएमसी नए जिला अध्यक्ष सहित सभी नई कमेटी को बधाई देते हुए काहे की आप अपने कार्य से अपने मजदूर भाइयों को साथ लेकर चलने का काम करेंगे। बैठक में उपस्थित जोगेंद्र कुमार, प्रीतम कुमार ,जगत नारायण ठाकुर, सदानंद महतो ,जितेंद्र मंडल ,अरुणा देवी ,प्रमोद कुमार, प्रदीप बिंद, गिरीश पासवान, शंकर साह, जगत पंडित ,सहित सैकड़ो मजदूर भाई उपस्थित थे।

लखपति जीविका दीदी को पीएम ने किया सम्मानित

सदर मुंगेर । रविवार को पूरे भारत में 1 वर्ष में स्वयं सहायता समूह की जीविका दीदी द्वारा एक लाख रुपए अर्जित करने वाले समूह की जीविका दीदी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा महाराष्ट्र के एक कार्यक्रम उपस्थित होकर पूरे भारत की सभी लखपति दीदी को वीडियो कांफ्रेंस के जरिए संबोधित करते हुए सम्मानित किए। इसी के तहत मुंगेर जिला कार्यालय में कार्यक्रम आयोजित कर डीपीएम गुरुदेव द्वारा 10 लखपति दीदी को प्रस्तुति पत्र देकर सम्मानित किया गया। तथा उन्होंने काहे की यह सभी जीविका की दीदी आज अपने मेहनत से इस मुकाम पर पहुंची है। इस तरह से सभी लोग मेहनत कर आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करें। इसके साथ 9 संकुल स्तरीय संघ द्वारा लखपति दीदी को संकुल स्तरीय पदाधिकारी द्वारा प्रस्तुति पत्र देकर सम्मानित किया गया। वहीं इस कार्यक्रम में जिला सतत जीविकोपार्जन नोडल अजय कुमार सिंह मानव संसाधन रंजीत कुमार सिन्हा ,वित्त प्रबंधक संजीव कुमार सिन्हा सुशील कुमार पासवान, विकास कुमार एवं प्रशांत कुमार सिंह उपस्थित रहे।

लोक सेवक संस्थान के द्वारा 31 वां शिलाई कढ़ाई प्रशिक्षण केंद्र का शुभारंभ

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/सोनो : लोक सेवक संस्थान सोनो के द्वारा एवं रौडिक दिल्ली के सहयोग से शनिवार को 31 वां सिलाई कढ़ाई प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ सोनो प्रखंड के महेश्वरी गाँव स्थित एक निजी भवन में समाज सेवी रमेश कुमार सिंह के द्वारा फीता काटकर किया गया है । उक्त शिविर में आये तकरीबन 100 से अधिक बालिकाएं और महिलाओं ने प्रशिक्षण के लिए अपना निबंध कराई । शिविर में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए श्री सिंह ने कहा कि आज के दौर में ग्रामीण क्षेत्रों में समस्याएं अनैक हैं, जिसमें सबसे गंभीर समस्या बैरोजगारी है। जिस कारण 70 % युवा वर्ग के लोग अपने बाल बच्चों का भरण पोषण करने के लिए रोजगार हेतु अन्य प्रदेश में पलायन करने पर मजबूर है। श्री सिंह ने आगे कहा कि बेरोजगारी से निजात पाने के लिए एक छोटा सा प्रयास सिलाई कढ़ाई प्रशिक्षण की व्यवस्था कर रोजगार परक बनाने का काम किया जा रहा है । उन्होंने कहा कि हमारे जमुई की धरती खनिज संपदा से भरी हुई है , इसके बावजूद व्यवस्था के अभाव में यहाँ के युवा रोजगार के लिए अन्य प्रदेश जाने पर मजबूर हैं। ज्ञात हो कि प्रशिक्षण केंद्र की उद्घाटन के बाद महेश्वरी गाँव के युवा एवं बुद्धिजीवियों के साथ घंटों तक बैठक कर बैरोजगारी से निजात पाने के लिए विचार विमर्श किया गया ।प्रशिक्षण केंद्र में लोक सेवक संस्था के सचिव लीलधर प्रसाद यादव , शंभु दास एवं प्रशिक्षिका प्रतिमा कुमारी के अलावा चिरंजीवी प्रसाद सिंह , अमरनाथ सिंह , गौतम कुमार सिंह , सोनु कुमार , राजेश सिंह , राकेश सिंह , लालमणि सिंह सहित बड़ी संख्या में बालिकायें ओर महिलाएं शामिल थी ।वहीं बैठक के दौरान रमेश कुमार सिंह के साथ चंद्रीका सिंह , निर्भय सिंह , पिन्टू सिंह , दिनो सिंह , झुनझुन सिंह , मुकेश सिंह आदि मौजूद थे।

महिलाओं का यौन शोषण देश के लिए अभिशाप बना

प्रात : किरण संवाददाता

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)। महिलाओं का शोषण की घटनाएं आज देश भर में फल फूल रहा है चाहे भारतीय सामाजिक व्यवस्था हो शैक्षणिक व्यवस्था हो धार्मिक व्यवस्था या फिर राजनीतिक व्यवस्था हो इन सभी स्थानों पर नारी का यौन उत्पीड़न की घटनाओं को जन्म दिया करते हैं जिससे हमारी सरकारों के संज्ञान में आने के बाद भी हर संभव इसी ऑन शोषण की घटनाओं को दवायी जाने का प्रयास किया जाता है आज बच्ची से लेकर अधेड़ उम्र की महिलाओं का यौन शोषण कोई डरा धमका कर तो कोई प्रॉब्लम और कार्य स्थल पर कर्मचारियों के द्वारा महिला कर्मियों के साथ यौन संबंध बनाकर उसका वीडियो बनाकर महिलाओं को वीडियो का वायरल करने का भय दिखाकर कार्यस्थल पर शोषण किया जा रहा है एक अखबार की रिपोर्ट के मुताबिक देशभर में प्रति घंटा 4 से ज्यादा महिलाओं का यौन शोषण हो रहा है घटनाओं को अंजाम देने वाले अपराधियों को अधिकारियों राजनीतिज्ञ और शिक्षाविदों को देश के कानून का भय नहीं होता भले ही महिला दुष्कर्म कानून देश में खड़ा कर दिया गया है लेकिन कानून को यह रावण तथा बात कर और महिलाओं का शोषण कर रहे हैं जो कभी इस समाज में पाप की संज्ञा दी जाती थी आज इस पाप को दरिंदा ने धर्म बना लिया है और हमारे राष्ट्रपिता ने कहा था कि कानून व्यवस्था सुनिश्चित करना सरकारों की जिम्मेदारी होती है पर महिलाओं की प्राथमिक जिम्मेदारी हमारे समाज की भी होती है इस पर अंकुश लगाने के लिए समाज को सजग होकर आवाज उठाने की जरूरत है दुष्कर्म का मामला देश के सभी राज्यों में हो रहे हैं कई राज्य सरकार है और मंत्री अधिकारियों ने अपने विभाग का दमन पर बलात्कार पर जैसे जघन्य अपराध का दाग नहीं लगे वर्षा किस से दबाने का प्रयास करते हैं जिसका जीता जागता वीडियो देखने से स्पष्ट होता है कि बिहार के सचिव स्तर के अधिकारी ने आज तक कार्रवाई नहीं करना इसके पीछे की कहानी कुछ और है और इसमें विभागीय मंत्री का योगदान है कल इस पॉलिटेक्निक कॉलेज में अगर कोलकाता मेडिकल कॉलेज जैसा कांड हो जाएगा तो नीतीश सरकार सिर्फ और सिर्फ पीड़ित के परिवार का आंसू पूछने और मुआवजा देकर अपना पल्ला झाड़ देगा बिहार सरकार और भारत सरकार को इस तरह की घटनाओं को रोकने के लिए के लिए उच्च स्तरीय जांच संस्थान के खिलाफ करनी चाहिए और मुख्या कारण और कर्मचारी एवं विभागीय मंत्रियों पर कार्रवाई करने से पीछे नहीं हटना चाहिए ताकि किसी सरकारी संस्थान में कोलकाता मेडिकल कॉलेज जैसी घटना की पुनर्विवृती बिहार या अन्य राज्यों में नहीं हो सके।

तैलियाडिह पंचायत के वार्ड संख्य 10 के लोगों को सरकारी सुविधा नदारत है

प्रात : किरण संवाददाता

बरियारपुर (मुंगेर)। खड़गपुर प्रखंड के तैलियाडिह पंचायत के वार्ड संख्या 10 के लोगों को सरकारी सुविधा नदारत है। यहां 32 परिवारों के लिये गंगा नदी के बाढ से सभी परिवारों को घर छोड़ अन्यत्र पलायन कर चुके हैं। मवेशियों के साथ अपने खड़गपुर के पहाड़ियों पर सरण स्थली बनाकर जीवन यापन करने के लिए बाध्य हैं। आज तक इसके लिए आपदा प्रबन्धन विभाग द्वारा कोई खोज-खबर नही ली जाने से ग्रामीणों मे आक्रोश व्याप्त है ।वही ग्रामीणों द्वारा त्राहिमाम संदेश वार्ड सदस्यों के माध्यम पंचायत के मुखिया को भेजा गया है परन्तु कोई कार्यवाही नही होने ग्रामीणों ने आक्रोश जताया। वही अंचलाधिकारी संतोष कुमार सिंह ने बताया यहां कभी नाव कि सहायता नही दिया गया है ।इधर ग्रामीणों ने कहा पुर्व मुखिया मुकेश मांझी द्वारा हमें बाढ आपदा के समय नाव उपलब्ध किया जाता था। इधर नये मुखिया द्वारा पदभार ग्रहण करने के बाद यह सुविधा बन्द कर दिया गया है जिससे हमें समस्या नजर आने लगी है।

पेड़ काटने को लेकर हुई मारपीट में दो महिला हुई घायल

जमुई [झाझा] सिमुलतला थानाक्षेत्र के दमगीतर गांव में पेड़ काटने के विवाद को लेकर दो पक्षों के बीच मारपीट हो गई जिसमें दोनो पक्षों से कुल दो महिला घायल हो गई। एक घायल महिला की पहचान पार्वती देवी तो दूसरी घायल महिला की पहचान नीलम देवी है जो आपस में गोतनी है। घायल दोनो महिलाओं का सरकारी अस्पताल में इलाज किया गया। पार्वती देवी ने नीलम देवी और उसके पति झगडू यादव पर मारपीट करने का आरोप लगाया तो दूसरी ओर घायल नीलम देवी के पति ने बताया कि मै अपने जमीन पर पेड़ काट रहा था जिसपर पार्वती देवी ने विवाद करते हुए मेरी पत्नी के साथ मारपीट किया। दोनो घायल महिला ने सिमुलतला थाना में घटना को लेकर आवेदन देने की बात बताई।

गिद्धौर प्रखंड के पतसंडा पंचायत में कृष्ण जन्माष्टमी की तैयारी पूरी,आज मनाया जाएगा श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौर। जन्माष्टमी के अवसर पर गिद्धौर के बजरंगवली मंदिर एवं पंचमदिंर स्थित श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की तैयारी पूरी कर ली गई है ।भगवान श्री कृष्ण जन्मोत्सव आज मध्यरात्रि के बारह बजे धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा ।इसके लिए बजरंगवली मंदिर एवं पंचमदिंर के निकट पंडाल के मंदिर सज धज कर तैयार है ।जन्मोत्सव को लेकर दिपू पंडित एवं कपूर्री पंडित बताते है कि भगवान श्री कृष्ण सोलह कला के अवतार है। उन्होंने कहा कि विष्णु पुराण,स्कंदपुरान,गीता आदि में कृष्ण जन्मोत्सव का खासा वर्णन है ।उन्होंने कहा कि भगवान का जन्म आज मध्यरात्रि बारह बजे होगा ।इस रात का विशेष महत्व है ।इस दिन लोगों को रात्रि जागरण करके भजन-कीर्तन करना चाहिए ।इससे भगवान श्री कृष्ण की विशेष कृपा प्राप्त होती है। आयोजन समिति के सदस्य कुलदीप रावत,सूरज कुमार ने बताया कि समिति के सदस्य तैयारी के अंतिम रूप देने में जुटे हुए है ।उन्होंने बताया कि सोमवार को मध्य रात्रि में भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के बाद से ही मेला प्रारंभ हो जाएगा।

गर्मी व बरसात में भी सेवा पंचायत के सरसा गांव में लोगों को नसीब नही हो पा रहा है नल जल का पानी

- जल्द चालू नही हुआ तो पानी के लिए मुख्यालय परिसर में करेंगे धरना प्रदर्शन

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौर। सेवा पंचायत के सरसा गांव में पिछले एक महीने से मुख्यमंत्री जल नल योजना के बंद पड़े रहने से गांव वासी इस गर्मी व बरसात के मौसम में बूंद बूंद पानी को तरस रहे है ।जल मीनार के बंद रहने से सरसा गांव वासी कुंआ का दूषित जल पीकर अपनी प्यास बुझाने को विवश है। बताते चलें कि सरसा गांव में लाखों रुपए से लागत से बनवाया गया यह जल मीनार सरसा गांव वासी के लोगों के लिए सिर्फ शोभा की वस्तु बनकर रह गया है ।सेवा पंचायत के सरसा गांव निवासी श्रीराम कुमार,सोनू कुमार,छोटू कुमार,संजीत कुमार,सचिन पासवान,अभिषेक साह,सुमन रावत,सुनील साह,महावीर रावत,सुलेन्द्र पासवान सहित दर्जनों ग्रामीणों ने बताया की हम लोगों को पेयजल मुहैया कराने के लिए मुख्यमंत्री सात निश्चय योजना के तहत यह जल मीनार लगाया गया है जो पिछले एक महीने से बंद ही पड़ा है ।इस चिलचिलाती धूप व उमस भरी गर्मी में टोले वासी कुंआ का पानी पी कर किसी तरह अपना जीवन यापन कर रहे है ।गांव वासियो ने कहा कि जल मीनार को चालू करने की गुहार स्थानीय जनप्रतिनिधियो से लेकर प्रखंड के बाबुओं से भी लगाई गई है मगर अब तक किसी ने नही सुना है ।उनोन्हे कहा कि अगर जल्द इस जलमीनार को दुरुस्त करवा चालू नही करवाया गया तो हम सरसा गांव वासी पेयजल के लिए प्रखंड मुख्यालय परिसर में धरना प्रदर्शन को विवश हो जाएंगे ।वही सरसा गांव वासी ने बंद पड़े जल मीनार को दुरुस्त करवा पेयजल बहाल करवाने की लिखित गुहार जलआपूर्ति पदाधिकारी से गांव के वासी द्वारा लगाया गया है ।महीनों बीत गए लेकिन इस दिशा में आज तक कोई कार्रवाई नही हुई है।

दो पक्षों के बीच जमकर हुई मारपीट दोनो पक्षों से कुल 11 लोग हुए घायल

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] थानाक्षेत्र के धमना पंचायत के सलैया गांव में दो पक्षों के बीच रविवार को जमकर मारपीट हो गई जिसमें दोनो पक्षों से कुल मिलाकर 11 लोग घायल हो गया। सभी घायलों को डायल 112 की पुलिस की मदद से इलाज के लिए रेफरल अस्पताल लाया गया जहां सभी घायलों का चिकित्सक डॉ. सदाब अहमद के द्वारा इलाज किया गया। एक पक्ष से घायल की पहचान उपेंद्र यादव उसकी पत्नी उर्मिला देवी, पुत्र संतोष कुमार, पंकज कुमार पुत्री रूपा देवी के रूप में हुई तो दूसरे पक्ष से घायल की पहचान उपेंद्र रावत उसका पुत्र विक्रम रावत, पुत्री रिना देवी, उसका भाई नरेश यादव, पत्नी अरूणा देवी, नाती अमन कुमार के रूप में हुई है। पहले पक्ष से घायल पंकज कुमार ने बताया कि विक्रम नहर के बांध पर अवैध तरीके से घर बनाए हुए है और उसी के घर के रास्ते से मवेशी का आना जाना होता है तो उसी बात को लेकर पहले मेरे भाई के साथ मारपीट जब हमलोग पहुंचे तो वे लोग टांगी से मारपीट करते हुए हमलोगों को घायल कर दिया। दूसरे पक्ष से विक्रम रावत ने बताया कि मेरे खेत में पहले पक्ष के लोगों के द्वारा मवेशी चरा था तभी उपेंद्र यादव के बेटे को मेरा भगना मवेशी निकालने की बात कि तो विवाद करने लगा और उसके बाद उसके घर वाले मेरे घर पर आकर टांगी एवं लोहे के रॉड से मारपीट करते हुए हमलोगों को घायल कर घर में आग लगा दिया।

पौधरोपण करके लोगों को किया गया जागरूक

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/बरहट। साईकिल यात्रा एक विचार मंच अपने 451वें यात्रा प्रखंड क्षेत्र के फुलवरिया ग्राम के शांति निकेतन परिसर में पौधरोपण कर किया पूरा। सदस्य कुंदन सिन्हा ने बताया कि हर मौसम का महत्व मानव के जीवन में अलग अलग रूप से रहता है लेकिन मानसून अवधि हर जीवन को तरोताजा रखता है। इसके साथ ही यह अवधि प्रकृति को पुनर्जीवित करने का समय होता है इसके पूर्व साईकिल यात्रियों का एक दर्जन समूह श्री कृष्ण सिंह स्टेडियम से निकलकर सतगामा, खैरमा बाई पास होते हुए फुलवरिया ग्राम पहुंची। जहां शांति निकेतन आश्रम परिसर में लगभग 100 पौधे लगा कर परिसर को हरा भरा करने का प्रयास किया गया। कुंदन सिन्हा द्वारा आगे बताया गया की हरे भरे पत्तेदार पेड़ पौधे और चारो ओर हरा भरा हो जाने से लोगो के मानसिक तनाव को कम करने का काम करता है। झरने वाली नदियाँ और हरी-भरी घाटियाँ सभी प्राकृतिक उपचार प्रदान करते हैं। इसका कारण यह है कि वे सांस लेने के लिए ताजी हवा देते हैं जिससे हमारे मन पर शांत प्रभाव पड़ता है। सदस्य राहुल सिंह राठौर ने बताया की इस अवधि में आस पास हरा भरा करने का स्वर्णिम अवसर है। जैसे भी संभव हो लोगो द्वारा पौधा रोपण करने का प्रयास करते रहना चाहिए। मौके पर उपस्थित समाजसेवी मकेश्वर रावत ने बताया की पर्यावरण संरक्षण करना प्रत्येक लोग का दायित्व होना चाहिए यदि प्रकृति सही नही होगी तो जीवन को बेहतर बनाया ही नहीं सकता है। हर जीवन अस्वस्थ होता जायेगा जो की कितनी भी कमाई कर लें उससे अपने जीवन को बचाने के लिए पुरा नही कर पाएंगे। समाजसेवी के०डी ०वर्मा ने बताया कि पेड़ों में हमें फिर से जीवंत करने की शक्ति देता है। यही अस्वस्थ है तो कोई भी हरे भरे परिसर में नियमित जाना शुरू कर दें उनके स्वस्थ में सुधार होने की प्रबल संभावना है। इस अवसर मंच के सदस्य राहुल कुमार राठौर, कुंदन सिन्हा, शैलेश भारद्वाज अमित कुमार, डुगडुग, विवेक कुमार, पंकज कुमार, के०पी० शौर्य, गोलू कुमार, हर्ष कुमार सिन्हा,राकेश कुमार, गुंजन मिश्रा, समग्र सेवा से मकेश्वर रावत, केडी वर्मा, आस्तिक कुमार, दीपक कुमार, धनेश्वर कुमार सहित कई लोग उपस्थित थें।

विधायक प्रफुल्ल कुमार मांझी ने किया किऊल जलाशय और एस एस बी कैंप का व्यापक निरीक्षण, जल्द ही समस्या का होगा निराकरण

प्रात : किरण संवाददाता

खैरा/जमुई : क्षेत्रीय विधायक प्रफुल्ल कुमार मांझी ने अपने क्षेत्रीय दौरे के दौरान अपर किऊल जलाशय (गरही डैम) का निरीक्षण किया और जलाशय की वर्तमान स्थिति की समीक्षा की। निरीक्षण के दौरान, उन्होंने विभागीय कर्मियों से डैम के पानी के वितरण संबंधी जानकारी ली और उचित वितरण सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक निर्देश दिए। साथ ही, जलाशय के सौंदर्यीकरण को लेकर भी चर्चा की गई। इसके उपरांत, विधायक मांझी ने एसएसबी कैंप परासी का दौरा किया जहां उन्हें एसएसबी इंस्पेक्टर शिव शंकर द्वारा कैंप परिसर के समतलीकरण की मांग प्रस्तुत की गई। इंस्पेक्टर ने क्षेत्र की अन्य समस्याओं से भी विधायक को अवगत कराया। तत्परता दिखाते हुए, विधायक ने मौके से ही मनरेगा पी. ओ को दूरभाष पर संपर्क कर कैंप परिसर के समतलीकरण के लिए निर्देश जारी किए। दौरे के क्रम में, विधायक ने चितरवार गांव का भी दौरा किया और वहां के निवासियों को सड़क संबंधी समस्याओं के समाधान का आश्वासन दिया। इसके अलावा, उन्होंने धनवे, परासी, केलुआडीह सहित कई अन्य गांवों का भ्रमण कर स्थानीय लोगों की समस्याओं को सुना और उनके निवारण के लिए आवश्यक कदम उठाने का वादा किया। इस अवसर पर जदयू प्रखंड अध्यक्ष रामानंद सिंह, दयानंद यादव, शैलेंद्र रावत, मोहम्मद समरुद्दीन, बब्लू सिंह, राम नरेश सिंह, पिंटू रावत, सुनील मांझी, सकिंद्र सिंह, विनय केशरी, साधु तांती सहित कई एनडीए कार्यकर्ता उपस्थित थे।

सम्पादकीय

ऐसे कथित मौलवियों का बहिष्कार करे मुस्लिम समाज

जो इस्लाम धर्म अपने प्रवर्तक पैगंबर हजरत मुहम्मद के एकेश्वरवाद के मूल सिद्धांत के साथ साथ समानता, प्रेम, सद्भाव व करुणा की विशेषताओं के साथ उनके जीवन काल में ही विश्वस्तर पर प्रसारित हो चुका था वही इस्लाम हजरत मुहम्मद के देहांत के बाद से ही तरह तरह की विचारधाराओं व मतों में विभाजित हो गया। पैगंबर हजरत मुहम्मद के वास्तविक इस्लाम की रक्षा के लिये जहाँ उनके उत्तराधिकारी हजरत अली ने इस्लाम विरोधी शक्तियों से कई जंग लड़ीं वहीँ हजरत अली के बेटे हुसैन ने इस्लाम को सल्तनत का पर्याय समझने वाले दुराचारी सीरियाई शासक यजीद के चंगुल से इस्लाम, इस्लामी सिद्धांत व उसकी पवित्रता को बचाने के लिये करबला में अपनी जान की कुरबानी दी। परंतु दुर्भाग्यवश विश्व का दूसरे नंबर का सबसे बड़ा धर्म होने के बावजूद आज इसी इस्लाम में सैकड़ों वर्ग बन चुके हैं। यहाँ तक कि कई वर्गों में आज भी खूनी संघर्ष होते आ रहे हैं। मुसलमानों के इसी परस्पर मतभेद का नतीजा है कि आज दुनिया के कई देशों में मुसलमानों पर जुल्म ढाये जा रहे हैं और एक अल्लाह एक कुरआन एक रसूल का मानने वाला परन्तु अनेक वर्गों में विभाजित मुस्लिम जगत असहाय होकर केवल तमाशाई बना बैठा है। इस्लाम को जहाँ अनेक मुस्लिम आक्रांताओं, सुल्तानों, बादशाहों व हुक्मरानों ने अपनी सत्ता के स्वार्थवश अपने तरीके से परिभाषित किया और अपनी हुकूमत के विस्तार या उसकी रक्षा के लिये ह्यजिहादह्ण की अवधारणा को कलंकित कर इस्लाम को बदनाम किया वहीँ विभिन्न वर्गों के मुल्लाओं व मौलवियों ने भी इस्लामी शरीया की आड़ में अपने मनगढ़ंत फतवे जारी कर इस्लाम को बदनाम करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। जिहाद और फतवा इन दो शब्दों का तो इन साम्राज्यवादी मानसिककता के लोगों व मुल्लाओं ने इतना दुरूपयोग किया कि अब इस्लाम विरोधी शक्तियां इसका मजाक उड़ाने लगी हैं। इसी इस्लाम धर्म में विवाह को लेकर भी यह व्यवस्था है कि किसी मुस्लिम लड़के/लड़की द्वारा आवश्यक हो तो अपने रिश्ते के चाचा और रिश्ते के मामा के लड़के/लड़की से शादी की जा सकती है। परन्तु अपनी सगी बहन की और सगे भाई की लड़की से शादी तो हरगिज नहीं होती। माता व पिता की बहन से शादी नहीं हो सकती। यदि लड़के की माँ ने किसी दूसरे की लड़की को अपना दूध पिलाया हो यानी दूध शरीक हो तो उस लड़के/लड़की से भी आपस में शादी नही हो सकती। चचेरी, मौसेरी, ममेरी भाई बहन (कजिन) में परस्पर शादी की परम्परा या प्रथा केवल इस्लाम में ही नहीं है बल्कि येरुशलम में अरबों में, पारसियों, यहूदियों, यहाँ तक कि दक्षिण भारत खासकर कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश और तमिलनाडु के कई हिन्दू समुदायों में भी ह्यकजिनह्ण के साथ परस्पर शादी की परम्परा पाई जाती है। चचेरे भाई-बहनों के बीच विवाह को कुछ अमेरिकी राज्यों में भी कानूनी मान्यता प्राप्त है। हिन्दू शास्त्रों के अनुसार तो श्री कृष्ण ने अपनी बहिन सुभद्रा की शादी अपनी बुआ कुंती के पुत्र अर्जुन से कराई थी। सुभद्रा-अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु थे। परन्तु सगी बहन के साथ शादी का उल्लेख मानव जाति के किसी भी धर्म अथवा समुदाय में सुनने को नहीं मिला। हाँ यदि दुनिया में कहीं किसी आदिवासी कबीले में ऐसा होता हो तो उसे अपवाद के रूप में देखा जा सकता है। पिछले दिनों भारत में मौलाना जर्जिस अंसारी ने जोकि स्वयं के इस्लामिक उपदेशक होने का दावा करते हैं, ने विवाह को लेकर एक इतना आपत्तिजनक व विवादित बयान दे दिया जिससे हंगामा खड़ा हो गया और इस्लाम विरोधी शक्तियों को इस्लाम पर निशाना साधने का एक और मौका मिल गया। मौलाना जर्जिस अंसारी ने ह्यउपदेश मेंह्ण कहा कि- ह्लये कितनी बड़ी बेअक़्ली की बात है कि लोग अपनी बहन से निकाह न करें और दूसरों की बहन बेटी के साथ निकाह कर रहे हैं। जबकि बहन आपने मिजाज को जानती है, वो जानती है मेरे भाई को गुस्सा कब आता है, वो जानती है कि मेरे भाई का गुस्सा कैसे दूर होता है।

अनुच्छेद 370 पर कांग्रेस को जवाब देना होगा

सबसे आश्चर्य में डालने वाली बात यह है कि राहुल गांधी ने जम्मू कश्मीर में नेशनल कॉन्फ्रेंस के साथ जब तालमेल किया उससे दो दिन पहले ही उस पार्टी ने अपना चुनाव घोषणापत्र जारी किया था। नेशनल कॉन्फ्रेंस ने विधानसभा चुनाव के लिए जारी घोषणापत्र में कहा है कि वह जम्मू कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा देने वाले संविधान के अनुच्छेद 370 को फिर बहाल करेगी। उसने यह भी कहा कि वह अनुच्छेद 35ए को भी फिर से बहाल करेगी और विधानसभा में एससी व एसटी के लिए आरक्षण देने के प्रावधान को भी बदलेगी। नेशनल कॉन्फ्रेंस का यह घोषणापत्र आने के बाद राहुल गांधी ने उसके साथ तालमेल किया है। यह नहीं माना जा सकता है कि राहुल गांधी ने नेशनल कॉन्फ्रेंस का चुनावी घोषणापत्र नहीं देखा होगा। उन्होंने घोषणापत्र देखने के बाद पूरी जिम्मेदारी के साथ तालमेल किया है। इसलिए राहुल गांधी को निश्चित रूप से अनुच्छेद 370 पर अपनी और पार्टी की स्थिति स्पष्ट करनी होगी। उन्हें बताना होगा कि वे इसके बारे में क्या सोचते हैं और वे नेशनल कॉन्फ्रेंस द्वारा इसे फिर से बहाल करने के वादे का समर्थन करते हैं या नहीं? ध्यान रहे अगस्त 2019 में जब संसद में प्रस्ताव पेश करके इस अनुच्छेद को समाप्त किया गया तो पूरे देश ने इसका स्वागत किया था। कांग्रेस के भी कई नेताओं ने व्यक्तिगत रूप से इसका समर्थन किया। जहां तक कांग्रेस पार्टी का सवाल है तो उसने भी आधिकारिक रूप से इसका विरोध नहीं किया। उसके बाद से कांग्रेस हमेशा कहती रही है कि वह जम्मू कश्मीर का राज्य का दर्जा बहाल कराएगी। उसने कभी नहीं कहा कि वह विशेष राज्य का दर्जा बहाल कराएगी। इस तरह कह सकते हैं कि कांग्रेस ने अनुच्छेद 370 और अनुच्छेद 35ए पर रणनीतिक रूप से समान दूरी का रवैया अपनाया हुआ है। वह इन दोनों अनुच्छेद को हटाने का न तो खुल कर समर्थन करती है और न खुल कर विरोध करती है। परंतु अब कांग्रेस को अपना रुख स्पष्ट करना होगा। क्योंकि जम्मू कश्मीर में चुनाव हैं और उसने नेशनल कॉन्फ्रेंस के साथ तालमेल किया है, जिसने अनुच्छेद 370 और 35ए की वापसी का वादा किया है। अब कांग्रेस को जवाब देना होगा कि वह जम्मू कश्मीर को फिर से विशेष राज्य का दर्जा देने के बारे में क्या सोचती है? वह जम्मू कश्मीर से लद्दाख को अलग किए जाने के बारे में क्या सोच रखती है? राज्य की अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों और महिलाओं के साथ घनघोर भेदभाव करने वाले अनुच्छेद 35ए के बारे में क्या सोचती है? जम्मू कश्मीर के अलग संविधान और अलग झंडे के बारे में क्या सोचती है? जम्मू कश्मीर विधानसभा चुनाव के दौरान तो कांग्रेस से इन सवालों के जवाब मांगे ही जाएंगे उसके बाद पूरे देश में इस पर चर्चा होगी। कांग्रेस को देश की जनता को इसका जवाब देना होगा, जिसने अनुच्छेद 370 हटाए जाने का खुले दिल से स्वागत किया था। कांग्रेस इन सवालों से पल्ला नहीं झाड़ सकती है। अगर वह जवाब नहीं भी देती है तब भी देश की एकता और अखंडता से जुड़े इस मसले पर उसकी सचाई जनता के सामने आ चुकी है। हो सकता है कि नेशनल कॉन्फ्रेंस के साथ तालमेल और इन गंभीर मुद्दों पर चुप्पी कांग्रेस को जम्मू कश्मीर विधानसभा चुनाव में कुछ सफलता दिला दे लेकिन इन्हीं कारणों से कांग्रेस देश की लड़ाई गंवा देगी। कांग्रेस के प्रति देश भर में फिर से अविश्वास पैदा होगा। उसके विभाजनकारी एजेंडे पर नए सिरे से चर्चा होगी। यह आरोप प्रमाणित होगा कि वह जम्मू कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बनने के पक्ष में नहीं है। अगर नए सिरे से अनुच्छेद 370 और 35ए की बहस छिड़ती है तो संविधान में इन्हें शामिल कराने के जवाहरलाल नेहरू के फैसले की भी समीक्षा होगी। संविधान सभा की बहसों में बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर ने जम्मू कश्मीर में विशेष राज्य के प्रावधान का विरोध किया था। नागरिकों से भेदभाव करने वाले इन विशेष प्रावधानों को लागू करने के पक्ष में वे नहीं थे। लेकिन जवाहरलाल नेहरू की जिद के चलते इन्हें लागू किया गया। अगर भानुमति का पिटारा खुलता है तो नेहरू के समय इन विभाजनकारी संवैधानिक प्रावधानों को लागू करने से लेकर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में उनको हटाए जाने तक की समीक्षा होगी। इसमें कांग्रेस को कई ज्वलंत सवालों के जवाब देने होंगे।

महिलाओं को समानता एवं सक्षमता के पंख देने होंगे

युगों से आत्मविस्मृत महिलाओं को अपनी अस्मिता और कर्तृत्वशक्ति का तो अहसास हुआ ही है, साथ ही उसकी व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व चेतना में क्रांति का ऐसा ज्वालामुखी फूटा है, जिससे भेदभाव, असमानता, रूढ़संस्कार जैसे उन्हें कमतर समझने की मानसिकता पर प्रहार हुआ है। पुरुषवर्ग महिलाओं को देह रूप में स्वीकार करता है, किन्तु आधुनिक महिलाओं ने अपनी विविधआयामी प्रतिभा एवं कौशल के बल पर उनके सामने मस्तिष्क एवं शक्ति बनकर अपनी क्षमताओं का परिचय दिया है, वही अपने प्रति होने वाले भेदभाव का जबाव सरकार, समाज एवं पुरुषों को देने में सक्षम है, महिला समानता दिवस यदि उनकी सक्षमता को पंख दे रहा है तो यह जागरूक एवं समानतामूलक विश्व-समाज की संरचना का अभ्युदय है।

ललित गर्ग
लेखक

दुनिया भर में, महिलाओं को सशक्त बनाने, शिक्षा से लेकर राजनीति और आर्थिक भागीदारी तक विभिन्न क्षेत्रों में लैंगिक असमानताओं को दूर करने के प्रयासों को तीव्र गति देने के लिये महिला समानता दिवस 26 अगस्त को मनाया जाता है। सन 1920 में इस दिन संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान में 19वां संशोधन स्वीकार किया गया था। यह दिन महिलाओं को पुरुषों के समान मानने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। न्यूजीलैंड विश्व का पहला देश है, जिसने 1893 में महिला समानता की शुरूआत की। महिलाओं को समानता का दर्जा दिलाने के लिए लगातार संघर्ष करने वाली एक महिला वकील बेल्ला अब्जुग के प्रयास से 1971 से 26 अगस्त को ह्यमहिला समानता दिवसह्ण के रूप में मनाया जाने इस वर्ष की थीम है समता को अपनाएं, जो न केवल महिलाओं की व्यक्तिगत उन्नति के लिए बल्कि समाज की समग्र प्रगति के लिए भी महिलाओं को सशक्त बनाने के महत्व पर केन्द्रित है। यह व्यापक मानवाधिकारों और सतत विकास के साथ लैंगिक समानता के परस्पर संबंध पर जोर देता है।

महिला समानता दिवस से जुड़ा हुआ रंग बैंगनी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त, बैंगनी रंग महिलाओं और लैंगिक समानता का प्रतीक है। यह न्याय और गरिमा का प्रतिनिधित्व करता है, और अक्सर दूरदर्शी सोच और महिलाओं के अधिकारों के लिए चल रही लड़ाई को दशार्ने के लिए उपयोग किया जाता है। महिलाएं ही समस्त मानव प्रजाति की धुरी हैं। वो न केवल बच्चे को जन्म देती हैं बल्कि उनका भरण-पोषण और उन्हें संस्कार भी देती हैं। महिलाएं अपने जीवन में एक साथ कई भूमिकाएं जैसे- मां, पत्नी, बहन, शिक्षक, दोस्त बहुत ही खूबसूरती के साथ निभाती हैं। बावजूद क्या कारण है कि आज हमें महिला समानता दिवस मनाये जाने की आवश्यकता है। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिये जरूरी है कि अधिक महिलाओं को रोजगार दिलाने के लिए भारत सरकार को जरूरी कदम उठाने होंगे। सरकार को अपनी लैंगिकवादी सोच को छोड़ना पड़ेगा।

भारत में महिलाओं की उपेक्षा, भेदभाव, अत्याचार एवं असमानता के कारण महिला समानता ज्यादा अपेक्षित है। भारत ने महिलाओं को आजादी के बाद से ही मतदान का अधिकार पुरुषों के बराबर दिया, परन्तु यदि वास्तविक समानता की बात करें तो भारत में आजादी के 78 वर्ष बीत जाने के बाद भी महिलाओं की स्थिति चिन्ताजनक एवं विसंगतिपूर्ण है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शासन में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में काफी प्रगति देखी गयी है, खासकर शिक्षा और राजनीतिक प्रतिनिधित्व जैसे क्षेत्रों में। नारी शक्ति वन्दन अधिनियम-2023 के माध्यम से नारी शक्ति को राजनीति में समानता देने की शुरूआत हुई है। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसी सरकारी पहलों ने समाज में महिलाओं और लड़कियों की स्थिति को सुधारने पर ध्यान केंद्रित किया है। इसके अतिरिक्त, कार्यबल और नेतृत्व की भूमिकाओं में महिलाओं की भागीदारी धीरे-धीरे बढ़ रही है। इन प्रगतियों के बावजूद, महत्वपूर्ण चुनौतियाँ बनी हुई हैं। भारत में लैंगिक असमानता अभी भी व्याप्त है, खासकर ग्रामीण इलाकों में, जहाँ महिलाओं को अक्सर शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य सेवा में बाधाओं का सामना करना पड़ता है। बाल विवाह, घरेलू हिंसा और लैंगिक वेतन अंतर जैसे मुद्दे समानता की दिशा में प्रगति में बाधा डालते रहते हैं। कार्यस्थल पर लैंगिक समानता हासिल करना भारत सहित विश्व भर में एक महत्वपूर्ण लक्ष्य बना हुआ है। समान कार्य के लिए समान वेतन को बढ़ावा देने वाली नीतियों के माध्यम से इस असमानता को दूर करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

भारत सरकार के खुद के कर्मचारियों में केवल 11 प्रतिशत महिलाएं हैं। सरकारी नौकरियों में महिलाओं के लिये अधिक एवं नये अवसर सामने आने जरूरी है। क्योंकि देश में ऐसी महिलाएं नजर आती हैं, जो सभी प्रकार के भेदभाव के बावजूद प्रत्येक क्षेत्र में एक मुकाम हासिल कर चुकी हैं और सभी उन पर गर्व भी महसूस करते हैं। परन्तु इस कतार में उन सभी महिलाओं को भी शामिल करने की जरूरत है, जो हर दिन अपने घर में और समाज में महिला होने के कारण असमानता, अत्याचार एवं उपेक्षा को झेलने के लिए विवश है। आये दिन समाचार पत्रों में लड़कियों के साथ होने वाली छेड़छाड़ और बलात्कार जैसी खबरों को पढ़ा जा सकता है, परन्तु इन सभी के बीच वे महिलाएं जो अपने ही घर में सिर्फ इसीलिए प्रताड़ित हो रही हैं, क्योंकि वह एक औरत है। सेंटर फॉर मॉनीटरिंग इंडियन इकॉनमी (सीएमआईई) नाम के थिंक टैंक ने बताया है कि भारत में केवल 7 प्रतिशत शहरी महिलाएं ऐसी हैं, जिनके पास रोजगार है या वे उसकी तलाश कर रही हैं। सीएमआईई के मुताबिक, महिलाओं को रोजगार देने के मामले में हमारा देश इंडोनेशिया और सऊदी अरब से भी पीछे है। किसी देश या समाज में अचानक या सुनियोजित उथल-पुथल होती है, कोई आपदा, युद्ध एवं राजनीतिक या मनुष्यजनित समस्या खड़ी होती है तो उसका सबसे ज्यादा नकारात्मक असर स्त्रियों पर पड़ता है और उन्हें ही इसका खामियाजा उठाना पड़ता है।

दावोस में हुए वर्ल्ड इकनॉमिक फोरम में ऑक्सफैम ने अपनी एक रिपोर्ट ह्यटाइम टू केयरह्ण में घरेलू औरतों की आर्थिक स्थितियों का खुलासा करते हुए दुनिया को चौका दिया था। वे महिलाएं जो अपने घर को संभालती हैं, परिवार का ख्याल रखती हैं, वह सुबह उठने से लेकर रात के सोने तक अनगिनत सबसे मुश्किल कामों को करती है। अगर हम यह कहें कि घर संभालना दुनिया का सबसे मुश्किल काम है तो शायद गलत नहीं होगा। दुनिया में सिर्फ यही एक ऐसा पेशा है, जिसमें 24 घंटे, सातों दिन आप काम पर रहते हैं, हर रोज क्राइसिस झेलते हैं, हर डेडलाइन को पूरा करते हैं और वह भी बिना छुट्टी के। सोचिए, इतने सारे कार्य-संपादन के बदले में वह कोई वेतन नहीं लेती। उसके परिश्रम को सामान्यतः घर का नियमित काम-काज कहकर विशेष महत्व नहीं दिया जाता। साथ ही उसके इस काम को राष्ट्र की उन्नति में योगभूत होने की संज्ञा भी नहीं मिलती। प्रश्न है कि घरेलू कामकाजी महिलाओं के श्रम का आर्थिक मूल्यांकन क्यों नहीं किया जाता? घरेलू महिलाओं के साथ यह दोगला व्यवहार क्यों? दरअसल, इस तरह के हालात की वजह सामाजिक एवं संकीर्ण सोच रही है। पितृसत्तात्मक समाज-व्यवस्था में आमतौर पर सत्ता के केंद्र पुरुष रहे और श्रम और संसाधनों के बंटवारे में स्त्रियों को हाशिये पर रखा गया है। सदियों पहले इस तरह की परंपरा विकसित हुई, लेकिन अफसोस इस बात पर है कि आज जब दुनिया अपने आधुनिक और सभ्य होने का दावा कर रही है। एक बड़ा प्रश्न है कि आखिर कब तक सभी वंचनाओं, महामारियों एवं राष्ट्र-संकटों की गाज स्त्रियों पर गिरती रहेगी।

जहां देश में प्रधानमंत्री के पद पर इंदिरा गांधी और वर्तमान में राष्ट्रपति के पद पर द्रोपदी मुर्मू हैं। पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस की अध्यक्ष ममता बनर्जी राज्य की बागडोर संभाल रही हैं। बहुजन समाज पार्टी की अध्यक्ष भी एक महिला मायावती हैं। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी को तो विश्व की ताकतवर महिलाओं में शुमार किया ही जा चुका है।

मिलावटी उत्पादों से सेहत पर दुष्प्रभाव ही पड़ेगा

परंतु क्या ऐसे शोध को केवल जनता के सामने लाने से ही समस्या का हल निकल जाएगा? यदि उपभोक्ता जागरूक हो जाए और देश के सरकारी विभाग इस बात को सुनिश्चित कर लें कि किसी भी हाल में जनता को मिलावटी उत्पाद नहीं बेचे जा सकते, तो शायद स्थिति कुछ बेहतर हो। परंतु हमारे देश में जहां हर काम भ्रष्टाचार के पेपर वेट के सहारे होता है वहाँ कब, क्या और कितना होगा यह बताना मुशिकल है ?फिलहाल हर उपभोक्ता को जागरूक होना जरूरी है। इसके साथ ही देश में टॉक्सिक्स लिंक या अन्य सचेत एनजीओ का होना भी जरूरी है जो जनहित में ऐसे शोध जनता के सामने लाते हैं। आनेवाले समय में देखना यह होगा कि देश भर में काम कर रही ऐसी तमाम एनजीओ के शोध को सरकार कितनी गंभीरता से लेती है और दोषियों के खिलाफ क्या कानूनी कार्यवाही की जाती है। तब तक के लिए हमें सचेत रहना चाहिए और जहां तक संभव हो मिलावटी उत्पादों से बचना चाहिए।

रजनीश कपूर
लेखक

भारत में बढ़ते हुए कैंसर रोग के मरीजों, दिल के रोग के मरीज, मोटापे और अन्य बीमारियों का कारण भी कहीं रोजमर्रा खाने वाले नमक और चीनी में मौजूद ये प्लास्टिक के कण तो नहीं? यदि ऐसा है तो यह एक गंभीर मामला है। घरेलू नमक और चीनी में पाये जाने वाले माइक्रोप्लास्टिक के कण इतने सूक्ष्म होते हैं कि इन्हें आप अपनी आँख से देख भी नहीं सकते।पिछले सप्ताह एक एनजीओ द्वारा किए गए शोध से पता चला कि देश में अधिकतर नमक और चीनी निमार्ता हमें प्लास्टिक के छोटे-छोटे कण खिला रहे हैं। टॉक्सिक्स लिंक नाम की एक एनजीओ के पर्यावरण अनुसंधान विभाग द्वारा किए गए एक शोध के बाद यह दावा किया। जबसे यह खबर उजागर हुई तो उपभोक्ताओं के मन में कई तरह के सवाल उठने लगे हैं। भारत में बढ़ते हुए कैंसर रोग के मरीजों, दिल के रोग के मरीज, मोटापे और अन्य बीमारियों का कारण भी कहीं रोजमर्रा खाने वाले नमक और चीनी में मौजूद ये प्लास्टिक के कण तो नहीं? यदि ऐसा है तो यह एक गंभीर मामला है।घरेलू नमक और चीनी में पाये जाने वाले माइक्रोप्लास्टिक के कण इतने सूक्ष्म होते हैं कि इन्हें आप अपनी आँख से देख भी नहीं सकते। चिंता की बात यह है कि प्लास्टिक के इतने सूक्ष्म कण आपके शरीर में कई सालों तक रह सकते हैं। इतने वर्ष तक यदि ऐसे कण आपके शरीर में रह जाएँगे तो इनका आपकी सेहत पर दुष्प्रभाव तो पड़ेगा ही। अब चूँकि यह शोध सामने आया है तो इसे गंभीरता से लेते हुए इसकी विस्तृत जाँच भी होनी चाहिए और साथ ही दोषियों के खिलाफ उचित कानूनी कार्यवाही भी की जानी चाहिए।आज के दौर में हम जितना भी सादा भोजन करें हम किसी न किसी मात्रा में नमक और चीनी तो लेते ही होंगे। यदि इन जरूरी तत्वों के सेवन से हमें कैंसर और दिल के रोग होने लग जाएँ तो इंसान कहाँ जाए ? यदि मिलावटी मसालों की बात होती है तो हम अपनी दादी-नानी के घरेलू नुस्खे आजमा कर रोजमर्रा के मसालों को घर में ही कूट-पीस सकते हैं। यदि दूषित पानी और कीटनाशक से उगी सब्जियों और फलों की शिकायत मिले तो हम जैविक खेती की मदद से शुद्ध सब्जियों और फलों का सेवन कर लेते हैं। परंतु यदि हर घर में इस्तेमाल होने वाले नमक और चीनी में ही इस कदर मिलावट होने लगे तो आपक्या करेंगे ? लालच इंसान को किस हद तक ले जाता है कि मुनाफे के चक्कर में कुछ चुनिंदा उद्योगपति आम जनता को जहर परोस रहे हैं।माइक्रोप्लास्टिक्स इन सॉल्ट एंड शुगर नाम की इस स्टडी में टॉक्सिक्स लिंक ने टेबल सॉल्ट, रॉक सॉल्ट, समुद्री नमक और स्थानीय कच्चे नमक सहित 10 प्रकार के नमक और ऑनलाइन तथा स्थानीय बाजारों से खरीदी गई पांच प्रकार की चीनी का टेस्ट करने के बाद इस स्टडी को पेश किया। अध्ययन में यह चौकने वाला सच सामने आया कि नमक और चीनी के सभी नमूनों में अलग-अलग तरह के माइक्रोप्लास्टिक्स शामिल थे। इनमें फाइबर, पेलेट्स, फिल्म्स और फ्रैगमेंट्स पाये गये।शोध के अनुसार इन माइक्रोप्लास्टिक्स का आकार 0.1 मिमी से 5 मिमी के बीच पाया गया। सबसे अधिक माइक्रोप्लास्टिक्स की मात्रा आयोडीन युक्त नमक में पाई गई, जो मल्टीकलर के पतले फाइबर और फिल्म्स के रूप में थे। जाँच रिपोर्ट के अनुसार, चीनी के नमूनों में, माइक्रोप्लास्टिक्स की मात्रा 11.85 से 68.25 टुकड़े प्रति किलोग्राम तक पाई गई, जिसमें सबसे अधिक मात्रा गैर-ऑर्गेनिक चीनी में पाई गई। वहीं गौरतलब है कि नमक के नमूनों में प्रति किलोग्राम माइक्रोप्लास्टिक्स की मात्रा 6.71 से 89.15 टुकड़े तक पाई गई। आयोडीन वाले नमक में माइक्रोप्लास्टिक्स की सबसे अधिक मात्रा (89.15 टुकड़े प्रति किलोग्राम) और ऑर्गेनिक रॉक सॉल्ट में सबसे कम (6.70 टुकड़े प्रति किलोग्राम) पाई गई।उल्लेखनीय है कि इस विषय पर किए गए पिछले शोधों में पाया गया है कि औसत भारतीय हर दिन 10.98 ग्राम नमक और लगभग 10 चम्मच चीनी का सेवन करता है, जो कि विश्व स्वास्थ्य संगठन की तय सीमा से काफी अधिक है। ऐसे में यदि हमारे शरीर में माइक्रोप्लास्टिक भी प्रवेश कर रहा है तो यह हमें कितना नुकसान पहुँचाएँगे इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। माइक्रोप्लास्टिक के कण मानव शरीर में मिलावटी भोजन के अलावा हवा और पानी के जरिये भी प्रवेश कर सकते हैं। एक अन्य शोध में यह भी पता चला कि माइक्रोप्लास्टिक मानव शरीर में फेंफड़े, हृदय जैसे अन्य महत्वपूर्ण अंगों में बड़ी आसानी से प्रवेश कर लेते हैं। इतना ही नहीं एक शोध में यह भी पाया गया कि नवजात व अजन्में बच्चों में भी माइक्रोप्लास्टिक प्रवेश कर चुके हैं।चिंता का विषय यह है कि भारत में निर्मित चीनी और नमक में इतनी मात्रा में मिलने वाले ऐसे तत्व क्यों पाये जा रहे हैं? क्या ऐसी स्टडी पहली बार हुई है? इससे पहले भी कई तरह के शोध मिलावटी उत्पादों को लेकर हुए हैं। क्या उन पर उचित कार्यवाही की गई? क्या सरकार ने ऐसे कड़े नियम बनाए कि ऐसी गलती करने पर निमार्ताओं के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्यवाही की जाए? वैज्ञानिक शोध का मतलब स्पष्ट रूप से यही होता है कि जिस भी शोध में कुछ भी हानिकारक पता चले, उसे जनता के सामने पेश किया जाए।

पाकिस्ता न के हालात बांग्लामदेश से ज्याोदा खराब

डॉ. अनिल कुमार निगम

बांग्लाादेश में शेख हसीना सरकार का तख्ताद पलट होने के बाद सवाल उठ रहा है कि क्या दक्षिण एशिया के इस क्षेत्र में तीसरी बार भी ऐसी घटना होगी? क्या अगला नंबर पाकिस्तान का है? यह सवाल सोलह आना खरा इसलिए है क्योंकि इस समय पाकिस्तान के हालात काफी खराब हैं और वहां पर सरकार के खिलाफ कई आंदोलन चल रहे हैं। पाकिस्तांन अनेक भीषण चुनौतियों और संकटों से जूझ रहा है। पाकिस्तान के अंदर जिस तरह के विरोध प्रदर्शन और आंदोलन चल रहे हैं, उससे आभास होता है कि वहां भी सरकार के खिलाफ विद्रोह भड़कने की कगार पर है। यह बात इसलिए दावे के साथ कही जा सकती है क्यों कि बांग्लादेश की तरह पाकिस्तान में भी तख्तापलट का इतिहास रहा है। रावलपिंडी में जमात-ए-इस्लामी के नेतृत्व में हजारों लोग बेरोजगारी व महंगाई के विरोध में सड़कों पर उतर कर शहबाज शरीफ को धमका रहे हैं कि उनका हश्र हसीना से बुरा होगा। दरअसल, पाकिस्तान स्टूडेंट फेडरेशन (पीएसएफ) ने 30 अगस्त तक पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को रिहा करने की मांग की है। स्टूडेंट फेडरेशन ने पाकिस्तान की सरकार को अल्टीमेटम जारी किया। छात्रों की मांग है कि पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान बेगुनाह हैं और जल्द उनको कैद से बाहर निकाला जाए। यहां पर भारत के दो पड़ोसी देशों में हुई दो घटनाओं की चर्चा उचित होगी। पहली घटना 8 जुलाई 2022 की है। श्रीलंका सरकार ने इसी तारीख को ऐलान किया था कि देश दिवालिया हो गया। जिसके बाद हजारों की संख्या में श्रीलंकाई सड़कों पर उतर आए। कोलंबो में राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे के भवन को घेर लिया। गोटबाया को देश छोड़ कर भागना पड़ा था। दूसरी घटना है 5 अगस्त 2024 की है जब बांग्लादेश में दो महीने से जारी आरक्षण विरोधी आंदोलन बेकाबू हो गया। भारी आगजनी, हिंसा और तोड़फोड़ करते प्रदर्शनकारी पीएम हाउस में घुस गए। पीएम शेख हसीना ने इस्तीफा देकर देश छोड़ दिया।

उल्लेखनीय है कि पाकिस्तााान में पहले भी सरकार के तख्ताड़पलट का इतिहास रहा है। वर्ष 1958 में पाकिस्तान के पहले राष्ट्रपति मेजर जनरल इसकंदर मिर्जा ने पाकिस्तानी सांसद और प्रधानमंत्री फिरोज खान नून की सरकार को भंग कर दिया था। इसके साथ ही उन्होंने देश में मार्शल लॉ लागू कर आर्मी कमांडर इन चीफ जनरल अयूब खान को देश की बागडोर सौंप दी थी। महज 13 दिन बाद ही अयूब खान ने तख्तापलट करते हुए देश के राष्ट्रपति को पद से हटा दिया था। पाकिस्तान का दूसरा तख्तापलट आर्मी चीफ जनरल जिया उल हक द्वारा किया गया था। जिया उल हक ने 4 जून 1977 को देश के प्रधानमंत्री जुल्फीकार अली भुट्टो को पद से हटा दिया था। इस तख्तापलट को ह्यऑपरेशन फेयर प्लेह्ण के नाम से भी जाना जाता है। इसी तरह से पाकिस्तााान में तीसरी बार सरकार का तख्ताशपलट 1999 में आर्मी चीफ परवेज मुशर्रफ ने तत्कालीन प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के नेतृत्वा वाली सरकार का तख्तारपलट किया था। पिछले कुछ समय से पाकिस्ताफन में उथल-पुथल चल रही है लेकिन बांग्लायदेश में हुए तख्तााापलट के बाद पाकिस्तोान में लोगों का असंतोष चरम पर पहुंच गया है। रावलपिंडी शहर के मुख्य केंद्र मुर्री रोड पर सड़क को बंद करके जमात-ए-इस्लामी का धरना चल रहा है, जहां हजारों लोग बैठे हैं और मांग कर रहे हैं कि शहबाज शरीफ सरकार बेरोजगारी, मुद्रास्फीति का तत्काल समाधान करे और विशेष रूप से नागरिकों के बिजली बिलों में वृद्धि को कम करे। इस बीच बलूचिस्तान के एकमात्र बंदरगाह शहर ग्वादर सहित कई अन्य शहरों में पिछले दो हफ्ते से धरना-प्रदर्शन जारी है।

संक्षिप्त खबरें

जिलाध्यक्ष ने दी बधाई

छपरा कार्यालय। जद (यू०) जिला अध्यक्ष अल्ताफ आलम राजू ने पूर्व मंत्री मुनेश्वर चौधरी एवं बैद्यनाथ प्रसाद सिंह विकल को पुनः जद (यू०) प्रदेश उपाध्यक्ष एवं पूर्व विधायक रणधीर सिंह को जद (यू०) प्रदेश महासचिव बनाए जाने पर बधाई देते हुए कहा है कि पार्टी ने इन मैं विश्वास और भरोसा करते हुए संगठन में जिम्मेवारी दी है इन लोगो के राजनैतिक अनुभव से संगठन को मजबूती मिलेगी बधाई देने वालो में विधान पार्षद डाक्टर वीरेंद्र नारायण यादव ,पूर्व मंत्री गौतम सिंह,पूर्व विधायक धूमल सिंह,प्रदेश अध्यक्ष अनुसूचित जाति राजेश त्यागी,आनंद किशोर सिंह,पूर्व जिला अध्यक्ष दिनेश सिंह,पूर्व जिला अध्यक्ष मुरारी सिंह,ललनदेव तिवारी,जयप्रकाश यादव, आदि प्रमुख रूप से शामिल है।

मारपीट कर नगदी चेन छीनने की प्राथमिकी दर्ज

बनियापुर । स्थानीय थाना क्षेत्र के हंसराजपुर पूछरी नहर के समीप पिस्टल के बल पर बाईक रोककर गाली गलौज मारपीट कर नगदी चेन छीनने की प्राथमिकी दर्ज कराया गया है। घटना की प्राथमिकी में कराह गाव निवासी मनन प्रिपाठी ने बताया है कि बाइक पर हम दो आदमी हंसराजपुर निवासी हल्ला सिंह के घर से आ रहे थे तभी पूछरी नहर के समीप एक बैगनार कार से बाईक को हाथ देते चार व्यक्ति उतरे जिसमे से एक व्यक्ति हंसराजपुर के शंभू राय गाली गलौज करने लगे जिसका विरोध करने पर कमर से पिस्टल निकलकर मेरे मुह मे डाल दिया,जान मारने के नियत से फायर किया पर पिस्टल मिस कर गया,जिसके बाद बेंगणार से एक व्यक्ति शंभू सिंह को रड दिया,जिससे मार कर बुरी तरह जख्मी कर दिया ,पैकेट से दस हजार नगदी,गले से चेन निकाल लिया,हम जमीन पर मुर्च्छित होकर गया गया,लोग बजार पर काफी जुट गए थे ,मुर्दा समझ कर छोड़ दिया पीड़ित ने प्राथमिकी मे परिजनों साहित जानमाल की रक्षा की गोहार लगया है।मामले मे पुलिस अनुसन्धान कर रही है।

मायके आयी पत्नी को पति ने रात्रि मे चार चाकू मारकर हुआ फरार,जख्मी

बनियापुर । सहाजितपुर थाना क्षेत्र के मरीचा गाव मे पत्नी को मनाने आया पति ने पत्नी को चार चाकू मार मृत जानक्कार फरार हो गया,जिसके बाद परिवार वालो ने नजदीकी अस्पताल इसुआपुर इलाज के लिए ले गए,जहा चिकित्स्कों ने प्राथमिक उपचार के बाद सदर अस्पताल छपरा भेज दिया। घटना के संबंध मे बताया गया है कि मरीचा गा० मे पत्नी रिमा देवी को मानने पति सककड़ी निवासी धीरज भारती ससुराल आया था,तीन रहकर जब अकेला पाया तब चाकू से मारकर मृत समझ फरार हो गया,सदर अस्पताल मे जख्मी रिमा देवी की माता मालती देवी ने बताई की शराब के नशे मे दामाद ने चाकू मार कर जख्मी कर दिया है।

प्रसिद्ध बैजू वादक ज्योतिष गिरी की पत्नी का निधन

माँझी। माँझी नगर पँचायत के धूमन गिरी के मठिया निवासी एवम प्रसिद्ध बैजू वादक ज्योतिष गिरी की पत्नी रेणु देवी 25 वर्ष का शनिवार की शाम निधन हो गया। वह पिछले दो वर्ष से बीमार चल रही थी। रविवार को माँझी श्मसान घाट पर मृतका का दाह संस्कार सम्पन्न हो गया। दाह संस्कार में भोजपुरी गायक,वादक,कलाकारों का जमघट लगा रहा। शवयात्रा में शामिल कलाकारों में हरेराम पाण्डेय,मनन गिरी,अजीत हलचल, संजय जहरीला,कुमार अजीत, दिवाकर सिंह,पंकज निगम,प्रवीण गिरी,स्वामीनाथ सिंह,बबलू पाण्डेय,धरमंगल बैठा,धर्मेन्द्र यादव,प्रिंस कुमार पाण्डेय,विजय यादव, सत्येन्द्र शर्मा,आनंद गाजीपुरी,बसंत सिंह,सी एल राय,रामेश्वर मिश्रा,मुकेश पण्डित,जितेन्द्र सिंह भोला,अभय गिरी,जनक राम,सुरेन्द्र सनेही, अखिलेश राम,सुमसुम जी,अमरेन्द्र जी,सुशील ठाकुर,प्रेम पुजारी साहनी,उमेश गिरी तथा रामनारायण सिंह सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण आदि शामिल थे।

बलभद्र पूजा सह जयंती समारोह सम्पन्न

छपरा कार्यालय। बलभद्र पूजा एवं जयंती समारोह मौना पकड़ी कलवार मोड़ छपरा में आयोजित किया गया। आयोजन ब्याहुत जायसवाल कलवार महासभा के द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व प्राचार्य सिया शरण प्रसाद जी मुख्य रूप से कलवार जाति को अति पिछड़ा किया जाए। और जो अपने जाति का ब्याहुत धर्मशाला जो है उसके विकास पर भी चर्चा किया गया। ब्याव जायसवाल कलवार महासभा के अध्यक्ष विजय प्रसाद ब्याहुत जी, जयसवाल कलवार महासभा के महासचिव शिवकुमार ब्याहुत, ब्याव जायसवाल कलवार के महिला अध्यक्ष सुमन देवी, कोषाध्यक्ष डॉ राजू कुमार अधिवक्ता पूर्व जिला परिषद राजकुमार गुप्ता जी, चंदन कुमार ब्याहुत, डॉ राजेश डाबर, जयप्रकाश जी, प्रदीप कुमार ब्याहुत, संचालन करने वाले सुनील कुमार ब्याहुत, वैश्य जागरण मंच के अध्यक्ष थे।

रक्सौल नागा रोड की एक छात्रा एवं मोतिहारी के दो छात्र की वाराणसी गंगा नदी में डूबने से मौत

एक को बचाने गए दो छात्रों ने भी गंवाई जान, एक शव बरामद

प्रात : किरण, संवाददाता

रक्सौल। स्थानीय शहर रक्सौल के नागा रोड निवासी स्व. सीताराम सिंह की पौत्री एवं सोनू सिंह की पुत्री और जिला मुख्यालय मोतिहारी के चांदमारी चौक के दो युवक सहित कुल 3 की वाराणसी के सामने घाट क्षेत्र में गंगा नदी में डूबने से मौत हो गई है। जिसकी सूचना पाकर पहुंची लंका थाने की पुलिस ने जल पुलिस और एनडीआरएफ के गोताखोरों की मदद से एक युवक का शव बरामद कर लिया है, जबकि श्री सिंह की पुत्री एवं पुत्र की तलाश जारी है। लंका थाने की पुलिस को शनिवार की देर रात लगभग 2:30 बजे सूचना मिली कि तीन लोग सामने घाट क्षेत्र में गंगा में डूब गए हैं। सूचना के आधार पर लंका थानाध्यक्ष शिवाकांत मिश्र फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे तो पता लगा कि बिहार के मोतिहारी का रहने वाला एलएलबी प्रथम वर्ष का 21 वर्षीय छात्र वैभव, स्नातक का 21 वर्षीय छात्र ऋषि एवं फिजियोथेरेपी की पढ़ाई करने वाली 19 वषीर्या सोना गंगा में डूब गए हैं। इस संबंध में एक छात्र रीशू ने बताया कि रविवार की सुबह 7 बजे हम लोगों की ट्रेन थी। हम लोग अपने एक दोस्त से मिलने आए थे। नींद न लग जाए, इसके लिए हम लोग टहलने चले गए। अनियंत्रित होने के कारण पहले सोना गंगा में गिर गई और वहां मौजूद उसको बचाने के चक्कर में वैभव और ऋषि ने छलांग लगा दी, जिसके कारण वे भी डूब गए। बाद में पुलिस ने गोताखोरों की मदद से वैभव के शव को तो बरामद कर लिया, परन्तु ऋषि और सोना की शव अब तक बरामद नहीं हो सकी है, जिनकी तलाश जारी है। वहीं घटना के बाद पुलिस ने हादसे के संबंध में दोनों छात्रों और छात्रा के परिजनों को सूचना दे दिया है। जानकारी के मुताबिक सोना किसी परीक्षा को देने के लिए वाराणसी गई हुई थी। इधर घटना के बाद सोनू सिंह के घर में कोहराम मचा हुआ है, सभी परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है, पड़ोसी लोग भी इस दुखद घटना से पूरी तरह स्तब्ध हैं, सांत्वना देने के लिए लोगों का तांता लगा हुआ है। एक होनहार बेटी के जाने से सभी दुःखी हैं।

भाजपा ने आयोजित किया कार्यशाला

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। छपरा नगर भाजपा का एक दिवसीय सदयस्ता कार्यशाला शिव शंकर विवाह भवन मौना बगंज में नगर अध्यक्ष राजेश फैशन की अध्यक्षता में हुआ। कार्यशाला का प्रारम्भ पंडित दीन दयाल उपाध्याय एवं डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर पुष्प अर्पित कर नमन करते हुए ,वन्दे मातरम शुरू हुआ।

इस कार्यशाला में भाजपा जिला अध्यक्ष रणजीत कुमार सिंह ने कहा कि आगामी सितम्बर माह से पूरे देश मे भाजपा का सदयस्ता अभियान की शुरूआत होगी। छपरा नगर मण्डल सारण जिला का सबसे बड़ा मण्डल है छपरा शहर में सभी बूथों पर ज्यादा से ज्यादा सदयस्ता करनी है। आप सभी कार्यकताओं के बल पर बिहार में सबसे ज्यादा सदस्य बनाने का लक्ष्य को पूरा करनी है।

पूर्व जिला अध्यक्ष रमेश प्रसाद ने कहा कि हम प्रत्येक बूथ पर टोली बनाकर सभी को सदस्य बनाना है। खासकर महिलाओं दबे समाज को जोड़ने की जरूरत है। भाजपा एक मात्र पार्टी संगठन वाली पार्टी है। विश्व के सबसे बड़ी सदस्यों वाली पार्टी है।

नगर अध्यक्ष राजेश फैशन ने कहा कि सारण जिला द्वारा दिये गय सदस्यता का लक्ष्य पूरा किया जाएगा।

कार्यशाला में संबोधित करने वालो में मुख्य रूप से जिला महामंत्री धर्मेन्द्र साह, जिला मन्त्री सत्यानन्द सिंह, जिला भाजपा के मुख्य प्रवक्ता धर्मेन्द्र सिंह चौहान, वरिस्ठ कार्यकर्ता सुशील गुप्ता, पूर्व जिला महामंत्री श्रीनिवास सिंह, शांतनु कुमार, चुनाव प्रबन्धन समिति जिला संयोजक मनोज कुमार सिंह, प्रदेश भाजयुमो क्षेत्रीय प्रभारी चरण दास, नगर महिला मोर्चा के जिला अध्यक्ष ममता मिश्रा, पूर्व मण्डल अध्यक्ष सुशील सिंह, पूर्व मण्डल अध्यक्ष अनुरंजन प्रसाद,मण्डल महामंत्री अनूप यादव, चंदू सिंह, मण्डल उपाध्यक्ष अजित सोनी, अनिल यादव,अंकुर श्रीवास्तव,शालू मिश्रा, कमलेश कुमार, विक्की श्रीवास्तव, अजय साह, उषा देवी,बबली देवी,चंदा देवी, लभली कुमारी, गणेश गोकुल, सुनील कुमार सहित नगर मण्डल भाजपा के पदाधिकारी, बूथ अध्यक्ष शामिल हुए।

सारण जिला क्रिकेट संघ की वार्षिक बैठक सम्पन्न

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। सारण जिला क्रिकेट संघ का वार्षिक बैठक अमितांश होटल सलेमपुर छपरा में संघ की अध्यक्ष इंदु कुमारी के अध्यक्षता में बैठक संपन्न हुई। बैठक में 2023-2024 के आय -व्यय पर विशेष चर्चा की गई। कोषाध्यक्ष नीलम कुमारी के द्वारा 2023 -24 में कुल आय एवं व्यय के विस्तृत जानकारी सभी सदस्यों को दी गई। बैठक मे बिहार क्रिकेट एसोसिएशन के द्वारा प्रत्येक जिलों में क्रिकेट लीग प्रतियोगिता का आयोजन करना सुनिश्चित हुआ है उसके निमित चर्चा की गई। सारण जिला क्रिकेट संघ के अध्यक्षता श्रीमती इंदु कुमारी के द्वारा बताया गया कि जिले के सभी क्लब को निर्देश दिया गया की सभी टीमों का रजिस्ट्रेशन दिनांक 5 सितंबर से 15 सितंबर तक सारण जिला क्रिकेट संघ के बैंक खाते में अपना पंजीयन शुल्क निश्चित रूप से जमा कर उसकी सूची फॉर्म डॉ सुरेश प्रसाद सिंह को समर्पित कर देंगे। एजीएम में सर्व सम्मति से निर्णय हुआ कि पूर्व के पुराने सदस्यों की सदस्यता बहाल करने पर निर्णय लिया गया एवं निर्णय हुआ कि इसकी सूचना बिहार क्रिकेट एसोसिएशन को दी जाए एवं आग्रह पूर्वक मांग की जाए की पूर्व के सभी पुराने सदस्य पुनः सदस्य बनाया जाए। एजीएम में सभी सदस्यों ने मांग कि की नियमानुसार जो पूर्व से क्लब के सदस्य हैं लगातार तीन बैठक में अगर उपस्थित नहीं होते हैं तो उनकी सदस्यता समाप्त की जाए।

बैठक में मुख्य रूप से नाम रजनीश कुमार सिंह चंदन शर्मा नीलम कुमारी संजय कुमार सिंह लोकेश कुमार सुनील कुमार सिंह अमित कुमार डॉ सुरेश प्रसाद सिंह सुनीता देवी राजेंद्र प्रसाद यादव चंदन शर्मा रविंद्र कुमार यादव कुंदन शर्मा अमित कुमार मदन मोहन सिंह विभूति नारायण शर्मा पॉल इस्माइल राजू नयन शर्मा सुजीत कुमार राजेश राय शशिकांत सिंह दीपक यादव जितेंद्र कुमार रघु रंजन प्रसाद खालिद भाई सरिता गुप्ता इत्यादि शामिल हुए इसकी जानकारी सारण जिला क्रिकेट संघ के संयुक्त सचिव चन्दन शर्मा ने दी।

मन की बात युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत एवं मार्गदर्शक-तार किशोर प्रसाद

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। रविवार कोछपरा एकदिवसीय प्रवास में आए बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री तारकिशोर प्रसाद प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम बूथ संख्या 221, 222 पर भाजपा जिला अध्यक्ष रणजीत कुमार सिंह एवं महामंत्री विवेक कुमार सिंह, छपरा मेयर लक्ष्मी प्रसाद गुप्ता , पुर्व प्रत्याशी डॉ धर्मेंद्र कुमार सिंह,निवर्तमान नगर अध्यक्ष सुशील कुमार सिंह ,एवं व्यापार प्रकोष्ठ के संयोजक वरुण प्रकाश राजा , गौरव कुमार ,पूर्व अध्यक्ष रमेश प्रसाद एवं महामंत्री धर्मेंद्र कुमार साह इत्यादि कार्यकताओं के साथ मन की बात कार्यक्रम सुनी सुनने के बाद कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मन की बात का आज का कार्यक्रम युवा पीढ़ी को मार्गदर्शन एवं युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत है प्रधानमंत्री युवाओं को राजनीति में आने के लिए प्रेषित कर रहे हैं जो देश को एक नई दिशा प्रदान करने वाला साबित होगा जिला अध्यक्ष रणजीत कुमार सिंह ने कहा कि आज सारण जिले के हर बूथ पर प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम सुनी जा रही है इसी क्रम में बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री श्री तार किशोर प्रसाद जी का आना एवं हम सभी कार्यकताओं के साथ मन की बात कार्यक्रम को सुनना हम लोगों के लिए उत्साहवर्धक है पूर्व जिला अध्यक्ष अशोक कुमार सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री युवाओं का उत्साहवर्धन मन की बात कार्यक्रम से कर रहे है एवं हर घर तिरंगा कार्यक्रम की प्रशंसा कार्यकताओं के लिए गर्व की बात है। कार्यक्रम समाप्ति के बाद संगठनात्मक चर्चा भी की।

नगरा में निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन,सैकड़ों ने कराया इलाज

प्रात : किरण, संवाददाता

नगरा। प्रखंड क्षेत्र के नगरा चौक स्थित छपरा के देव रक्षित न्यूबार्न एंड चाइल्ड केयर के द्वारा नगरा में रविवार को निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया,जिसमें सैकड़ों लोगों ने भाग लिया। इस शिविर का संचालन शिशु रोग विशेषज्ञ सदर हॉस्पिटल, छपरा के डॉ. इशिका सिन्हा और डॉ. रितेश कुमार द्वारा किया गया।वहीं शिविर में क्षेत्र के सैकड़ों लोगों ने अपने बच्चों की स्वास्थ्य जाँच कराई और विशेषज्ञ डॉक्टरों से परामर्श प्राप्त किया। डॉ. इशिका सिन्हा और डॉ. रितेश कुमार ने बच्चों के स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता बढ़ाने पर जोर दिया और उनके माता-पिता को जरूरी सुझाव भी दिए।जाँच के बाद बच्चों को सभी दवाइयां भी निःशुल्क वितरित की गईं,जिससे गरीब परिवारों को बड़ी राहत मिली।शिविर में विशेष रूप से नवजात शिशुओं और छोटे बच्चों की स्वास्थ्य जाँच की गई,जिसमें बच्चों के विकास,पोषण और बीमारियों की रोकथाम से संबंधित जानकारी प्रदान की गई।इस अवसर पर ई. सेराजुल हक ,संतोष कुमार ,मो रेयाजुद्दीन, तम्मना आलम ,रंजन यादव ,वसीम अहमद, अजीत कुमार सिंह ,सहित क्षेत्र के गणमानय लोग मौजूद थे ,

विशेष ट्रेन के संचलन का हुआ अवधि विस्तार

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। रेलवे प्रशासन द्वारा यात्री जनता की सुविधा हेतु पूर्व से चलायी जा रही 09041/09042 उधना-छपरा-उधना साप्ताहिक विशेष गाड़ी के संचलन अवधि का विस्तार उधना से 29 दिसम्बर, तक प्रत्येक रविवार को तथा छपरा से 30 दिसम्बर,प्रत्येक सोमवार को निम्नवत किया जायेगा।

फलस्वरूप 09041 उधना-छपरा साप्ताहिक विशेष गाड़ी 09 दिसम्बर, 2024 तक प्रत्येक रविवार को उधना से 11.25 बजे प्रस्थान कर चलथान से 11.34 बजे, बारडोली से 11.55 बजे, नंदुरबार से 13.50 बजे, अमलनेर से 15.12 बजे, भुसावल से 16.45 बजे, खंडवा से 18.50 बजे, इटारसी से 21.30 बजे, दूसरे दिन जबलपुर से 01.20 बजे, कटनी से 02.50 बजे, सतना से 04.30 बजे, मानिकपुर से 05.50 बजे, प्रयागराज छिवकी से 07.40 बजे, वाराणसी जं. से 12.40 बजे, जौनपुर से 14.42 बजे, गाजीपुर सिटी से 16.35 बजे तथा बलिया से 17.32 बजे छूटकर छपरा 19.00 बजे पहुँचेगी। वापसी यात्रा में, 09042 छपरा-उधना साप्ताहिक विशेष गाड़ी 30 दिसम्बर, 2024 प्रत्येक सोमवार को छपरा से 23.00 बजे प्रस्थान कर दूसरे दिन बलिया से 00.35 बजे, गाजीपुर सिटी से 01.35 बजे, जौनपुर से 03.12 बजे, वाराणसी जं. से 05.25 बजे, प्रयागराज छिवकी से 10.25 बजे, मानिकपुर से 12.00 बजे, सतना से 13.20 बजे, कटनी से 14.55 बजे, जबलपुर से 16.35 बजे, इटारसी से 20.10 बजे, खंडवा से 23.35 बजे, तीसरे दिन भुसावल से 01.45 बजे, अमलनेर से 03.17 बजे, नंदुरबार से 04.30 बजे, बारडोली से 05.57 बजे तथा चलथान से 06.17 बजे छूटकर उधना 06.45 बजे पहुँचेगी।

इस गाड़ी में सामान्य द्वितीय श्रेणी के 20 एवं एस.एल.आर.डी. के 02 कोचों सहित कुल 22 कोच लगाये जायेंगे।

ननिहाल गए युवक की पोखर में डूबकर मौत, घर में पसरा मातम

प्रात : किरण, संवाददाता

दाउदपुर (मांझी)। दो दिन पूर्व ननिहाल गए एक युवक की पोखर में डूबकर मौत हो गई। मृत युवक दाउदपुर थाना क्षेत्र के जैतपुर गांव निवासी सिपाही राय का बारह वर्षीय पुत्र अजित कुमार राय बताया जाता है। प्राप्त जानकारी के अनुसार अजित दो दिन पूर्व ननिहाल सीवान जिले के दारौंदा थाना क्षेत्र के हड़सर गांव नानी की तबीयत खराब होने की खबर सुन कर गया था। इस बीच वह शाम के समय शौच करने गांव स्थित पोखर के समीप गया था। जहां पैर फिसल जाने के कारण वह गहरे पानी में डूब गया। बाद में घटना की जानकारी होने पर ग्रामीणों के सहयोग से शव को पोखरे से बरामद किया गया। उक्त घटना के बाद ननिहाल से लेकर पैतृक गांव जैतपुर में कोहराम मच गया। आनन-फानन में मृतक की माता गिरजा देवी और दादा दलन राय समेत परिवार के लोग हड़सर पहुंचे और विलाप करने लगे। बाद में परिजनों ने शव को गांव लाए। उसके बाद शव को लेकर मांझी श्मशान घाट पर अंतिम संस्कार किया। अजीत कन्या मध्य विद्यालय जैतपुर में छठे वर्ग का छात्र था। वह काफी मेघावी छात्र था। वह दो भाई व दो बहनों में सबसे छोटा था। घटना के बाद माता गिरजा देवी समेत परिवार के चीख चीत्कार से आसपड़ोस में मातम छा गया।

अनुरक्षको ने मानदेय भुगतान को लेकर मांझी विधायक से लगाई गुहार

कोपा-कोपा नगर पंचायत के 13 वार्डो के 24 नल-जल अनुरक्षकों के मानदेय भुगतान का मामला गरमाता जा रहा है। रविवार को मांझी विधायक डॉ सत्येंद्र यादव से छह साल से मानदेय भुगतान लंबित रहने का मामला अनुरक्षकों ने उठाया। उन्होंने कहा कि अनुरक्षकों के साथ अन्यान्य हुआ है। विधायक ने जिला पंचायती राज पदाधिकारी नरेन्द्र कुमार एवं प्रखण्ड विकाश पदाधिकारी बिनोद कुमार प्रसाद को एक सप्ताह के अंदर मानदेय भुगतान करने का निर्देश दिया।मानदेय भुगतान में अगर देरी हुई तो विधानसभा में इस मामले को उठाया जाएगा तथा दोषी अधिकारियों एवं कर्मियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की जाएगी।मौके पर कोपा नगर पंचायत अनुरक्षक संघ अध्यक्ष अखिलेश कुमार,उपाध्यक्ष नितेन्द्र कुमार शर्मा,मिथिलेश यादव,सादाब खां मुन्ना राय,टुनटुन राय,चांद खां,महताब खा,शम्भू चौधरी, विजय शंकर श्रीवास्तव,सनी राम,मुन्ना शर्मा,राजन खां सहित अन्य लोग मौजूद थे

छपरा में वायुसेना अधिकारी का स्मृति समारोह आयोजित

छपरा कार्यालय। वायुसेना अधिकारी स्वर्गीय जितेंद्र प्रसाद यादव उर्फ जे पी यादव एवं पूर्व शिक्षक रामायण प्रसाद की पुण्य स्मृति समारोह का आयोजन रविवार को शहर के कटहरीबाग स्थित जय प्रकाश विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. लाल बाबू यादव के आवासीय परिसर में हुआ क इस अवसर पर भजन संध्या के साथ ही रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया कसमारोह के मुख्य अतिथि और बिहार विधान परिषद के सारण स्नातक क्षेत्र के विधान पार्षद डॉ. वीरेंद्र नारायण यादव ने कहा कि वे व्यक्तिगत रूप से वायुसेना के अधिकारी जे. पी. यादव को जानते रहे हैं कवे सरल स्वभाव के मृदुल भाषी एव आकर्षक व्यक्तित्व के व्यक्ति थे, जो एक लम्बे अर्से तक देश के विभिन्न क्षेत्रों में रहकर सेना अधिकारी के रूप में निष्ठा पूर्वक अपने कर्तव्यों का पालन किया परंतु दुर्भाग्य वश उनका समय पूर्व ही निधन हो गया उनके पदचिन्हों पर चलते हुए उनके छोटे पुत्र भारतीय सेना में मेजर के पद पर कार्यरत हैं कबड़े पुत्र कैनेडा में मेरिन इंजीनियर हैं तथा पुत्रवधु प्रियंका और ज्योति भी आई टी सेक्टर की बड़ी कम्पनियों में कार्यरत है कसाथ ही उनके बड़े भाई डॉ.लाल बाबू यादव और उनके परिवार के अन्य सदस्य इंजीनियर ब्रजेश चंद्रा, डॉ .राजेश चंद्रा, मनीषा प्रियम ज्ञान- विज्ञान एवं शिक्षा के क्षेत्र में अपनी सक्रियता से ऊँचा मुकाम हासिल कर चुके हैं कआज के समारोह में प्राचार्य अरुण कुमार, शिक्षक नेता अरविंद यादव, डॉ अनिल कुमार, डॉ विकास कुमार,अजीत कुमार सिंह, डॉ. विद्या भूषण श्रीवास्तव, अधिवक्ता रविन्द्र यादव के साथ ही शहर के विभिन्न क्षेत्रों के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे कइस अवसर पर सम्मानित शिक्षक शेखर सुमन यादव के नेतृत्व में भजन-कीर्तन ,निर्गुन तथा समसामयिक भोजपुरी गीतों की भी प्रस्तुति की गई जिसमें उच्च विद्यालय कलुहा की संगीत शिक्षिका विजय लक्ष्मी, तबला वादक अनीश एवं उनके मण्डली के लोगों ने अपनी गीत एवं संगीत के माध्यम से आज के स्मृति समारोह को यादगार बना दिया प्रारंभ में डॉ लाल बाबू यादव ने आगत अतिथियों का स्वागत किया तथा सबके प्रति आभार प्रकट किया

रामनगर पुलिस ने तस्कर समेत भारी मात्रा में अंग्रेजी शराब बरामद किया

बगहा।नसीम खान क्या रामनगर पुलिस ने गुप्त सुचना के आधार पर भारी मात्रा में अंग्रेजी शराब की खेप के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। उक्त तस्कर पुलिस को झांसा देने के लिए डीजल रखने वाले केन में 98 लीटर 530`` अंग्रेजी शराब छुपा रखी थी। पुलिस को गुप्ता सुचना मिली थी की दोन नहर बंजरिया चौक के समीप से मोटरसाइकिल पर एक युवक डीजल के बड़े केन मे अंग्रेजी शराब ले कर जा रहा है। पुलिस को देख युवक भागने लगा। तब पुलिस ने लगभग आधा किलो मीटर खदेड़ कर तस्कर को धर दबोचा। थानाध्यक्ष ललन कुमार ने बताया की अनेक ब्रांड की अंग्रेजी शराब के साथ तस्कर को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। गिरफ्तार शराब तस्कर की पहचान अनिल यादव नरकटियागंज थाना क्षेत्र के सीतापुर बलिया गाँव निवासी के रूप मे हुई है। पुलिस ने बताया की गिरफ्तार यूवक के बताये गए अन्य अड्डों और कारोबारियों के घर छापेमारी की जा रही है।

कोईरिया टोला दुर्गा पूजा समिति रक्सौल ने बैठक कर आगामी दुर्गा पूजा की योजना बनाई

प्रात : किरण, संवाददाता

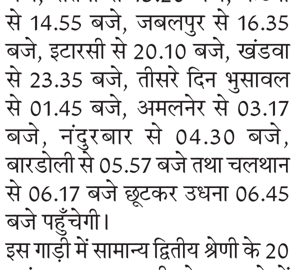

रक्सौल। रविवार को बाबा त्रिलोकी नाथ मंदिर के प्रांगण में कोइरिया टोला दुर्गा पूजा समिति के अध्यक्ष अनीश कुशवाहा की अध्यक्षता में एक सार्वजनिक बैठक का आयोजन हुआ। बैठक में यह निर्णय लिया गया है कि हर साल की भांति इस साल भी नवरात्रा के आगमन पर भव्य रुप से दुर्गा पूजा एवम् मेला का आयोजन किया जाएगा। पंडाल व मूर्ति माता वैष्णों देवी के थीम पर बनेगा। साथहि पूजा-पंडाल व मंदिर प्रांगण को साज सज्जा व लाइटिंग पर इसबार विशेष ध्यान दिया जाएगा। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि पूजा समिति के सभी सदस्य और कोइरिया टोला की पूरी जानता नवरात्रा के लिए अपना योगदान एकरूपता के साथ देगी। बैठक में पूजा समिति के सभी सदस्यगणों के साथ पूजा समिति के संरक्षक ई. जितेन्द्र कुमार, उपसभापति पति राकेश कुशवाहा, वार्ड 25 पार्षद पुत्र संजय साह, वार्ड 24 पार्षद पति छोटेलाल चौरसिया, पूर्व वार्ड पार्षद पति सुरेश चौहान, राजकिशोर राय उर्फ भगत जी, बृजकिशोर कुशवाहा, कृष्णा कुशवाहा, परमेश्वर कुशवाहा, राजन कुशवाहा, मंदिर के पुजारी ओमप्रकाश द्विवेदी, सुजीत कुशवाहा, अभिषेक कुशवाहा, सुबोध कुमार, राजू कुमार, विक्की मेहता, अमित कुमार, श्याम महतो, अनिकेत कुमार, रवि रंजन, सोनू कुमार, आकाश कुमार,अंकित कुमार,संदीप कुमार आदि लोग उपस्थित रहे।

रोटी बैंक बेतिया ट्रस्ट को विश्व धार्मिक एवं ज्ञान संगठन के 37वें स्थापना दिवस पर असाधारण सेवा के लिए सम्मानित किया गया

बेतिया(घनश्याम)। उर्दू गर्ल्स हाई स्कूल, इमामबाड़ा, काली बाग, बेतिया में आयोजित विश्व धार्मिक एवं ज्ञान संगठन (हडफ्ड) के 37वें स्थापना दिवस पर, रोटी बैंक बेतिया ट्रस्ट को समाज में उसके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया।शहर भर के विभिन्न संस्थानों के सम्मानित प्रतिनिधियों की उपस्थिति में आयोजित इस कार्यक्रम में रोटी बैंक बेतिया ट्रस्ट के असहाय लोगों को प्रतिदिन भोजन उपलब्ध कराने और विविध सामाजिक कल्याण पहलों में संलग्न होने के अटूट समर्पण को मान्यता दी गई।वंचितों की सेवा के लिए प्रतिबद्ध इस ट्रस्ट ने कई लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। यह सम्मान उनके अथक प्रयासों और निस्वार्थ सेवा का प्रमाण है।रोटी बैंक बेतिया ट्रस्ट के संस्थापक संजू गिरी जी ने कहा, हमें शहर के प्रतिष्ठित संस्थानों में पहचाने जाने पर गर्व है, और यह पुरस्कार हमारे मिशन को जारी रखने के हमारे जुनून को बढ़ाता है।मौके पर अंकित बरनवाल विनीत कुमार मनदीप राय कुश कश्यप मौजूद थे।

मढ़ौरा अनुमंडलीय सिविल कोर्ट का हुआ उद्घाटन

पटना हाई कोर्ट के न्यायमूर्ति अनिल कुमार सिंह ने फिता काट कर किया उद्घाटन

प्रात : किरण, संवाददाता

मढ़ौरा ग्रामीण। मढ़ौरा अनुमंडल सिविल कोर्ट का रविवार को शुभारंभ कर दिया गया। इस सिविल कोर्ट का विधिवत उद्घाटन पटना हाई कोर्ट के न्यायमूर्ति अनिल कुमार सिन्हा और न्यायमूर्ति पार्थ सारथी ने दीप जलाकर और फीता काटकर किया। इस मौके पर बोलते हुए पटना हाई कोर्ट के न्यायमूर्ति अनिल कुमार सिन्हा ने कहा कि समाज के सभी लोगों को सहज और सुगम तरीके से न्याय मिले इसके लिए अनुमंडल स्तर पर सिविल कोर्ट की स्थापना की जा रही है ताकि अनुमंडल क्षेत्र के लोगों को आसानी से न्याय मिल सके और उन्हें समय और अधिक समय और अधिक पैसा खर्च कर जिला मुख्यालय छपरा नहीं जाना पड़े। मढ़ौरा कोर्ट के लिए भवन निर्माण का कार्य पाइपलाइन में है जिसे जल्द पूरी करने की कोशिश की जाएगी । धन्यवाद ज्ञापन फैमिली कोर्ट के प्रिंसीपल जज दीपक कुमार और कार्यक्रम का संचालन छपरा की न्यायिक पदाधिकारी पायल मिश्रा ने किया। इस मौके पर अतिथियों द्वारा अनुमंडल कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण भी किया गया।इस मौके पर जिला एवं सत्र न्यायाधीश पुनीत कुमार गर्ग की टीम में छपरा के प्रिंसिपल जज फैमिली कोर्ट दीपक कुमार,एडीजे वन नीरज कुमार,एडीजे सुशील कुमार त्रिपाठी,एडीजे प्रभात कुमार श्रीवास्तव,एडीजे अनुराग त्रिपाठी, एडीजे प्रीतम रतन, एडीजे अतुलवीर सिंह, एडीजे दीपचंद पांडेय,सीजेएम जिगर साह,डीएलएसए सेक्रेटरी धर्मेंद्र पांडेय,सोनपुर मुन्सिफ रवि रंजन,मढ़ौरा कोर्ट के नव नियुक्त सब जज प्रदीप चन्द्रा और मुन्सिफ बादल गुप्ता के अलावा डीएम,एसपी, एडीएम, मढ़ौरा एसडीओ डॉक्टर प्रेरणा सिंह, डीएसपी नरेश पासवान, डीसीएलआर, पीजीआरओ,नगर के ईओ,सीओ सहित अन्य पदाधिकारी मौजूद थे।

इंडो नेपाल सीमावर्ती क्षेत्र के गरीब व कुपोषित लोगों के बीच एसएसबी ने वितरण किया पौष्टिक आहार

प्रात : किरण, संवाददाता

बगहा। नसीम खान क्या रविवार को बगहा के वाल्मीकिनगर थाना क्षेत्र स्थित भेड़ियारी के समीप रहुआ टोला स्थित प्राथमिक विद्यालय परिसर में इंडो नेपाल सीमावर्ती गांवों चकदहवा,झंडू टोला,बिन टोला, कानी टोला के गरीब व कुपोषित परिवारों को 21वीं बटालियन बगहा के कार्यवाहक कमांडेंट अश्वनी कुमार के पहल पर कुमार फाउंडेशन टीम के सौजन्य से प्राप्त पौष्टिक आहार का वितरण किया गया ।उपरोक्त गांव के परिवारों की स्वास्थ्य की जांच भी की गई।इसके लिए 21 वीं बटालियन के तरफ से निःशुल्क मानव चिकित्सा शिविर (एमसीए) का भी आयोजन किया गया,एवं जनीशक्ति फाउंडेशन के सहयोग से हरनाटांड के शारदा हॉस्पिटल मानव चिकित्सा शिविर का भी आयोजन किया गया। बतादें की इस इलाके में प्रत्येक वर्ष अनेक परिवार बाढ़ से प्रभावित होते हैं जिससे गांवों में अनेक प्रकार की बिमारियां फैलती है तत्पश्चात ग्रामवासियों व बच्चों के स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है ।मानव चिकित्सा शिविर के द्वारा गरीब परिवारों के स्वास्थ को उत्तम बनाने की कोशिश की गई।न्यूट्रिमिक्स फूड,पौष्टिक आहार के वितरण का उद्देश्य यह है कि इस क्षेत्र के लोगों का स्वास्थ्य बेहतर रहे तथा अन्य बीमारियों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता का विकास हो सके। बतातें चलें कि उपरोक्त गांवों के लगभग 250 सीमावर्ती गरीब परिवारों को पौष्टिक आहार वितरण किया गया। इस मौके पर श्रीमती लक्ष्मी खत्री (जनीशक्ति फाउंडेशन),डा.उमेश कुमार गुप्ता एम.डी. फिजिशियन, शुगर, छाती एवं नस रोग विशेषज्ञ),शारदा हॉस्पिटल हरनाटांड़,मोहित सिंह (सहायक कमांडेंट) 21वीं एसएसबी वाहिनी बगहा, डा.नवनीत कौर (सहायक कमांडेंट/ चिकित्सा) 65वीं वाहिनी एसएसबी बगहा, निरीक्षक राजेंद्र सिंह, उप निरीक्षक मोती लाल , उप निरीक्षक (महिला) निधि पाल एवम अन्य सुरक्षाकर्मी मौजूद रहे।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran
www.pratahkiran.com

राष्ट्रीय दैनिक
प्रातः किरण
पटना, सोमवार, 26 अगस्त, 2024

ज्ञान ज्योति आवासीय विद्यालय में जन्माष्टमी की धूम तथा सांस्कृतिक प्रस्तुति ने रचा भावपूर्ण वातावरण

प्रात : किरण संवाददाता

आराःजन्माष्टमी मनाने और इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत की परम्परा को कायम रखते हुए स्थानीय ज्ञान ज्योति आवासीय विद्यालय में एक अतिसुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें प्री नर्सरी, नर्सरी, केजी एवं कक्षा एक से तीन तक के छात्र छात्राओं ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरूआत पूजा अर्चना से हुई जिसमें सुसज्जित थाल में सजे दीप से श्री कृष्ण की आरती हुई। ज्ञान ज्योति के निदेशक डॉ. आदित्य विजय जैन के साथ साथ स्कूल की प्राचार्या श्रीमती सीपी जैन ने पूजा अर्चना की। विद्यालय के प्रत्येक सदस्यों ने अराधना में भाग लिया। प्रसाद वितरण के साथ सारा वातावरण आनंदमय हो गया। माखन का प्रसाद वितरण आज के इस कार्यक्रम की विशेषता रही। माखन प्रसाद में पाकर सभी उपस्थित लोगों ने स्वयं में श्री कृष्ण के मौजूद होने जैसा महसूस किया। प्रांगण में छोटे छोटे नन्हे नन्हे बच्चे भगवा- श्री कृष्ण और राधा बनकर सबका मन मोह रहे थे। इस रूप में इन नन्हे नन्हे बच्चों ने स्कूल स्टेज पर जो नृत्य लीला दिखलायी उसमें कालिया मर्दन नृत्य प्रस्तुति अद्भुत रही। आज हमारे बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़ कर रखना हमारे लिए अत्यंत आवश्यक है। प्राचार्या डॉ. सीपी जैन ने भी नई शिक्षा नीति दो शून्य दो शून्य में निर्धारित मापदंडों में से एक अपनी संस्कृति को पहचानने हेतु बच्चों को प्रोत्साहित्य करने की बात कही। बच्चों के मनमोहक रूप और खूबसूरत परिधानों ने हमारी सनातन संस्कृति को प्रत्यक्ष सामने लाकर खड़ा कर दिया। ज्ञान ज्योति के इन अद्वितीय प्रतिभावान बच्चों में जिस संस्कार और कार्यशैली का बीजारोपण स्कूल कर रहा है वह अत्यंत सराहनीय एवं अनुकरणीय है। इन नन्हे बच्चों को स्टेज पर उतारने और अपना सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करवाने में विद्यालय की शिक्षिकाओं और शिक्षकों की जितनी भूमिका रही है उससे कहीं अधिक भूमिका इन बच्चों के अभिभावकों की रही जिन्होंने बच्चों को इतने सुंदर ढंग से सजाया और संवारा तथा राधा- कृष्ण, यशोदा, देवकी, नंद बाबा आदि का रूप सज्जा कर आज के इस कार्यक्रम में चार चाँद लगाया। हर्षोल्लास के साथ कार्यक्रम का संचालन हुआ जिसमें अहम योगदान सांस्कृतिक कार्यक्रम निर्देशिका सुश्री जिनवाणी का रहा जिनके निर्देशन में कार्यक्रम हुआ। इस कार्यक्रम को स्कूल के सभी बच्चों ने देखा और आनंद लिया। जिन शिक्षक और शिक्षिकाओं ने रूप सज्जा, मंच सज्जा और बच्चों को तैयार कर कार्यक्रम को सफल बनाने में सक्रिय योगदान दिया उनमें प्रमुख हैं संगीता, अनुष्का, श्वेता, आशु, गुड़िया, रेशमी, बिंदा, राकेश कुमार पाठक, अमित कुमार वर्मा आदि। मंच संचालन कुमारी संगीता ने किया तथा विद्यालय में उपस्थित सभी बच्चों के ललाट को तिलक से सुशोभित किया अर्पणा एवं ज्योति ने। सम्पूर्ण कार्यक्रम का सफल संचालन किया सांस्कृतिक कार्यक्रम की संयोजिका सुश्री जिनवाणी जैन ने। जिनवानी जैन ने ही धन्यवाद ज्ञापन भी किया। जिन बच्चों ने रूप सज्जा और सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया उनके नाम हैं, वीरांश वीरकर, समृद्धि सरावगी, अग्रिमा सरावगी, ग्रीसी अग्रवाल, आनवी, आरोही, निर्भय, सनाया, प्रवीण, मिष्टी, रिद्धिमन इत्यादि।

पेंशन स्कीम की घोषणा कर्मचारी यूनियन की बड़ी जीत

● ओपन टू ऑल के लिए संघर्ष जारी रहेगा -ईसीआरकेयू

आज ईस्ट सेन्ट्रल रेलवे कर्मचारी यूनियन रोहतास जिले के डेहरी शाखा ने केंद्र सरकार द्वारा घोषित यूनिफाइड पेंशन स्कीम का स्वागत करते हुए जश्न मनाया और इसे ऑल इंडिया रेलवे मेंस फेडरेशन एवं ईस्ट सेन्ट्रल रेलवे कर्मचारी यूनियन की संघर्षों की सबसे बड़ी जीत बताया। इस अवसर पर ईस्ट सेंट्रल रेलवे कर्मचारी यूनियन के अध्यक्ष वीरेंद्र पासवान ने कहा कि पेंशन स्कीम लागू करने के लिए हमारे यूनियन ने सैकड़ो बार आंदोलन किया, धरना दिए तथा दो दिवसीय भूख हड़ताल भी की जिसके दबाव में आकर हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने हमारे फेडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री शिव गोपाल मिश्रा सहित अन्य श्रमिक संगठनों के साथ चौबीस अगस्त को वार्ता की,जिसके बाद केंद्र सरकार ने यूनिफाइड पेंशन स्कीम लागू करने की घोषणा की। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है की यह यूनिफाइड पेंशन स्कीम पुरानी पेंशन स्कीम की तरह ही है बस कुछ राजनीतिक कारणों से भले ही इसका नाम बदलकर ओपीएस की जगह यूपीएस कर दिया गया है लेकिन इसमें मिलने वाली लगभग निन्यानवे प्रतिशत सुविधाएं पुरानी पेंशन योजना की तरह ही है।

वीरेंद्र पासवान ने कहा कि डेहरी, सासाराम, बिक्रमगंज, भभुआ, औरंगाबाद सेक्शन सहित इस डीडीयू रेल मंडल के तकरीबन चौदह हजार तथा देश के तकरीबन 14 लाख रेल कर्मियों को सीधे फायदा होगा। पहले 35 वर्ष की सेवा पर पूर्ण पेंशन मिलती थी लेकिन हमारे फेडरेशन व यूनियन के प्रयास से अब 25 वर्ष की ही सेवा पर पूर्ण पेंशन मिलेगी।

उन्होंने कहा कि पेंशन स्कीम की लड़ाई की तरह ही ट्रैकमेंटेनर के लिए ओपन टू आल उसके जैसे मुद्दे एवं रेलकर्मियों के अन्य विभिन्न बुनियादी सुविधाओं के लिए फेडरेशन एवं ईस्ट सेन्ट्रल रेलवे कर्मचारी यूनियन की लड़ाई जारी रहेगी और इस संघर्ष में भी श्रमिकों की एकता के बल पर सरकार को घुटने टेकने पर मजबूर कर देंगे और हर हाल में सरकार को ओपन टू आल जैसे मुद्दों पर यूनियन की बात माननी पड़ेगी।

जश्न मनाने वाले में इसीआरकेयू के एसपी सिंह,अभय वात्स्यान, संतोष कुमार सिंह,विजय बहादुर, रंजन तिवारी,विजय गुप्ता ,मनीष सचिन पांडेय,राजेश कुमार, मुकेश यादव, धर्मेन्द्र सिंह, हरेंद्र सिंह, सुमित कुमार,संजय कुमार, प्रमोद कुमार, ज्योति कुमार, धर्मेन्द्र कुमार, जीतेन्द्र कुमार,सुरसेन पासवान,रमुन साह, विकास कुमार, शैलेन्द्र कुमार,अनीता कुमारी,ओम प्रकाश गुप्ता, सुदामा साव, मनोज कुमार, नीता कुमारी,मिथिलेश कुमार सिंह, कुणाल किशोर, अरूण बिहारी पंकज, हरेंद्र कुमार, रमेश चन्द्र, रामायण राय,प्रफुल्ल यादव,नवीन मिश्रा, अनिल पासवान, सुरेन्द्र सिंह, श्याम सुंदर यादव, संजय मंडल सहित बड़ी संख्या में सभी विभागों के रेलकर्मी शामिल थे।

कोइलवर में खुला होटल अतिथि रेस्टोरेंट

आरा। जिले के कोइलवर में रविवार को शहीद कपिलदेव चौक के समीप होटल अतिथि रेस्टोरेंट एंड मैरिज हॉल का उद्घाटन किया गया। इस मौके पर चन्देश्वर सिंह ने फीता काटकर होटल का उद्घाटन किया। उद्घाटन के मौके पर होटल के प्रोपराइटर अभिषेक और अरविंद कुमार ने बताया कि होटल अतिथि में आने वाले आगंतुकों के लिए ठहरने के लिए सस्ते दर पर उच्च मानक का भोजन एवं आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित ठहरने के लिए सस्ते दर पर कोईलवर का एकमात्र होटल में एसी एवं नॉन एसी कमरा उपलब्ध है। इस मौके पर आए सैकड़ों की संख्या अतिथियों के बीच प्रसाद स्वरूप मिस्ठान वितरित किया गया। मौके पर नगर पंचायत कोइलवर के अध्यक्ष सरताज आलम, भाजपा के नगर मंडल अध्यक्ष राकेश शर्मा,दीपू सिंह,अंचल,दीपक,रंजन,नीरज समेत कई लोग उपस्थित रहे।

बेनीपट्टी सब जेल का जिला जज ने किया निरीक्षण दिए कई निर्देश

मधुबनी

नई दिल्ली के निर्देश के आलोक में मधुबनी के जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह जिला विधिक सेवा प्राधिकार के अध्यक्ष अनामिका टीने बेनीपट्टी अनुमंडलीय उपकारा का निरीक्षण किये है। जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने सब जेल में बंदियो के वार्ड शौचालय अस्पताल महिला वार्ड आदि का निरीक्षण कर जेल अधिकारियो से आवश्यक जानकारी लिए और उन्हे जरूरी निर्देश भी दिए साथ ही बंदियो को मिलने वाला नाश्ता खाना पानी आदि का निरीक्षण किये। डाइट के हिसाब से शेड्यूल कैसा है शेड्यूल के हिसाब से बंदियों को खाना दिया जा रहा है कि नहीं इस संबंध में भी उन्होंने विस्तृत जानकारी बंदियो एवं जेल अधिकारियों से लीएं। निरीक्षण के दौरान जिला जज के द्वारा बंदियो के बीच जाकर जेल प्रशासन की ओर से बंदियो केदी जाने वाली मूलभूत सुविधाओ के बारे में पूछताछ भी कीया गया। जिला जज के द्वारा जेल में चल रहे विधिक सहायता केंद्र का भी निरीक्षण किये तथा विधिक सहायता केंद्र में बंदियो के लिए दिए जाने वाले विधिक सहायता के बारे में जानकारी जेल प्रशासन से भी लिया गया ।जिला जज ने निरीक्षण के क्रम में जेल अधिकारियो को बंदियो के हित में कई आवश्यक निर्देश दिए। जिला जज के निरीक्षण के मौके पर सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकार मधुबनी के गौरव कुमार बेनीपट्टी अनुमंडलीय व्यवहार न्यायालय के अपर मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी सह अध्यक्ष अनुमंडल विधिक सेवा समिति बेनीपट्टी रंजीत कुमार सोनू सब जेल अधीक्षक प्रभारी जेल उपाधीक्षक रवि रंजन पासवान लोक अदालत प्रभारी मो. सलमान आदि उपस्थित थे।

आकांक्षी प्रखंड कार्यक्रम के अंतर्गत शाहपुर ने पुर देश भर में 8 वां स्थान प्राप्त किया

प्रात : किरण संवाददाता

भोजपुरःउप विकास आयुक्त भोजपुर ने बताया कि आकांक्षी प्रखंड योजना माननीय प्रधानमंत्री जी की महत्वाकांक्षी योजनाओं में से एक है इसके योजना के अंतर्गत भारत वर्ष में कुल 500 आकांक्षी प्रखंड का चयन किया गया है। इस कार्यक्रम में बिहार के 61 प्रखंड और भोजपुर के 3 शामिल है।

आकांक्षी प्रखंड कार्यक्रम को जानने के लिए नीति आयोग द्वारा राष्ट्रीय स्तर की बैठक में जिला के तीनों प्रखंडों के कई पदाधिकारी और जन प्रतिनितियों की एक टीम भेजी गई थी उसके बाद कार्यक्रम को कार्यान्वयन को लेकर कई बैठक जिले स्तर पर किया गया

जिला पदाधिकारी भोजपुर के मार्गदर्शन और नेतृत्व में आकांक्षी प्रखंड कार्यक्रम योजना की पूरी रूप रेखा तैयार कर कार्य शुरू किया गया । जिसका परिणाम यह है कि नीति आयोग द्वारा जारी रैंकिंग में शाहपुर प्रखंड पूरे देश में 8 वे स्थान तथा पूर्वी भारत में 3 रे स्थान पर है ! बिहिया पूर्वी भारत में 10वे और देश भर में 29 वे स्थान पर है । आकांक्षी प्रखंड कार्यक्रम योजना यह एक विकास पहल है जिसका उद्देश्य उन क्षेत्रों के प्रदर्शन में सुधार करना है जो विभिन्न विकास मानकों पर पिछड़ रहे हैं ।आकांक्षी ब्लॉक कार्यक्रम के अंतर्गत निम्नलिखित केंद्रीय रणनीति बनाई गई हैः प्रमुख सामाजिक-आर्थिक संकेतकों की सुदृढ़ निगरानी : ब्लॉकों की निगरानी 39 प्रमुख संकेतकों पर की जाएगी, जिन्हें प्राथमिकता वाले विषयों जैसे स्वास्थ्य और पोषण, शिक्षा, कृषि और संबद्ध सेवाएं, बुनियादी ढांचा और सामाजिक विकास के अंतर्गत पहचाना गया है।

उप विकास आयुक्त ने बताया कि सभी संकेतकों पर शाहपुर प्रखंड के पदाधिकारियों और कर्मियों ने नियोजित रूप से मेहनत किया, अच्छी टीम भावना , समन्वय एवं सामूहिक प्रयास के परिणाम स्वरूप शाहपुर प्रखंड देश भर में 8 वाँ स्थान प्राप्त कर सका ।आकांक्षी प्रखंड कार्यक्रम में स्वास्थ्य सुविधाओं यथा प्रसूता महिला, शिशु जन्म दर, बच्चों में कुपोषण आदि मानकों के सुदृढ़ीकरण पर बल दिया गया, ताकि स्वस्थ प्रखंड का निर्माण की आधारशीला रखी जा सके ।इसी प्रकार महिला को पोषण युक्त आहार देना किसानों को उन्नत खेती करना सीखना , जीविका को समूह को सशक्त बनाना आदि अन्य प्रमुखों संकेतक है । प्रखंड स्तर पर प्रखंड विकास पदाधिकारी के नेतृत्व में सीडीपीओ, प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी , प्रखंड कृषि पदाधिकारी,बीपीएम जीविका आदि पदाधिकारियों का आपसी समन्वय , टीम भावना के परिणाम स्वरूप भोजपुर जिला आकांक्षी प्रखंड कार्यक्रम में अग्रणी स्थान प्राप्त कर

वार्ड सदस्य महासंघ का जगदीशपुर में किया गया बैठक

उपमुखिया व वार्ड सदस्यों ने अपने हक अधिकार की लड़ाई लड़ने के लिए किया आवाहन

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

भोजपुर :जगदीशपुर वार्ड सदस्य महासंघ बिडिओ एवं बिपिआरो से करेगा वार्ता उपस्थित रहेगे जगदीशपुर के बीसो पंचायत के उपमुखिया बता दे कि जगदीशपुर सागर पैलेस में वार्ड संघ की बैठक संपन्न की गई जिसकी अध्यक्षता जगदीशपुर प्रखण्ड अध्यक्ष नरेंद्र प्रताप सिंह ने किया संचालन अरूण सिंह ने किया वही बैठक में जिलाध्यक्ष शिवसागर सिंह कुशवाहा की गरिमामयी उपस्थिति रही सभा को संबोधित करते हुए नरेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि वार्ड संघ 2016 से सक्रिय रूप से अपने हक अधिकार का लडाई लडने का काम किया। वही धरना प्रदर्शन के दौरान 108 वार्ड सदस्यों को बेउर जेल में28 दिन बेगर कोई गुनाह के रखा गया। उसी आन्दोलन का नतीजा था कि सरकार द्वारा सात निश्चय नलजल नली गली का काम दिया गया मगर सरकार ने एक भुल कर दी वो कि वार्ड के खाते में स्वतंत्र राशि नही देकर बिचौलियों के खाते में दी गई जिसका फलस्वरूप यह मिला कि पदाधिकारियों ठिकदारो प्रदान जी और पंचायत सचिवों ने एकमत होकर वार्ड सदस्यो के हक अधिकार को कमिशन का नाम देकर लुट घसोट कर लिया गया और वार्ड सदस्यो को मोहरा बना दिया गया वही सरकार ने भी कोई सुद बुध्द नही ली वही प्रखण्ड अध्यक्ष ने जगदीशपुर बिसो पंचायत के उपमुखिया व वार्ड सदस्यो को अपने हक अधिकार की लड़ाई लड़ने के लिए आवाहन करते हुए एक कदम संघर्ष की ओर इशारा करते हुए 28 अगस्त को जगदीशपुर प्रखण्ड परिसर में 11 बजे ससमय आकर बिडिओ बिपिआरो से अपने सम्मान के लिए वार्ता में सम्मिलित होने का आग्रह किया गया।। बैठक में उपस्थित जिलाध्यक्ष शिवसागर सिंह कुशवाहा, उपमुखिया हरदिया मुन्ना यादव, उपमुखिया दावा धनजी कुमार, उतरवारी उपमुखिया रामजी सिंह, उपमुखिया पूर्वी आयर महेश चौधरी, उपमुखिया दलिपुर कमलेश कुमार,प्रखण्ड संगठन प्रभारी मंडलेश्वर यादव, उपमुखिया चकवा धनजी सिंह, पू उपमुखिया टूटू उर्फ निर्मल यादव,उपमुखिया हेतमपुर शम्भू यादव, उपमुखिया ककिला अवधेश राम, उपमुखिया बिचला अनिल सिंह, उपमुखिया हरिगाव सुनिल सिंह, आशानन्द सिंह, उदय किशोर सिंह, परसिया उपमुखिया धर्मेन्द्र कुमार, उपमुखिया कौरा बबन साह, उपमुखिया बसावना अकबर अंसारी, इत्यादि सामिल रहे

पंचायतों मे शौचालय विहीन परिवारों का आकलन जीविका की टीम द्वारा किया जायगा

आराः स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान अंतर्गत पंचायतों मे शौचालय विहीन परिवारों का आकलन जीविका की टीम द्वारा किया जायगा। इसके लिए राज्य कार्यालय से प्राप्त पत्र के आलोक मे जिला स्तर पर सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी, सभी प्रखंड समन्वयक के सभी प्रखंड परियोजना पदाधिकारी जीविका के साथ विधा भवन के सभागार में बैठक की गई। निदेशक ऊ्ब्ब्अ ने बताया के सभी पंचायतों में जीविका के टीम द्वारा छुट गए शौचालय विहीन परिवारों का सूची 31 अगस्त तक तैयार किया जाना है ।उसके उपरांत 5% घरों का सत्यापन जीविका के इढट द्वारा 10% घरों का सत्यापन इ्ळ इउ प्रखंड टीम द्वारा किया जाएगा। छरइअ से प्राप्त अस्त्रस्त्र पर इसकी प्रविष्टि की जायगी। उसके उपरांत छूटे हुए परिवारों को उत्प्रेरित कर शौचालय का निर्माण लाभार्थियों द्वारा किया जायगा। ताकि सम्पूर्ण जिले मे शत प्रतिशत शौचालय का आच्छादन किया जा सके। इस मौके पर मनोरंजन कुमार पांडेय निदेशक ऊ्ब्ब्अ , क्रांति कुमार सहायक परियोजना अधिकारी, रंजय बैठा, जिला समन्वयक, विनय कुमार, भीम कुमार जिला सलाहकार क्ळ्उ , उ्ढट जीविका वरुण कुमार, सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी, प्रखंड समन्वयक, इढट जीविका उपस्थित थे।

कॉलबिहार प्रदेश कार्यकारिणी की सभा बैठक संपन्न

प्रात : किरण संवाददाता

पटनाःअखिल भारतीय गोस्वामी सभा - बिहार का, पटना स्थित बारकोश चाइनीस रेस्टोरेंट , गांधी मैदान, मे बिहार प्रदेश कार्यकारिणी की सभा संपन्न हुई । उक्त सभा का सभापतितव डाक्टर अशोक भारती के द्वारा किया गया , उक्त सभा में राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री प्रेम नारायण गिरि व राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुबोध गिरि, राष्ट्रीय सचिव राजेश पुरी, बिहार के युवाओं के धड़कन कमलेश कांत गिरि , प्रभात पुरी जी, प्रोफेसर विधानचंद्र भारती विजय भारती रवि पुरि , आनंद गिरि व अनेकों समाज बांधव सभा में उपस्थित थे , आज गोस्वामी समाज के उत्थान व आगामी दिनों परिचालना के लिए बिहार प्रदेश कमिटी का गठन , पटना में भवन निर्माण व कार्यालय का गठन आदि विषयों पर चर्चा हुई ।व शपथ ग्रहण किया गया कि आगामी दिनों में पूरे बिहार में घूम घूम कर समाज को जागरूक व इकठा करने का कार्य किया जायेगा।

भाकपा माले ने मांगों को लेकर किया धरना प्रदर्शन

करगहर (रोहतास) भाकपा माले द्वारा प्रखंड अंचल कार्यालय पर एक दिवसीय धरना प्रदर्शन किया गया। धरना की अध्यक्षता कोचस करगहर एरिया कमिटी सचिव कामरेड चंद्रधन सिंह किया। उन्होंने कहा कि दो दिन का धरना हक दो वादा निभाओ सिर्फ दो नारों पर है लोगों को रहने व जीने का मौलिक अधिकार है। लेकिन डबल इंजन की सरकार हक देने की बजाए गरीबों को रहने जीने का भी अधिकार छीन रही है। सरकार राज्यों में बरसों से बसे गरीबों को उजाड़ने का काम कर रही है। राज्य सरकार द्वारा बिना बसाए गरीबों को उजाड़ना नहीं है। लेकिन उन्हें सरकार उजाड़ रही है। सरकार कहती है कि राज्य में 95 लाख गरीब है सरकार द्वारा घोषित प्रत्येक व्यक्ति को 2 लाख रुपए दिए जाएंगे। इन्हीं सवालों को लेकर प्रखंड विकास पदाधिकारी सह अंचल अधिकारी को पांच सूत्री मांगों को लेकर ज्ञापन सौपा गया। मांग-- सभी 95 लाख महा गरीब परिवार को एक मुस्त 200000 रुपए देना होगा। गरीब परिवारों को वार्षिक आय 70000 रुपए से नीचे प्रमाण पत्र बनाना होगा। गरीबों पारिवारो को 5 डि. जमीन देना होगा। उन्हें पक्का मकान की गारंटी करना होगा। मनरेगा में सभी गरीब परिवारों को 200 दिन काम और दैनिक मजदूरी देनी होगी। सभी वृद्ध विधवा विकलांग को 3000 प्रतिमाह पेंशन देने की मांग किया। मौके पर परमानंद ताती लालमोहर राम श्री भगवान राम बबन सिंह राजू राम लव पासवान रंग बहादुर सिंह रामजी राम सुनील पासवान सोनमती देवी पुष्पा देवी शोभा देवी परमातो कुवंर के अलावे सैकड़ों भाजपा माले कार्यकर्ता उपस्थित रहें।

जिला पार्षद धनंजय यादव ने हेल्थ वेल्नेंश सेंटरों पर स्वास्थ्य सुविधायें उपलब्ध करानें सेंटरों को अतिक्रमण मुक्त करानें के लिये मुख्यमंत्री से लगायी गुहार

भोजपुरःआरा सदर पुर्वी के जिला पार्षद सह प्रदेश महासचिव युवा राजद धनंजय यादव नें आरा सदर प्रखंड में स्थित सभी 22 हेल्थ वेलनेस सेंटरों सहित जिला के समस्त हेल्थ सेंटरों पर स्वास्थ्य सुविधायें मुहैया करानें के लिये मुख्यमंत्री से गुहार लगाई है ।

इस बाबत उन्होंनें बताया कि अकेले आरा सदर प्रखंड में पुर्व से ही स्थित बाईस स्वास्थ्य उपकेंद्रों को हेल्थ वेल्नेंस सेंटरों के रुप में परिवर्तित कर दिया गया है परंतु एक भी सेंटर पर बिहार सरकार द्वारा निर्देशित बारह प्रकार की स्वास्थ्य सुविधायें जैसे मातृ एवम शिशु स्वास्थ्य, गैर संक्रामक बिमारीयां आंख ,नाक से संबंधित बिमारीयां, हिमोग्लोबिन, हेपेटाईटीस ,मलेरिया , शुगर और कैंसर की समय -समय पर स्क्रिनिंग आम नागरिकों के लिये उपलब्ध नहीं कराया जा रहा है । जो कि घोर चिंता और आश्चर्य का विषय है जबकि सभी सेंटरों के लिये आवश्यक स्वास्थ्य कर्मियों की कोई कमी नहीं है । ऐसी स्थिति में हेल्थ सेंटर कागज और फाईलों तक ही सिमट कर रह गया है । धरातल पर इनका कोई औचित्य नहीं रह गया है ।

इसके साथ ही साथ जिला के विभिन्न प्रखंडों के विभिन्न गांवों में अतिक्रमणकारीयों के द्वारा सेंटरों का अतिक्रमण भी कर लिया गया है । जिसे अतिक्रमण मुक्त करानें के लिये सिविल सर्जन भोजपुर के द्वारा संबंधित अंचलाधिकारीयों को निर्देश भी दिया गया है लेकिन अंचलाधिकारीयो के द्वारा इस संबंध में किसी तरह की कार्रवाई नहीं की जा रही है । सेंटरों को अतिक्रमण मुक्त करानें की मांग भी जिला पार्षद ने मुख्यमंत्री से किया है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर ज्ञान पब्लिक स्कूल में प्रतियोगिता कार्यक्रम का आयोजन

नावानगर (बक्सर) प्रखंड क्षेत्र के डुमरांव रोड़ अवस्थित में ज्ञान ज्योति पब्लिक स्कूल रूपसागर के प्रांगण में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के शुभअवसर पर श्रीकृष्ण राधा बाल रूप सज्जा प्रतियोगिता तथा मटका फोड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

जिसमे वर्ग नर्सरी से प्रथम तक के छात्र छात्राओं ने बाल गोपाल एवं राधा के रूप में की भाग लिया ।वही दूसरी तरफ मटका फोड़ प्रतियोगिता का भी आयोजन वर्ग तीन से वर्ग 6 तक के विद्यार्थियों द्वारा किया गया। जिसको लेकर विद्यालय कृष्णमय रहा ।इस मौके पर उनके अभिभावक,शिक्षक शिक्षिकाएं एवम अन्य उपस्थित रहे। इससे पहले रूप सज्जा प्रतियोगिता व मटका फोड़ प्रतियोगिता का उद्घाटन विद्यालय निदेशक दीपक कुमार द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया ।जहां विद्यालय निदेशक दीपक कुमार ने अपने संबोधन में भगवान श्री कृष्ण के द्वारा किए गए कार्यों की चर्चा की तथा छात्र छात्राओं को जीवन में सफलता के लिए कार्य करने की संस्कृति को अपनाने पर बल दिया। विद्यालय के निदेशक ने प्रतियोगिता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रतियोगिता से बच्चों में छिपी प्रतिभा जागृत होती है।

डीएम ने कहा किसी भी परिस्थिति में विद्यालयों में मध्याह्न भोजन बंद नहीं रहना चाहिए

मधुबनी

जिला पदाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा ने शनिवार की देर शाम में समाहरणालय स्थित सभाकक्ष में शिक्षा विभाग की समीक्षा बैठक में उपस्थित अधिकारियों को कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए। जिलधिकारी ने कस्तुरबा कन्या विद्यालयो की समीक्षा के क्रम में फुलपरास, बाबूबरहि, झंझारपुर, राजनगर के बीईओ से कस्तुरबा विद्यालयो में लक्ष्य के विरुद कम नामांकन को लेकर अप्रसन्नता व्यक्त किया। उन्होंने एक सप्ताह के अंदर कस्तुरबा विद्यालयो में लक्ष्य के विरुद्ध नामांकन सुनिश्चित करवाने का निर्देश दिया ।उन्होंने उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिया कि विद्यालयो में शतप्रतिशत छात्रों एवं शिक्षकों की उपस्थिति के साथ साथ विद्यालयो में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर विशेष रूप से फोकस करें। हमारे बच्चे हमरा कल हैं। इसलिए उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना हम सभी का दायित्व है। जिलधिकारी ने निर्देश दिया कि सभी बीईओ निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप शत प्रतिशत विद्यालयो का निरीक्षण कर प्रत्येक सप्ताह निरीक्षण रिपोर्ट ई शिक्षा कोष एप पर अपलोड करे ।उन्होंने निर्देश दिया कि निरीक्षण के दौरान विद्यालय में शौचालय की स्थिति, पोशाक छात्रवृति, मध्यान भोजन की गुणवत्ता, पठन पाठन में गुणवत्ता सहित सभी मामलों का अनुश्रवण किया जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि अनाधिकृत रूप से अनुपस्थित शिक्षक से स्पष्टीकरण पूछते हुए उनका उक्त दिवस का वेतन रोका जाए ।जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि अधिकारियों द्वारा निरीक्षण किए जाने से के क्रम में न केवल कमियों की तलाश की जाए, बल्कि उन समस्याओं के निदान के लिए आवश्यक कदम भी उठाए जाएं। ताकि, निरीक्षण को प्रभावी बनाते हुए सकारात्मक परिणाम हासिल किया जा सकें। उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी भी परिस्थिति में विद्यालयों में मध्याह्न भोजन बंद नहीं रहना चाहिए। विद्यालय शिक्षा समिति का गठन न होना या रसोई गैस की अनुपलब्धता जैसे कारण स्वीकार नहीं किए जाएंगे ।उन्होंने जिले में ऐसे सभी विद्यालयों जिसके भवन जर्जर हैं और उनमें पठन पाठन से बच्चों के हित का नुकसान हो रहा है,ऐसे विद्यालयो की अविलम्ब सूची उपलब्ध करवाना सुनिश्चित करे ताकि शीघ्र अग्रेतर करवाई किया जा सके ।जिला पदाधिकारी द्वारा स्टूडेंट एनरोलमेंट मॉड्यूलअसैनिक कार्यो की प्रगति विद्यालयों में विद्युतीकरण माध्यमिक विद्यालय विहीन पंचायतों में निर्माण, जल जीवन हरियाली सीडब्ल्यूजेसी एमजेसी के मामले, टेक्स्ट बुक, प्रवेश उत्सव जैसे अन्य विषयों की समीक्षा भी की गई ।उक्त बैठक में डीपीआरओ परिमल कुमार,जिला शिक्षा पदाधिकारी जावेद आलम, सभी जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, सहित जिले के सभी प्रखंडों के प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

एक शताब्दी से अनवरत कायम है भोजपुर में संगीत परम्परा

प्रात : किरण संवाददाता

आराःजब भी कृष्ण जन्माष्टमी का अवसर आता है तो आरा महाजन टोली स्थित ठाकुरबाड़ी के संगीत समारोह की खुशबू से सुगंधित होने लगता है। भोजपुर में यह विशाल संगीत परंपरा एक शताब्दी से अनवरत कायम है ।इस समारोह की शुरूआत कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर सन 1914 में स्व. बक्शी बृजविलास बिहारी एवं स्व. बक्शी कौशलेश बिहारी ने की। वर्तमान में यह परम्परा शास्त्रीय कलाओं का संरक्षण स्थल बन चुका है। छः रातों तक प्रवाहित होती है शास्त्रीय संगीत की रसधारा में एक से बढ़कर एक कला प्रस्तुतियां होती हैं ।

स्वर्णिम इतिहास ने संजोया है समारोह की महत्ता

ध्रुवपद-धमार से शुरू हुये इस संगीत समारोह की गरिमा बनाए रखने और इसे देशभर में पहचान दिलाने के लिए महान संगीत द्वारक स्व. बक्शी कुलदीप नारायण सिन्हा को हमेशा जाना जाएगा। समारोह के दौरान अक्सर श्रोता और कलाकार उन्हें याद करते रहते हैं। कुलदीप जी के दिवंगत होने के बाद इनके पुत्र स्व. बक्शी अवधेश कुमार श्रीवास्तव व पुत्रवधू शास्त्रीय विदुषी बिमला देवी ने इस परम्परा का निर्वहन किया ' अब यह जिम्मेदारी उनके पौत्र चर्चित कथक नर्तक बक्शी विकास निभा रहे हैं। इस तरह चार पीढ़िया संगीत सेवा में अपना सर्वस्व समर्पित किया है ।

भारत रत्न शहनाई वादक बिस्मिल्लाह खां भी कर चुके हैं शिरकत

देश के सर्वोच्च सम्मान से विभूषित कई विश्वविख्यात कलाकारों में भारत रत्न शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खां, पद्मभूषण वीजी. जोग, तबला सम्राट पंडित कंठे महाराज, तबला सम्राट पंडित गामा महाराज, पद्मविभूषण पंडित किशन महाराज, पद्मभूषण पंडित सामता प्रसाद उर्फ गोदई महाराज, पंडित रंगनाथ मिश्र, पद्मविभूषण विदुषी गिरजा देवी पद्मश्री पंडित सियाराम तिवारी, पंडित रामचतुर मलिक, पद्मभूषण एन.राजम, संगीत, पद्मभूषण बेगम प्रवीण सुल्ताना, नाटक अकादमी पुरस्कृत विदुषी सुनन्दा पटनायक जैसे विभूतियों ने इस आयोजन को ऐतिहासिक बनाया ।पूरी रात श्रोता संगीत की त्रिवेणी में गोते लगते हैं

इस संगीत समारोह की लोकप्रियता ने श्रोताओ को सदैव बांधे रखा। स्तरीय कार्यक्रम की रोचकता के कारण रात भर श्रोताओ की भीड़ लगी रहती थी। संगीतज्ञ भी काफी होते थे। इसलिए कार्यक्रम का समापन होते होते सुबह हो जाती थी और राग भैरवी से समापन होता था। ह्वबाजूबंद खुली-खुली जाय सावरिया ने कैसो जादू डालाह्व ठुमरी का विस्तार व तबले के साथ दरभंगा के पंडित रामदीन पाठक के खंजड़ी की लयकारी पर श्रोता झूम उठते थे। दशरथ ठाकुर के कत्थक पर पंडित रंगनाथ मिश्र के अद्भुत तबला संगति को याद करते आज भी रोमांचित हो उठते है पुराने दर्शक।

सुविख्यात व स्थानीय कलाकारों का एक मंच पर प्रदर्शन

आयोजन के सुनहरे स्मृतियों में बनारस के सितार वादक पंडित सुरेंद्र मोहन मिश्र, कलकत्ते की कत्थक नृत्यांगना चंद्रा घोष-तन्द्रा घोष , दरभंगा के पंडित रामदीन पाठक, पटियाला घराने के गायक पंडित हरी भजन सिंह, जंगली मल्लिक, ऋखेश्वर तिवारी, हिरा भगत-रामसकल पंडित, चंद्रशेखर पाठक, अखौरी नागेन्द्र नारायण सिन्हा उर्फ नंदन जी, रामविलाश ओझा, दामोदर शरण, लक्ष्मी जी, हनुमान प्रसाद उर्फ मोहन जी, सुरेंद्रचार्य जी, लक्ष्मण शाहाबादी (सभी गायक), कत्थक नर्तक दशरथ ठाकुर, राम जी पांडेय, सारंगी वादक हंसा जी, तबला वादक अम्बिका सिंह , द्वारिका सिंह, मनन जी, महावीर सिंह, अरविन्द कृष्ण, सितार वादक राजेंद्र शर्मा, दामोदर पाठक, बासुरी वादक चंद्रशेखर सिंह, सखीचंद जी का नाम प्रमुख है।

कृष्ण जन्मोत्सव संगीत समारोह का भविष्य

इस समारोह के मुख्य संयोजक गुरु बक्शी विकास बताते हैं एक ओर स्वर्णिम इतिहास है तो दूसरी ओर उसकी गरिमा बरकरार रखने का प्रयास जारी है। आज भी राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात कलाकार इस समारोह में शिरकत करते हैं । बनारस घराने के मशहुर गायक पंडित रामप्रकाश मिश्र, तबला वादक पंडित भोलानाथ मिश्र, सितार वादक पंडित ध्रुवनाथ मिश्र, घरानेदार कलाकार प्रीतम मिश्र समेत कई स्थानीय व अन्य प्रदेशों के कलावंतों द्वारा ठाकुरजी की सेवा में रागभोग लगाने की परंपरा जारी है । इस वर्ष इस समारोह का 111वां पुष्प ठाकुरजी को समर्पित होगा ।

कृष्ण जन्माष्टमी के पूर्व रूप सज्जा का किया गया प्रतियोगिता आयोजित

आरा :राजकेश्वर सिंह चुनमुन देवी सरस्वती विद्या मंदिर, सिंगही, आरा में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पूर्व रूप सज्जा की प्रतियोगिता आयोजित हुई। इस कार्यक्रम में वाटिका से लेकर विद्या मंदिर तक के भैया बहनों ने श्री कृष्ण के विभिन्न चरित्रों का अद्भुत वेश धारण कर सभी का मन मोह लिया। पूरा विद्यालय आज मानो ब्रजभूमि के भाव में जीवंत हो उठा था। बाल कन्हैया की माखन मटकी फोड़ने की शरारतें हों या फिर मैया यशोदा का मोहन को डांटने की छवि साथ ही साथ, नंद बाबा का लाड मनुहार, बाल सखा सुदामा की भूमिका के साथ साथ निधि वन में राधा रानी और गोपियों के साथ कान्हा का महाराश, सभी एक से बढ़कर एक अनोखी और अद्भुत बाल प्रस्तुति।

मुस्लिम समुदाय ने मोहर्रम के चेहलुम पर्व पर इस्लामिक के साथ महावीर झंडा एवं भगवा झंडा, तिरंगा झंडा ले जुलूस में हुए शामिल

- आपसी भाईचारा का दिया संदेश
- मोहर्रम चेहलुम पर्व पर जुलूस में लगा सारे जहां से अच्छा हिंदोस्ता हमारा
- हम बुलबुलें हैं इसकी ये गुलसिता हमारा

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। मोहर्रम चेहलुम पर्व के मौके पर गंगा-जमुनी तहजीब देखने को मिल रही है। यहां मोहर्रम चेहलुम पर के अवसर पर मुस्लिम समुदाय के लोगों ने तिरंगा झंडा अली या हुसैन के झंडे के साथ भगवा झंडा महावीर झंडा तख्ती पर लिखा हुआ सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा, हम हम बुल बुलेट हिंदुस्तान जिंदाबाद हिंदू मुस्लिम एकता जिंदाबाद के नारे से औरंगाबाद शहर में गूंज उठा। जहां हिंदू भाईचारा देखने को मिला जो औरंगाबाद डीएम श्रीकांत शास्त्री, पुलिस अधीक्षक स्वप्ना गौतम मेश्राम, सदर अनुमंडल पदाधिकारी संतान सिंह, एसडीपीओ संजय पांडे, नगर थाना अध्यक्ष उपेंद्र कुमार सिंह, नगर सर्किल इंस्पेक्टर मृत्युंजय कुमार सहित ने लोगों ने बधाई देते हुए कहा कि औरंगाबाद में सचमुच आपसी भाईचारा है जो आज तिरंगा झंडा या हुसैन झंडे के साथ हिंदू धर्म के महावीर झंडा भगवा झंडा जो देखने को मिली इससे साफ साबित होता है कि औरंगाबाद में अमन चैन आपसी भाईचारा लोग पसंद करते हैं जो आज बुधवार को देखने को मिला है

औरंगाबाद में मोहर्रम की चेहलुम जुलूस मौके पर कार्यक्रम के तहत जुलूस में शामिल लोग तिरंगा झंडा मुस्लिम समाज ने सर पर टोपी और हाथ में तिरंगा लेकर शहर में हिंदुस्तान जिंदाबाद हिंदू मुस्लिम एकता जिंदाबाद हम हैं। सब भाई भाई मोहर्रम चेहलुम के जुलूस के मौके पर निकाली। पैगाम ए इंसानियत के जिलाध्यक्ष समाजसेवी मो. शाहनवाज रहमान उर्फ सल्लू खान, पठान टोली, मोहल्ला के गोल धारी उस्ताद शाहनवाज उर्फ टीका खान, सैयद असलम उर्फ उर्फ चुना, औरंगजेब खान, अजीम खान, मोहम्मद शाहनवाज आलम, अब्दुल्ला राजा, मो. फिरोज खान, मो. नईम नियाजी, मो. बुरहान खान, मो. इमरान खान, मो. हसीब, रईस आजम खान उर्फ छोटन, पूर्व नगर परिषद नगर अध्यक्ष में हजारों की संख्या में मुस्लिम समाज के लोगों ने इस मोहर्रम चेहलुम पर के मौके पर तिरंगा झंडा लिए हुए जुलूस में शामिल होकर देशभक्ति के गीतों में हिंदुस्तान जिंदाबाद के नारा लगाने के साथ या हुसैन या अली जयकारे भी लगाए। जुलूस के मौके पर पुलिस अधिकारी एवं दंडाधिकारी भी शामिल हुए हैं। दरअसल, पूरे देश में मोहर्रम पर्व का जुलूस बाजार में निकली है मोहर्रम पूरे देश में मनाया जा रहा है। बूढ़े से लेकर बच्चों तक तिरंगा झंडा को लेकर हिंदुस्तान की एकता अखंडता को सफल बनाने के आपके भाईचारा का संदेश निकाली जा रही है। इसी के तहत औरंगाबाद शहर में मोहर्रम पर्व के मौके पर तिरंगा झंडा एवं तकिया लेकर समाजसेवी मो सल्लू खान के नेतृत्व में मोहर्रम चेहलुम पर्व पर कहा कि मदीना से कर्बला तक के सफर में हजरत इमाम हुसैन ने अमन व शांति का संदेश दिया। हर मौके पर उन्होंने यही बताया कि जंग में पहल नहीं करनी चाहिए, जंग टालने की कोशिश करनी चाहिए। बताया कि अगर पवित्र धार्मिक स्थलों में झगड़ा व खून बहने का अंदेशा हो तो उस जगह को छोड़ देना चाहिए। फिर भी इमाम हुसैन ने कभी यह नहीं कहा कि हक व सच्चाई के रास्ते से हट जाना चाहिए। उन्होंने यह संदेश दिया कि भले ही सिर कट जाए मगर जालिम का समर्थन नहीं करना चाहिए। इतिहास के पन्नों में हजरत इमाम हुसैन का हर अमल दर्ज है। सल्लू खान ने कहा कि इमाम हुसैन का कर्बला के मैदान में यह पैगाम कि अत्याचार के विरुद्ध जितनी देर में आवाज उठाओगे, उतना ज्यादा बलिदान देना पड़ेगा। तमाम लोगों के लिए मार्गदर्शक है।

राजनीति में परिवारवाद उचित नहीं

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। शहर के वार्ड संख्या 20 दिवाकर कॉलोनी श्रीकृष्ण नगर मुहल्ला स्थिति भाजपा के हसपुरा मंडल अध्यक्ष विनोद शर्मा के आवास पर भाजपा नेताओं द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मन की बात सुनी गयी। पूर्व जिलाध्यक्ष पुरुषोत्तम कुमार सिंह के नेतृत्व में भाजपा नेताओं 113वीं मन की बात को सुन पीएम की बातों की सराहना की। पूर्व जिलाध्यक्ष ने कहा कि मन की बात में पीएम ने राजनीति में परिवारवाद को घातक बताया। उन्होंने राजनीति में युवाओं को आने का आह्वान किया। कहा कि युवा राजनीति में आना चाहते हैं। लाखों युवा पंचायत स्तर के चुनाव में हिस्सा ले रहे हैं। हर घर तिरंगा है और पूरा देश तिरंगा है इस बार ये अभियान अपने चरम पर था। हमने घरों पर तिरंगा लहराते देखा-स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में तिरंगा देखा। लोगों ने अपनी दुकानों और दफ्तरों में तिरंगा फहराया, लोगों ने अपने डेस्कटॉप, मोबाइल और वाहनों पर भी तिरंगा फहराया। जम्मू-कश्मीर में 750 मीटर लंबे झंडे के साथ तिरंगा रैली निकाली गई और ये रैली दुनिया के सबसे ऊंचे चिनाब रेलवे ब्रिज पर निकाली गई। अरुणाचल प्रदेश के ईस्ट कामेंग जिले में 600 फुट लंबे तिरंगे के साथ जुलूस निकाला गया। प्रधानमंत्री असम के मोरान समुदाय के बारे चर्चा की। कहा कि बरेकुरी में मोरान समुदाय रहते हैं। गांव में ह्यहूलॉक गिब्बन रहते हैं, जिन्हें यहां होलो बंदर कहा जाता है। हूलॉक गिब्बन ने इस गांव को अपना घर बना लिया है। इस गांव के लोगों का हूलॉक गिब्बन से बहुत गहरा नाता है। गांव के लोग आज भी अपने पारंपरिक मूल्यों का पालन करते हैं। इसलिए, उन्होंने वो सारे काम किए जिससे गिब्बन के साथ उनका रिश्ता मजबूत हो। मन की बात में पीएम ने पर्यावरण को लेकर भी चर्चा की। देशवासियों से अपनी माँ के नाम पर एक पेड़ लगाने की अपील की। कहा कि पर्यावरण को बचाना जरूरी है। पीएम ने इस माह से पर्व का सीजन शुरू हो रहा है। सभी लोग प्रेम से पर्व को मनाएं। प्रेम का संदेश दे। इस मौके पर सुनील कुमार शर्मा, हसपुरा मंडल अध्यक्ष विनोद कुमार शर्मा, तीर्थ नारायण वैश्य, रघुनाथ राम, दीपक कुमार, सुनील कुमार सिंह, राजेश पांडेय, रमाकांत सिंह, अमर उज्जाला, डॉ मधेश्वर चंद्रवंशी, राहुल कुमार, शशांक शेखर आदि मौजूद थे।

कोंच में डॉ. बीडी शर्मा ने मदरसा में बांटी पाठ्य सामग्री

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

गया। मगध प्रमंडल के प्रतिष्ठित चिकित्सीय संस्थान ह्यबच्चों का अस्पताल के संस्थापक डॉ. बीडी शर्मा की तरफ से गया जिले के कोंच स्थित मदरसा तालीमुल कुरान, कोंच बाजार में पढ़ने वाले बच्चों के बीच पाठ्य सामग्री का वितरण किया गया। इसके अलावा विगत 11 अगस्त को भव्य तिरंगा यात्रा में शामिल हुए मदरसा के बच्चों में सर्टिफिकेट भी बांटी गई है। इस मौके पर डॉ. बीडी शर्मा ने कहा कि शिक्षा पर सभी लोगों का अधिकार है। पाठ्य सामग्री के अभाव कोई बच्चा शिक्षा से वंचित ना रहे। मैं एक मध्यमवर्गीय फौजी का बेटा हूं। आज मैं डॉक्टर बना हूं तो वह अच्छी शिक्षा की बदौलत ही है। उनका हमेशा प्रयास रहता है कि स्वास्थ्य के अलावा शिक्षा एवं समाजसेवा के अन्य क्षेत्रों के उत्थान के लिए कुछ सार्थक पहल की जाए। जरूरतमंद लोगों को यथाशक्ति मदद की जाए। डॉ. शर्मा ने कहा कि यह मदरसा क्षेत्र के लोगों के आर्थिक सहयोग से संचालित हो रहा है। क्षेत्र के पूर्व विधायक के प्रयास से मदरसा का भवन तो बन गया है, लेकिन बिहार राज्य मदरसा बोर्ड से निबंधन नहीं होने के कारण इसके संचालन में काफी परेशानी हो रही है। वे स्थानीय सांसद, विधायक समेत अन्य जनप्रतिनिधियों से अपील करना चाहते हैं कि इसके लिए पहल करें। मदरसा के सचिव मोहम्मद सरफराज ने डॉ. बीडी शर्मा के इस नेक कार्य की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे ही पहल से क्षेत्र में शिक्षा को एक अलग आयाम मिलेगा। समाज का भविष्य उज्जवल होगा। इस मौके पर टीईटी शिक्षक संघ बीएमएस के जिलाध्यक्ष धर्मेंद्र कुमार, आयुर्वेदाचार्य डॉ. राजीव रंजन, समाजसेवी अधिवक्ता शंभूनाथ यादव, बिट्रिज फार्मा के संस्थापक निखिल कुमार, सुरेश प्रसाद सिंह, समाजसेवी नाहिद अख्तर, अनवार आलम, शमशेर भाई, मदरसा के सचिव मोहम्मद सरफराज, मौलाना मो. यसीनुल कादरी, खजूरी गांव के समाजसेवी मंटू बाबा, कोंच निवासी लवकुश कुमार समेत दर्जनों की संख्या में मदरसा के बच्चे मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

जन्माष्टमी पूजा आज

औरंगाबाद। सदर प्रखंड स्थित ग्राम जम्होर में जन्माष्टमी पूजा के मौके पर 26 अगस्त को जन्माष्टमी पूजा मनाने वास्ते विष्णु धाम से लेकर जम्होर गांव के अंतिम छोर तक जो 51 मंदिरों की श्रृंखला है जिसमें दर्जनों देवालयों में जन्माष्टमी पूजा धूमधाम से मनाई जाएगी जाएगी।जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के उपाध्यक्ष सुरेश विद्यार्थी ने जन्माष्टमी पूजा करने वाले मंदिरों का अवलोकन करते हुए बताया कि विष्णु धाम में महंत बालकानंद ब्रह्मचारी के नेतृत्व में जन्माष्टमी पूजा धूमधाम से मनाई जाएगी। राधा कृष्ण मंदिर पुनपुन रोड,राधा कृष्ण मंदिर पुरानी पोस्ट ऑफिस, विरजू बाबू की ठाकुरवाड़ी, पंजाब नेशनल बैंक के बगल में जन्माष्टमी पूजा समिति द्वारा सात दिन तक वृहद कार्यक्रम आयोजित किया जाता है।ललन गौड़ का ठाकुरवाड़ी, लक्ष्मी सेठ का शिव मंदिर, जम्होर के मुख्य बाजार में चंद्रशेखर सिंह उर्फ ललन बाबू बाबू का शिव मंदिर,मुख्य बाजार में ही शांति बाबा का शिव मंदिर,ग्राम देवी जम्होर देवी स्थान,सिद्धनाथ बाबा रोड वीर कुंवर स्थान, गायत्री शक्तिपीठ अनुग्रह नारायण रोड, श्रीराम जानकी ठाकुरवाड़ी मंदिर अनुग्रह नारायण स्टेशन पर आचार्य छोटेलाल पांडेय के नेतृत्व में जन्माष्टमी पूजा धूमधाम से मनाई जाएगी।

कविता संग्रह रक्षा बंधनः भाई बहन का प्यार का विमोचन

औरंगाबाद। प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था कवि स्पर्श के सौजन्य से रक्षा बंधनः भाई बहन का प्यार कविता संग्रह का विमोचन डा, तरूण राय कागा ,पूर्व विधायक , बाड़मेर के अध्यक्षता में आयोजित की गई। संपादक वरीय कवि सह शिक्षक श्रीराम राय के अनुसार इस कविता संग्रह विमोचन समारोह का संचालन करते हुए श्रीमती शाहाना परवीन शान द्वारा की गई। सम्बोधन के क्रम में कहा कि इस पुस्तक में भाई-बहन के रिश्ते की मिठास और उनके अटूट प्रेम को कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है।समारोह में पधारे साहित्यकुंज के महासचिव श्री अरविंद अकेला ने कहा कि यह संग्रह रक्षा बंधन के अवसर पर विशेष रूप से तैयार किया गया है और इसमें कविताओं के माध्यम से भाई-बहन के संबंधों की गहराई और उनके जीवन में इस पर्व के महत्व को दर्शाया गया है।राय बरेली की डॉ गीता पांडेय अपराजिता ने कवि स्पर्श के इस प्रयास को व्यापक रूप से सराहा और कहा कि यह पुस्तक साहित्य प्रेमियों और रक्षा बंधन पर्व के प्रेमियों के लिए एक अमूल्य भेंट है।संपादक श्रीराम राय के अनुसार कवि स्पर्श ने इस पुस्तक को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाने के लिए इसे निःशुल्क उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है।

आईआईएम बोधगया ने अपने आईपीएम प्रोग्राम के चौथे एवं नवीन बैच 2024-29 का किया स्वागत

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

गया। आईआईएम बोधगया ने अपने इंटीग्रेटेड प्रोग्राम मैनेजमेंट आईपीएम के नए बैच का किया स्वागत। इस पांच वर्षीय प्रोग्राम के चौथे बैच में अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और नेपाल के 14 अंतर्राष्ट्रीय छात्रों सहित 148 छात्र शामिल रहे हैं।

नए बैच के दो दिवसीय ओरिएंटेशन कार्यक्रम की शुरूआत 24 अगस्त को सम्मानित अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई है। आईपीएम प्रोग्राम के चेयरपर्सन प्रो. विट्ठल रंगन एस ने व्यापार जगत में इस प्रोग्राम की आवश्यकता पर जोर देते हुए ओरिएंटेशन की शुरूआत की गई है। आईआईएम बोधगया की निदेशक डॉ. विनीता सहाय ने अभिभावकों से मुलाकात एवं बातचीत करते हुए उनका स्वागत किया गया है। उन्होंने शिक्षा के महत्व और सामाजिक रूप से जिम्मेदार एवं जागरूक प्रबंधकों के सृजन के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला है। संस्थान के महत्वपूर्ण मूल्य, माइंडफुलनेस को समझते हुए उन्होंने कहा कि सबसे बड़ी परीक्षा समय का परीक्षण है।भारत की प्राचीन प्रथाओं जैसे योग और जैविक खेती ने इस परीक्षा को सफलतापूर्वक पास कर लिया है। मुख्य अतिथि एवं एडवेंट प्राइवेट इक्विटी के ऑपरेटिंग पार्टनर डी. शिवकुमार ने छात्रों को संबोधित करते हुए उन्हें अकादमिक अंकों की दौड़ में अपने व्यक्तित्व के अन्य हिस्सों को फीका न पड़ने देने की सलाह देते हुए इस बात पर जोर दिया कि एक समीकृत व्यक्ति ही वह व्यक्ति होता है जो जीवन में जीत हासिल करता है। ओरिएंटेशन कार्यक्रम का पहला दिन आईपीएम के पूर्व एवं नए बैच के छात्रों के प्रदर्शन के साथ जीवंत सांस्कृतिक कार्यक्रम एस्टोविया 3.0 के साथ संपन्न हुआ है।छात्र ओरिएंटेशन में शामिल होने के लिए अत्यंत उत्साहित दिखाई दिए हैं। आईपीएम 04 के छात्र अहमद के.पी ने बताया किया कि परिसर सुंदरता में उनकी अपेक्षाओं से अधिक है, और विशेष रूप से ओरिएंटेशन कार्यक्रम ने जीवंत सांस्कृतिक गतिविधियों द्वारा इस अनुभव को वास्तव में सुखद बना दिया गया है।ओरिएंटेशन के दूसरे दिन उद्योग विशेषज्ञों के सत्र शामिल रहे हैं। गूगल में इंडिया टेक पार्टनरशिप्स विज्ञापन के कंट्री लीड श्री कार्तिक वेंकट ने छात्रों को सलाह दी कि अवसरों के पीछे भागने बजाय अपनी जिज्ञासा से अवसरों को बढ़ाना चाहिए। वक्ताओं में शामिल एलपीजी, एचपीसीएल के महाप्रबंधक मनोज कुमार, ओला के डायरेक्टर ऑफ सेल्स एंड मार्केटिंग निगलांशु नंदी, बीसीजी ज्यूरिक के एक्सपर्ट पार्टनर प्रतीक यादव स्विट्जरलैंड से छात्रों से ऑनलाइन जुड़े हैं। छात्रों को इस कार्यक्रम के दौरान आईआईएम बोधगया की 14 छात्र-संचालित कमिटियों के बारे में जानकारी हासिल करने का भी अवसर मिला है।जो विभिन्न मोर्चों पर संस्थान के कामकाज के लिए जिम्मेदार हैं आईआईएम बोधगया आईपीएम प्रोग्राम की प्रस्तावना करने वाले देश के केवल पांच आईआईएम में से एक है। आईआईएम रोहतक, आईआईएम जम्मू, आईआईएम इंदौर और आईआईएम रांची इस श्रृंखला के अन्य आईआईएम हैं । एनईपी 2020 के तहत, यह प्रोग्राम छात्रों को तीन साल के बाद स्नातक की डिग्री पूरी करने या एमबीए जारी रखने की सुविधा प्रदान करता है।

बिहार पुलिस के सिपाही भर्ती परीक्षा कदाचार मुक्त संपन्न

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

अरवल । जिले मे 5 परीक्षा केन्द्रों पर फतेहपुर सण्डा महाविद्यालय अरवल, +2 उच्च विद्यालय उमैराबाद अरवल, जी.ए. उच्च विद्यालय अरवल, बालिका उच्च विद्यालय अरवल, एस.एस.एस. जी.एस. कॉलेज अरवल पर केन्द्रीय चयन पर्षद (सिपाही भर्ती) बिहार पुलिस में सिपाही के रिक्त पदों पर चयन हेतु अभ्यर्थियों की लिखित परीक्षा पूर्णतः स्वच्छ एवं कदाचार मुक्त सम्पन्न हुआ। परीक्षा में कुल 05 केन्द्रों पर 3000 परीक्षार्थी के विरुद्ध 2424 परीक्षार्थी शामिल हुए। जिला पदाधिकारी द्वारा दण्डाधिकारियों को बारंबार स्वच्छ एवं कदाचार मुक्त परीक्षा सम्पन्न कराने हेतु कई माध्यमों से निदेश दिया गया। निदेशों के आलोक में परीक्षा केन्द्रों पर प्रतिनियुक्त सभी दण्डाधिकारी अपने कर्तव्य पर निष्ठापूर्वक तैनात रहे। फलस्वरूप किसी प्रकार की कदाचार की सूचना किसी भी केन्द्र से प्राप्त नहीं हुई है। जिला प्रशासन परीक्षा को कदाचार मुक्त वातावरण में संपन्न कराने हेतु कटिबद्ध है एवं इस हेतु सभी परीक्षा केन्द्रों पर पर्याप्त संख्या में दण्डाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारी की प्रतिनियुक्ति की गई है। इसी प्रकार से शेष चरणों में भी जिला पदाधिकारी के नेतृत्व में स्वच्छ एवं कदाचार मुक्त परीक्षा सम्पन्न कराई जाएगी।

शिक्षा निकेतन स्कूल में जन्माष्टमी समारोह का हुआ आयोजन

गया। शहर के नैली रोड खटकाचक स्थित श्री शिक्षा निकेतन स्कूल में भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव जन्माष्टमी समारोह बड़े धूमधाम से मनाया गया है। इस मौके पर विद्यालय परिसर को रंगीन गुब्बारों से एवं फूलों से सजाया गया है। वही विद्यालय के बच्चों ने बाल-गोपाल श्रीकृष्ण एवं श्रीजी राधारानी की वेशभूषा में अपनी मनमोहक झांकी प्रस्तुति दी है। विद्यालय में भगवान श्रीकृष्ण एवं श्रीजी राधा रानी के लिए सुंदर सुसज्जित सिंहासन बनाया गया है। इस कार्यक्रम की शुरूआत विद्यालय की प्राचार्या पूनम सिन्हा ने कन्हैया की मूर्ति सिंहासन लर रख कर पूजा-अर्चना एवं महाआरती से की। वहीं इस आरती में विद्यालय के तमाम शिक्षक-शिक्षिकाओं के साथ आए हुए आगंतुक अभिभावकों ने भी भाग लिया है। इसके पश्चात प्राचार्या श्रीमति सिन्हा ने विद्यालय के बच्चे जो बाल गोपाल एवं श्रीजी राधा रानी की वेशभूषा में विद्यालय आए थे उनको भी सिंहासन पर बिठाकर आरती एवं पूजा किया गया है। वही इस आरती के बाद विद्यालयों के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दे कर सभी का मन मोह लिया। श्याम चूड़ी बेचने आया, मैया यशोदा तेरा कन्हैया, राधा ढूंढ रही किसी ने मेरा श्याम देखा एवं राधा तेरी चुनरी जैसे भजन गीतों पर अपनी मनमोहक प्रस्तुति दी है।इस कार्यक्रम की समापन के बाद सभी बच्चों के बीच प्रसाद का वितरण किया गया है। इस मौके पर प्राचार्या पूनम सिन्हा ने कहा कि यह आयोजन प्रत्येक वर्ष आयोजित किया जाता रहा है। इस तरह के आयोजनों से बच्चों में हमारे धर्म संस्कृति के बारे जानकारी मिलती है। वह हमारे भगवान हमारी पौराणिक कथाएं संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं।कृष्ण जन्माष्टमी सिर्फ.एक त्यौहार नहीं है। यह भगवान कृष्ण के मूल्यों और शिक्षाओं पर चिंतन करने का समय है। उनका जीवन हमें दयालु बनने, अन्याय के खिलाफ खड़े होने और धार्मिक जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है। इस मौके पर प्राचार्या सिन्हा ने सभी को कृष्ण जन्माष्टमी की अनंत शुभकामनाएं दी हैं। पूरा कार्यक्रम प्राचार्या श्रीमति सिन्हा के दिशा निर्देश में एवं उपप्राचार्य रूपा गुप्ता क्व देख रेख में सम्पन्न हुआ है। इस मौके पर विद्यालय के सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं का भरपूर सहयोग रहा है।

गया में 28 अगस्त से शुरू होगी ओला उबर की टैक्सी सेवा शुरू होगी

गया भारतवर्ष के महानगरों की तर्ज पर अब गया जी में भी आम लोगों के लिए और बाहर से आने वाले विश्व पर्यटकों के लिए और अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरने वालों के लिए ओला उबर और रैपिडो जैसी बाइक एवं टैक्सी सुविधा उपलब्ध होगी गया जी में, इस योजना को मूल रूप देने के लिए गया जिला परिवहन पदाधिकारी राकेश कुमार पूरी तत्परता से लगे हुए हैं। इस संबंध में डीटीओ ऑफिस में एग्रीगेटर सर्विसेज उपलब्ध कराने वाले कंपनी के लोगों के साथ एवं विभिन्न वाहन चालक संघ के साथ बैठक किया गया जिसमें इस योजना को मूल रूप दिया जा सके इसके लिए दिशा निर्देश जारी किए गए हैं साथ में एडीटीओ बेबी कुमारी भी उपस्थित थी। सब कुछ ठीक रहा तो जल्द ही इसी महीने के 28 तारीख तक ओला उबर और रैपीडो जैसी बाइक एवं टैक्सी सेवाएं शुरू कर दी जाएगी इन एग्रीगेटर सर्विसेज को सेवा देने वाली कंपनी से जुड़ने के लिए सभी वाहन मालिकों से अपिल किया गया है। अगस्त महीने के लास्ट हफ्ते में गया कॉलेज खेल परिसर मे इन एग्रीगेटर सर्विसेज कंपनीयों से जुड़े अधिकारी एवं कर्मी के साथ वाहनो को साथ निर्धारित करने की प्रक्रिया पूरी करेंगे। इस पर डीटीओ ने कहा कि एग्रीगेटर सर्विस उपलब्ध होने से किराए पर टैक्सी कैब का उपयोग करने से उपयोग करता हूं के मन में संसार की भावना नहीं होती है इसके साथ ही टैक्सी सेवा पारदाता चिंता और संसार से मुक्त होते हैं उनके उनके वहां का उपयोग रजिस्टर्ड व्यक्ति के द्वारा किया जा रहा है यह दोनों के लिए उपयोगी है इसमें सबसे महत्वपूर्ण है की सुविधा के लिए उपलब्ध होने पर उपयोगकर्ता कहीं भी किसी भी समय अपने मोबाइल के जरिए से किराए पर टैक्सी की सुविधा प्राप्त कर सकता है

बिहार विरासत ज्ञानोत्सव कार्यक्रम का आयोजन में गया कॉलेज सभी मे प्रथम स्थान में चैंपियन

प्रात : किरण संवाददाता

गया। बिहार की विरासत एवं ज्ञान परंपरा के बारे में युवाओं को जागरूक करने के लिए कला एवं संस्कृति विभाग, बिहार सरकार के द्वाराह्न बिहार विरासत ज्ञानोत्सव कार्यक्रम का आयोजन 23 और 24 अगस्त 2024 को आयोजित किया गया है. इस कार्यक्रम से पूर्व 20 और 22 अगस्त को जगजीवन कॉलेज में 6 प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है, जिसमें प्रथम तीन स्थान पर आए हुए विभिन्न विधाओं के छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया है। इस कार्यक्रम का उद्घाटन बिहार के यशस्वी उप मुख्यमंत्री सह कला एवं संस्कृति युवा विभाग के प्रमुख विजय कुमार सिन्हा के द्वारा किया गया है।इस कार्यक्रम की अध्यक्षता गया के जिलाधिकारी डॉक्टर त्यागराजन एस. एम के द्वारा किया गया है ।इस कार्यक्रम में लोकप्रिय नेता एवं सहकारिता मंत्री डॉ प्रेम कुमार तथा विधान परिषद के सदस्य जीवन कुमार एवं कला एवं संस्कृति विभाग से राहुल कुमार की गौरवमई उपस्थित रही है। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर आए हुए छात्र-छात्राओं को उपमुख्यमंत्री के द्वारा सम्मानित किया गया है। अपने भाषण में उपमुख्यमंत्री ने गया शहर के विशिष्ट जनों एवं स्वतंत्रता सेनानियों तथा विभिन्न विधाओं में योगदान देने वाले महापुरुषों को याद करते हुए छात्रों के साथ सीधा संवाद स्थापित किया और उनसे प्रश्न पूछे ,जिसमें बच्चों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया है ।इस कार्यक्रम के अंत में छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया जिसमें गया कॉलेज ओवरऑल चैंपियन रहा है। वाद- विवाद प्रतियोगिता में गया कॉलेज की उरूज तौकीर ने प्रथम स्थान और हर्ष कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया है। समूह नृत्य में ट्विंकल रक्षिता एवं अन्य ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया, जबकि एकल नृत्य में ट्विंकल रक्षिता तृतीय स्थान पर रही है। निबंध प्रतियोगिता में गया कॉलेज की पूनम कुमारी प्रथम एवं स्मिता कुमारी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। तबला वादन में गया कॉलेज के शिव शक्ति कुमार ने प्रथम स्थान और शास्त्रीय गायन में पूजा कुमारी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है ।लोकगीत में गया कॉलेज की शालिनी कुमारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया है। इस प्रकार गया कॉलेज कुल नौ पदक लेकर प्रथम स्थान पर रहा है। मुख्यमंत्री के द्वारा स्मृति चिन्ह, पदक एवं प्रशस्ति पत्र देकर छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की गई है ।गया कॉलेज के कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ राजेश कुमार मिश्र ने बताया कि गया कॉलेज के छात्रों ने कड़ी मेहनत और अनुशासन के साथ प्रतियोगिता में भाग लिया है, यह उनकी कड़ी मेहनत का ही परिणाम है कि वह प्रथम स्थान पर रहे हैं ।इस कार्यक्रम के संयोजन में गया कॉलेज यूनिट 2 के कार्यक्रम पदाधिकारी रवि कुमार ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गया कॉलेज, गया के प्रधानाचार्य प्रो डॉ सतीश सिंह चंद्र ने गया कॉलेज के छात्र-छात्राओं की सफलता पर खुशी जाहिर करते हुए छात्रों को भविष्य में इसी प्रकार प्रदर्शन करने के लिए शुभकामनाएं दी हैं।

जीविका के द्वारा लखपति दीदी हुए सम्मानित

अरवल। जीविका के द्वारा लखपति दीदी सामान समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में 40 लखपति दीदी के प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान लखपति दीदी ने बताया कि जब हमने जीविका में नहीं जुड़े थे इससे पहले हमारी हालत बहुत दयनीय स्थिति थी। जब से जीविका में जुड़े हैं तब से हमारा जीवन यापन यमन शांति से सभी परिवार रह रहे हैं। लखपति दीदी ने बताया कि शुरूआती में हमने 30000 रुपए लगाकर दुकान खोल खोले थे अब जाकर 3 लख रुपए की पूंजी बन चुके हैं। इसके साथी हमने अपने बच्चों को अच्छे शिक्षा संस्कार के लिए स्कूल में पढ़ाई करवा रहे हैं। जीविका द्वारा हमें लखपति दीदी का प्रमाण पत्र दिया गया इसको लेकर आज मैं बहुत खुशी हूं मेरा जीवन यापन के लिए अहम है

भाजपा के सदस्यता अभियान को लेकर कार्यशाला का आयोजन

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

अरवल। भाजपा जिला कार्यालय में सदस्यता अभियान का जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें कार्यकताओं को 1 सितम्बर से प्रारंभ होने वाले सदस्यता अभियान की प्रक्रिया का प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही जिले में चलने वाले अभियान की रूप रेखा भी बनाई गई। इस कार्यशाला की अध्यक्षता भाजपा जिला अध्यक्ष धर्मेंद्र तिवारी ने किया ।संचालन गिरेन्द्र कुमार ने की । इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जिला प्रभारी मंत्री सह बिहार सरकार के मंत्री हरि सहनी एवं विशिष्ट अतिथि विधान परिषद सदस्य अनिल शर्मा उपस्थित रहे । संयुक्त रूप से द्वीप प्रज्वलित कर इस कार्यशाला का विधिवत उद्घाटन किया गया । अपने सम्बोधन में कार्यकर्त्ताओ को सम्बोधित करते हुए बिहार सरकार के मंत्री हरि सहनी ने कहा कि सदस्यता अभियान के लक्ष्य को पूरा करने के लिए सभी जुट जाएं। प्रत्येक बूथ तक कार्यकर्ता पहुंचे और अधिक से अधिक लोगों को पार्टी और विचारधारा से जोड़ने का प्रयास करें। भाजपा संगठन का निर्वाचन लोकतांत्रिक तरीके से होता है। इसी क्रम में संघठन के चुनाव होना है, इसी प्रक्रिया के अंतर्गत सदस्यता अभियान की तैयारी चल रही है। अभी 30 अगस्त तक भाजपा का राष्ट्रीय स्तर से लेकर बूथ स्तर तक कार्यकर्ता प्रशिक्षण चल रहा है। जिसमें आगामी 1 सितंबर से प्रारंभ होने वाले सदस्यता अभियान में क्या और कैसे सदस्यता करनी है, इसका प्रशिक्षण दिया जा रहा है । भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता के लिए 8800002024 पर मिस्ड कॉल कर के जुड़ सकते हैं । 31 अगस्त को सभी बूथ पर बड़ी बैठक होना तय हुआ है । वहीं बिहार विधान परिषद सदस्य अनिल शर्मा ने कहा कि जनसंख्या नियंत्रक कानून से वही लोग व्यथित हो रहे हैं जो भारत को पुनः गुलाम देखना चाहते हैं। हमें इनकी चाल को समझना होगा और भारत माता के लिए स्वार्थ से परे जो हमारे पूर्वजो ने जो कुबार्नी दी है उन्हें स्मरण कर भारतीय जनता पार्टी को सशक्त बनाना है। भारत की विभिषिका को स्मरण कर हमें आज बांग्लादेश में हो रहे अत्याचार व आतंक से सीख लेने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि हमारा बूथ पर 200 सदस्यों की सदस्यता कराने का लक्ष्य लेकर काम करें, संगठन लक्ष्य स्वतःपूर्ण हो जाएगा। भारतीय जनता पार्टी स्थापना काल से लोकतांत्रिक तरीके से संगठन को मजबूत करने तथा विस्तार करने का काम सदस्यता अभियान के माध्यम से करती रही है। कहा कि उन्होंने बताया कि 21 अगस्त को प्रदेश में और ज़िला में आज जिस तरह से कार्यशाला का आयोजन किया गया है उसी तरह से सभी मंडलों में 26 और 27 को कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा तथा 31 अगस्त को बूथों की कार्यशाला बूथ स्तर पर आयोजित होगी । यह अभियान 1 सितम्बर से 25 सितम्बर पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी के जयंती तक चलेगी । वहीं क्षेत्रीय प्रभारी पंकज सिंह ने कहा कि भाजपा सदस्यता अभियान को सर्वस्थानों पर और सर्व समावेशी करना है। इसका मूल उद्देश्य भाजपा की राष्ट्र प्रथम की विचारधारा का जनता के बीच विस्तार करना है। स्थापना काल के समय से हीं भाजपा का उद्देश्य कभी राजनैतिक सुख हासिल करना नहीं रहा है बल्कि माँ भारती को परम-वैभव तक पहुँचाने के लिये संघर्ष करना रहा है। इसलिए ही भाजपा देश की दूसरी पार्टियों से अलग है। उन्होंने कहा कि हम सभी कार्यकताओं का कर्तव्य है की सदस्यता अभियान में अधिक से अधिक हर वर्ग और धर्म के लोगों को भाजपा का सदस्य बनाया जाये। इस कार्यशाला में प्रदेश प्रवक्ता सचिदानंद पियूष, पूर्व जिला अध्यक्ष राम विनय शर्मा, अजय पासवान, जिला उपाध्यक्ष भास्कर कुमार, सहित सैकड़ो कार्यकर्ता पदाधिकारी उपस्थित रहे ।

बिहार विरासत ज्ञान उत्सव में बिहार के उप मुख्यमंत्री द्वारा पुरस्कृत हुईं जीबीएम कॉलेज की छात्राएँ

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

गया। कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार एवं जिला प्रशासन गया के संयुक्त तत्वावधान में महाबोधि कन्वेंशन सेंटर, बोधगया में आयोजित कार्यक्रम ह्नबिहार विरासत ज्ञान उत्सवह्न में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे बिहार के उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा, डॉ प्रेम कुमार, मंत्री, सहकारिता, वन एवं पर्यावरण विभाग, बिहार सरकार, एमएलसी जीवन कुमार, इस कार्यक्रम अध्यक्ष गया जिलाधिकारी डॉ. त्यागराजन एस.एम एवं अन्य मंचासीन गणमान्य अतिथियों ने चित्रकला, लोकगीत गायन एवं शास्त्रीय नृत्य में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा क्रमशः राखी कुमारी, चाँदनी कुमारी एवं खुशी कुमारी को, शास्त्रीय गायन तथा शास्त्रीय वादन दोनों विधाओं में अलग-अलग क्रमशः द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली खुशी कुमारी एवं वैष्णवी श्रीवास्तव को कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार की ओर से पुरस्कार स्वरूप प्रशस्ति प्रमाण पत्र तथा मेमेंटो देकर सम्मानित किया गया है। लोकगीत गायन में प्रथम स्थान पर चयनित विजेता चाँदनी कुमारी की अनुपस्थिति में जीबीएम कॉलेज से कार्यक्रम समन्वयक के रूप में उपस्थित अंग्रेजी विभागाध्यक्ष एवं एनसीसी सीटीओ डॉ. कुमारी रश्मि प्रियदर्शनी ने उप मुख्यमंत्री सिन्हा के हाथों चाँदनी का प्रमाण पत्र एवं मेमेंटो प्राप्त किया है। डॉ. रश्मि ने बताया कि छात्रा चाँदनी को लोकप्रिय इंडियन आइडल प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए आडिशन देने हेतु आमंत्रण आने पर अचानक दिल्ली जाना पड़ गया, इसीलिए वे पुरस्कार लेने नहीं आ सकीं। प्रथम स्थान पर चयनित सभी प्रतिभागियों ने ज्ञानोत्सव में अपनी प्रस्तुतियां दी। ज्ञानोत्सव में छात्राओं के साथ तबले पर संगत कर रहे प्रसिद्ध तबला वादक एवं संगीत प्रशिक्षक दिनेश कुमार भी कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार द्वारा ह्यह्नकला प्रतिभा सम्मानह्न से नवाजे गये। उप मुख्यमंत्री सिन्हा ने उन्हें भी प्रशस्ति प्रमाण पत्र तथा मेमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया गया है। इस कार्यक्रम में आमंत्रित जीबीएम कॉलेज की कैडटों की भी सक्रिय उपस्थिति रही। एनसीसी अंडर आफिसर अनुराधा कुमारी एवं आकृति कुमारी उप मुख्यमंत्री सिन्हा द्वारा बिहार के महापुरुषों के बारे में पूछे जा रहे प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर देकर प्रशंसित हुई है। इस कार्यक्रम के उपरांत कॉलेज पहुंचीं पुरस्कृत छात्राओं को प्रभारी प्रधानाचार्य डॉ. सहदेब बाउरी ने हर्षविभोर होकर हार्दिक शुभकामनाएं दीं है। उन्होंने बिहार विरासत ज्ञान उत्सव में छात्राओं की सफल प्रतिभागिता सुनिश्चित कराने में प्रारंभ से अंत तक पूर्ण समर्पण एवं निष्ठा के साथ जुटीं कार्यक्रम प्रभारी डॉ रश्मि प्रियदर्शनी एवं तबले पर संगत कर रहे दिनेश कुमार को भी बधाइयाँ दीं है। प्रभारी प्रधानाचार्य डॉ. बाउरी ने ज्ञानोत्सव में छात्राओं की शानदार प्रतिभागिता को गौतम बुद्ध महिला कॉलेज की गौरवमय उपलब्धि बतलाते हुए छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। प्रधानाचार्य कक्ष में उपस्थित डॉ. प्यारे माँझी, अजय कुमार, रौशन कुमार, राजेश कुमार व अन्य ने भी डॉ रश्मि एवं पुरस्कृत छात्राओं को ढेर सारी शुभकामनाएं दीं।

265 तक जाएगा इस बैंक का शेयर!

नईदिल्ली, एजेंसी। एसबीआई म्यूचुअल फंड को करूर वैश्य बैंक में 9.99 प्रतिशत तक अधिग्रहण करने की अनुमति मिल गई है। यह मंजूरी केंद्रीय रिजर्व बैंक ने दी है। इस बीच, शेयर बाजार में लिस्टेड करूर वैश्य बैंक के शेयर का परफॉर्मेंस सुस्त है। हालांकि, शेयर को लेकर एक्सपर्ट बुलिश नजर आ रहे हैं।

झुनझुनवाला के निवेश वाली कंपनी का रहा है आईपीओ

नईदिल्ली, एजेंसी। रेखा राकेश झुनझुनवाला के निवेश वाली कंपनी बाजार स्टाइल रिटेल (स्टाइल बाजार) का आईपीओ आ रहा है। कंपनी ने सेबी के पास आईपीओ के लिए ड्राफ्ट दाखिल किया है।

संक्षिप्त समाचार

ऐश्वर्या खरे ने बताई अपनी फेवरेट पेट स्टोरीज़

भोपाल। हर साल 26 अगस्त को मनाया जाने वाला इंटरनेशनल डॉग डे, इंसानों और उनके पालतू डॉग्स के बीच के खास रिश्ते को समर्पित एक विशेष दिन है। यह दिन हमारी जिंदगी में कुत्तों की महत्वपूर्ण भूमिका की पहचान करता है, जो वे हमारे वफादार दोस्त, हमारे हमदर्द और हमारे सच्चे साथी के रूप में निभाते हैं। ज़ी टीवी के शो भाग्य लक्ष्मी में भोपाल की ऐश्वर्या खरे,ने अपने प्यारे पालतू डॉग्स द्वारा उनकी जिंदगी में लाई गई खुशियां और निस्वार्थ प्यार के बारे में बताया। उन्होंने इन प्यारे जानवरों को सेलिब्रेट करने और उनकी देखभाल करने की जरूरत पर भी चर्चा की, जो हमारी सलामती और खुशी में एक बड़ा योगदान देते हैं। ज़ी टीवी के शो भाग्य लक्ष्मी में लक्ष्मी का रोल निभा रहीं ऐश्वर्या खरे ने कहा, ''मुझे बचपन से ही डॉग्स से बहुत लगाव रहा है, लेकिन मेरी मां ने मुझे कभी कुत्ते पालने की इजाज़त नहीं दी। लेकिन हाल ही में मैंने एक खूबसूरत शिह ज़ू, बर्फी को पाल लिया है। जब हम उसे मुंबई में अपने घर लाए, तो मैं एक डॉग पेरेंट बनने के लिए बहुत उत्साहित थी। ईमानदारी से कहूं तो, मेरा मानना है कि यह एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।

सैमसंग ने भारत में गैलेक्सी वॉच में इरेगुलर हार्ट रिदम नोटीफिकेशन का फीचर पेश किया

गुरुग्राम, एजेंसी। भारत के सबसे बड़े कंज्यूमरइलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड सैमसंग ने आज गैलेक्सीवॉच के लिए सैमसंगहेल्थमॉनिटरऐप पर इरेगुलरहार्टरिदमनोटीफिकेशन फीचर पेश करने की घोषणा की है। ऐपके मौजूदा ब्लड प्रेशर और इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम मॉनिटरिंगफीचर्स के साथ, यह नया फीचरएट्रियलफिब्रिलेशन का संकेत देने वाली हार्टरिदमका पता लगाने में मदद करता है। इससे गैलेक्सीवॉचपहनने वालों को उनके हृदय की सेहत के बारे में ज्यादा बेहतर जानकारी मिलती है। सैमसंगहेल्थमॉनिटरऐप में एक्टिव होने के बाद, फीचरगैलेक्सीवॉच के बायोएक्टिव सेंसर का इस्तेमाल करके बैकग्राउंड में अनियमित हृदय गति (इरेगुलरहार्टरिदम) की लगातार जांच करता है। अगर लगातार माप की एक निश्चित संख्या अनियमित पाई जाती है, तो गैलेक्सीवॉच अपने यूजर्स को संभावित एफिब एक्टिविटी की चेतावनी देता है और यूजर को अधिक सटीक माप के लिए अपनी घड़ी का इस्तेमाल करके ईसीजीलेने की सलाह देता है। मौजूदा रक्तचाप और हृदय गति की निगरानी के साथ, यह नया फीचरयूजर्स को उनके हृदय के स्वास्थ्य के बारे में ज्यादा गहन जानकारी प्रदान करता है। हृदय संबंधी रोग दुनिया भर में मृत्यु के प्रमुख कारणों में से एक है। एफिब उस स्थिति को कहते हैं जिसमें हार्टरिदम अनियमित हो जाती है। इसको आमतौर पर हृदय संबंधी समस्याओं के एक चेतावनी संकेत के रूप में लिया जाता है। एफिब की स्थिति में स्ट्रोक, हार्टफेलियर और अन्य जटिलताओं का जोखिम बढ़ जाता है। इसके अलावा, एफिब के कई मामलों में कोई लक्षण नहीं दिखते या यहां तक कि ये लक्षण एकदम साइलेंट होते हैं।

जब सुधा मूर्ति ने अंधे पुजारी को ऑफर किए 20000 रुपये तो उन्होंने दे दिया तगड़ा ज्ञान

नई दिल्ली, एजेंसी। इंफोसिस के फाउंडर नारायण मूर्ति की पत्नी सुधा मूर्ति किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। वह लेखिका और राज्यसभा सदस्य भी हैं। कई बार उनकी बातें लोगों के दिल में उतर जाने वाली होती हैं। सुधा मूर्ति को सामाजिक कामों के लिए भी जाना जाता है। उन्होंने कई बार सार्वजनिक मंचों से ऐसी बातें कही हैं जो लोगों को प्रेरणा देती हैं। इसमें कई किस्से उनकी जिंदगी से जुड़े होते हैं। हाल ही में उन्होंने एक घटना के बारे में बताया है। यह घटना उनकी तमिलनाडु यात्रा के दौरान की है। इस यात्रा के दौरान वह एक अंधे पुजारी से मिलीं। उन्होंने उस पुजारी को मदद के बदले 20 हजार रुपये देने की पेशकश की। उस पुजारी ने वह रकम नहीं ली और सुधा मूर्ति को नसीहत दे डाली।

दरअसल, एक बार सुधा मूर्ति तमिलनाडु में थीं। रास्ते में उनकी कार खराब हो गई। ड्राइवर ने कहा कि पास में एक मंदिर है। वहां रुक जाते हैं। ड्राइवर ने कहा कि मंदिर में अंधा पुजारी अपनी पत्नी के साथ रहता है। शुरू में सुधा मूर्ति की इच्छा नहीं हुई, लेकिन बाद में वह तैयार हो गईं। जब वे दोनों मंदिर पहुंचे तो पुजारी और उनकी पत्नी ने दोनों का गर्मजोशी से स्वागत किया। अपना स्वागत और देखभाल से खुश होकर सुधा मूर्ति ने उन्हें कुछ मदद देने का फैसला लिया।

आरती में दिए 100 रुपये

जब वे मंदिर पहुंचीं तो पुजारी ने आरती की। इस पर उन्होंने 100 रुपये दिए। यह रकम देखकर पुजारी को आश्चर्य हुआ और हिचकिचाहट भी हुई। पुजारी ने कहा कि यह रकम बहुत ज्यादा है। लेकिन सुधा मूर्ति उनकी मदद और करना चाहती थीं। उन्होंने पुजारी का नाम और दूसरी जानकारियां मांगी। वह उन्हें 20 हजार रुपये उनके बुढ़ापे के सहारे के तौर पर देना चाहती थीं। लेकिन पुजारी ने उस रकम को लेने से मना कर दिया। पुजारी ने जो बात कही, वह काफी प्रेरणादायक थी। पुजारी ने कहा, मैं नहीं जानता कि तुम कौन हो, लेकिन मैं तुम्हें कुछ बताना चाहता हूं। जीवन में यह गलती कभी मत करना।

पुजारी ने दिया यह ज्ञान

पुजारी की यह बात सुनकर सुधा मूर्ति हैरान हो गईं। उन्होंने पूछा कि तुम ऐसा क्यों कह रहे हो इस पर पुजारी ने कहा, अगर तुम मुझे ये पैसे दोगी तो ये मेरे लिए बोझ बन जाएंगे। गांव वाले अब हमारी देखभाल करते हैं, लेकिन जैसे ही उन्हें पता चलेगा कि मेरे पास बैंक या डाकघर में 20 हजार रुपये हैं तो वे मेरी मौत की कामना करने लगेंगे, ताकि वे पैसे पा सकें। वे अब हमारी मदद नहीं करेंगे। भगवान ने हमें जो दिया है, वह काफी है। याद रखो, जीवन में तुम्हें एक सीमा खींचनी सीखनी चाहिए। यह सीमा होनी चाहिए- बस बहुत हो गया। इस सीमा को केवल तुम ही तय कर सकते हो।

बस बहुत हो गया में शांति

पुजारी की बात सुनकर सुधा मूर्ति काफी प्रभावित हुईं। पुजारी के सरल लेकिन गहन संदेश ने धैर्य के महत्व और अधिकता के खतरों पर प्रकाश डाला। पुजारी अपने अंधेपन और बुढ़ापे के बावजूद आत्मा से समृद्ध थे। वह समझते थे कि असली धन पैसे में नहीं बल्कि यह जानने की शांति में निहित है कि बस बहुत हो गया।

सुकन्या समृद्धि के निवेशकों के लिए बड़ी खबर, सरकार ने बदले नियम, सर्कुलर जारी

नईदिल्ली, एजेंसी। छोटी बचत योजनाओं में निवेश करते हैं तो ये खबर आपके काम की है। दरअसल, केंद्रीय वित्त मंत्रालय के तहत आर्थिक मामलों के विभाग ने एक सर्कुलर जारी किया है। सर्कुलर के मुताबिक 6 नए नियम जारी किए गए हैं। ये नियम राष्ट्रीय बचत योजना, सार्वजनिक भविष्य निधि यानी पीपीएफ और सुकन्या समृद्धि अकाउंट से जुड़े निवेशकों के लिए हैं। आइए सुकन्या समृद्धि अकाउंट के नए नियम के बारे में जान लेते हैं।) दादा-दादी (जो कानूनी अभिभावक के अलावा अन्य हैं) की संरक्षता के तहत खोले गए अकाउंट्स के मामले में, संरक्षकता लागू कानून के तहत हकदार व्यक्ति, यानी प्राकृतिक अभिभावक (जीवित माता-पिता) या कानूनी अभिभावक को ट्रांसफर की जाएगी।

क्यूसीओ से घटिया वस्तुओं का आयात कम करने में मिलेगी मदद, एमएसएमई पर ये बोले केंद्रीय मंत्री

नई दिल्ली, एजेंसी। सरकार की ओर से गुणवत्ता को नियंत्रित करने से जुड़े आदेश एमएसएमई को अनुचित प्रतिस्पर्धा से बचाने के लिए हैं। इससे उन्हें घटिया सामानों के आयात में कटौती करने में मदद मिलेगी। वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने शनिवार को यह बात कही। उन्होंने कहा कि इन आदेशों के जरिए सरकार छोटे और मंझोले उद्योगों की मदद कर रहे हैं। उन्होंने कहा, हम एमएसएमई को क्यूसीडी की जरूरतों को पूरा करने के लिए समय दे रहे हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि गुणवत्ता को नियंत्रित करने से जुड़े आदेशों से छोटे व मंझोले उद्योगों को फायदा मिलेगा। ये आदेश उन्हें देश के बाहर से गलत कीमत पर कम गुणवत्ता वाली वस्तुओं के आयात से रोकते हैं। इस तरह ये आदेश एमएसएमई सेक्टर को अनुचित प्रतिस्पर्धा से बचाते हैं। केंद्रीय मंत्री ने साथ में यह भी कहा कि एमएसएमई को केवल एक छोटे उद्यम के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

गोयल ने कहा कि बड़े उद्योगों और व्यवसायों के आसपास के पूरे इकोसिस्टम में हजारों एमएसएमई काम कर रहे हैं। उनके बिना ये बड़े उद्योग सफल नहीं हो सकते।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि एमएसएमई बड़े उद्योगों और व्यवसायों के लिए आपूर्तिकर्ता और ग्राहक भूमिका में कार्य करते हैं। एमएसएमई देश के पर्यटन और आधारभूत संरचना क्षेत्र के विकास में भी अहम भूमिका में हैं। देश के निर्यात में भी उनका बड़ा हिस्सा है। उन्होंने कहा आज कई एसएमई ने अपने व्यवसायों को बीएसई पर पंजीकृत कराया है।

क्यूसीओ जरिए सरकार ऐसे वस्तुओं के उत्पादन, बिक्री, व्यापार, आयात और भंडारण पर पाबंदी लगाती है, जिनके पास भारतीय मानक ब्यूरो मार्क ना हो। ये आदेश स्मार्ट मीटर, नट, बोल्ट और फास्टनर के लिए जारी किए गए हैं। क्यूसीओ को जारी करने का मकसद कम गुणवत्तापूर्ण वाले उत्पादों के आयात में कटौती करना है, ताकि ग्राहकों और पर्यावरण का कल्याण व सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

पॉल जॉन सिंगल माल्ट व्हिस्की की विदेशों में भी जमेगी धाक

यूएस समेत 50 से अधिक देशों में पहले से ही है पहुंच

नई दिल्ली, एजेंसी। स्पिरिट बनाने वाली भारतीय कंपनी जॉन डिस्टिलरीज लिमिटेड कुछ नए वैश्विक ठिकाने तलाश रही है। जी हां, कंपनी अपने पॉल जॉन सिंगल माल्ट व्हिस्की के लिए निर्यात बढ़ा रही है। कंपनी इस समय अमेरिका, फ्रांस, संयुक्त अरब अमिरात और जापान समेत दुनिया के 50 देशों में पॉल जॉन सिंगल माल्ट व्हिस्की का निर्यात करती है।

हमारे सहयोगी ईटी को एक खबर के मुताबिक जॉन डिस्टिलरी लिमिटेड अपने गोवा प्लांट में सिंगल माल्ट डिस्टिलरी की क्षमता विस्तार कर रही है। इसके लए कंपनी ने वहां काफी निवेश भी किया है। कंपनी की योजना इस साल अक्टूबर से व्हिस्की के नए वेरिएंट लॉन्च करने की है। इससे देशी और विदेशी बाजारों में कंपनी की स्थिति मजबूत होगी।

जेडीएल के चेयरमैन पॉल पी जॉन का कहना है हमने अपनी गोवा डिस्टिलरी की क्षमता को लगभग तीन गुना बढ़ाकर 1.3 मिलियन लीटर से 3 मिलियन

लीटर सालाना कर दिया है। हमने इस विस्तार में लगभग 100 करोड़ रुपये का निवेश किया है, जो वैश्विक और घरेलू बाजारों में पीजेएसएम व्हिस्की की बढ़ती मांग को पूरा करने में हमारी मदद करेगा। उन्होंने बताया कि उनकी कंपनी 50 से अधिक देशों में निर्यात करती है। उद्योग के अनुमानों के अनुसार, 2023-24 में, जेडीएल ने अमेरिका, फ्रांस, यूएई और जापान जैसे 50 से अधिक देशों को पीजेएसएम व्हिस्की के लगभग 30,000 केस निर्यात किए। घरेलू बाजार में, स्पिरिट निर्माता ने लगभग 72,000 पीजेएसएम व्हिस्की केस बेचे। इसके इस समय 12 जगह डिस्टिलरी हैं जिनमें हर साल 24 मिलियन केस का उत्पादन होता है। कंपनी प्रीमियम रम और वोडका को भी रोल आउट करने की योजना बना रही है।

इन्फोमेरिक्स रेटिंग्स की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत में अल्कोहलिक बीवरेज की बिक्री अगले दस वर्षों में 7 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ने की उम्मीद है। वर्ष 2023 में, भारत में एल्कोबेव बाजार का आकार करीब 55 बिलियन डॉलर होने का अनुमान है जो कि साल 2021 में 52.4 बिलियन डॉलर का था। उल्लेखनीय है कि शराब पीने की कानूनी उम्र कम होने, मध्यम वर्ग की आबादी में प्रवेश करने वाले उपभोक्ताओं का एक बड़ा उभरता हुआ नया समूह और व्हिस्की की लोकप्रियता से विकास को बढ़ावा मिल रहा है। प्रीमियमाइजेशन भी सभी स्पिरिट कैटेगरीज में विकास को और आगे बढ़ा रहा है।

भारत के अलग अलग राज्यों में शराब पीने और खरीदने की उम्र एक समान नहीं है। पहाड़ी राज्यों जैसे हिमाचल प्रदेश, सिक्किम, मेघालय आदि में शराब पीने की न्यूनतम उम्र 18 साल है। इन राज्यों के अलावा राजस्थान, गोवा, पुडुचेरी में भी शराब पीने और खरीदने की कानूनी उम्र 18 साल है। वहीं पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, जम्मू कश्मीर, लेह-लद्दाख, उत्तराखंड में 21 साल के व्यक्ति शराब पी सकते हैं। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़ में यह उम्र 25 साल है। बिहार में अल्कोहकलिक बीवरेज पीना मना है।

वैल्यू इन्वेस्टिंग के लिए महत्वपूर्ण निवेशकों के भरोसे के साथ आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल वैल्यू डिस्कवरी फंड ने 20 साल पूरे किए

मुंबई, एजेंसी। भारत में सबसे बड़ा वैल्यू फंड, आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल वैल्यू डिस्कवरी फंड, क्लोजिंग एसेट्स अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) द्वारा, सफलतापूर्वक 20 साल पूरे कर चुका है। इस स्कीम का क्लोजिंग एयूएम 48,805.97 करोड़ है, जो वैल्यू कैटेगरी में कुल एयूएम का लगभग 25.9 प्रतिशत है। फंड में निवेश का लगातार बने रहना स्कीम में वैल्यू निवेशकों के महत्वपूर्ण निवेश विश्वास को दर्शाता है। 31 जुलाई, 2024 तक के आंकड़े। (स्रोत- वैल्यू रिसर्च) यह स्कीम आकर्षक वैल्यूएशन वाले स्टॉक के विविध पोर्टफोलियो में निवेश करके वैल्यू इन्वेस्टमेंट स्टाइल का पालन करती है, लेकिन अपने आंतरिक मूल्यों से कम पर कारोबार कर रही है। स्थापना के समय (16 अगस्त, 2004) 10 लाख का एकमुश्त निवेश, 31 जुलाई, 2024 तक, लगभग 4.56 करोड़ होगा, यानी 21.09 प्रतिशत की सीएजीआर के साथ ये ग्रोथ आई है। निफ्टी 50 में इसी तरह का निवेश 16.2 प्रतिशत की सीएजीआर यानी लगभग 2 करोड़ का होगा।

टीएमसी ने वित्त मंत्री को चिट्ठी लिखी, स्वास्थ्य-जीवन बीमा प्रीमियम पर 18% जीएसटी दर को निरस्त करने की मांग

नई दिल्ली, एजेंसी। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी नेता) डेरेक ओब्रायन ने केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से आगामी जीएसटी परिषद की बैठक के दौरान स्वास्थ्य और जीवन बीमा प्रीमियम पर 18 प्रतिशत जीएसटी की तत्काल समीक्षा करने की अपील की। उन्होंने इसे वापस लेने का भी आग्रह किया। टीएमसी नेता ने सीतारमण को एक चिट्ठी लिखी, जिसमें उन्होंने स्वास्थ्य और जीवन बीमा प्रीमियम पर जीएसटी को वापस लेने की मांग की। डेरेक ओब्रायन ने कहा, स्वास्थ्य और जीवन बीमा प्रीमियम पर 18 प्रतिशत जीएसटी मध्यम वर्ग के 45 करोड़ भारतीयों पर बोझ है। ये बीमा योजनाएं संकट के समय वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती हैं। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि स्वास्थ्य और जीवन बीमा पर उच्च जीएसटी दर लगाने से कई लोग बीमा योजनाओं का विकल्प नहीं चुन पाएंगे।

ओरिएंटल ट्राइमेक्स लिमिटेड ने स्टोन इंडस्ट्री में क्रांति लाने, बाजार में उपस्थिति बढ़ाने और वित्तीय उपलब्धियां हासिल करने के लिए रणनीतिक विकास की घोषणा की

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत में नेचरल स्टोन्स के अग्रणी प्रोसेसर और व्यापारी ओरिएंटल ट्राइमेक्स लिमिटेड रणनीतिक विकास की एक श्रृंखला की घोषणा की, जो इसकी परिचालन क्षमताओं को फिर से परिभाषित करने, इसकी बाजार उपस्थिति का विस्तार करने और इसकी वित्तीय स्थिति को मजबूत करने के लिए तैयार है। ये पहल नवाचार, विकास और ग्राहक संतुष्टि के प्रति कंपनी की अटूट प्रतिबद्धता को दिखाती है।

1. वायर-आधारित गैंगसॉ मशीन के साथ स्टोन प्रोसेसिंग में क्रांतिकारी छलांग

ओरिएंटल ट्राइमेक्स लिमिटेड अत्याधुनिक वायर-आधारित गैंगसॉ मशीन के आयात और स्थापना के साथ स्टोन इंडस्ट्री में क्रांति लाने के लिए तैयार है, जिसे आमतौर पर स्लैब कटिंग के लिए केवल मशीन कहा जाता है। चीन में चांग्शा बेटो न्यू मटेरियल टेक्नोलॉजी कंपनी लिमिटेड से ली गई यह अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी भारत में अपनी तरह की पहली टेक्नोलॉजी होगी और इसे चेन्नई के पास

Oriental Trimex Limited

गुम्मिडिपोंडी में ओटीएल के प्लांट में स्थापित किया जाएगा।

कई ब्लेडों का उपयोग करने वाले पारंपरिक गैंगसॉ के विपरीत, यह उन्नत मशीन 0.4-0.6 मिमी के व्यास के साथ डायमंड-कोटेड केबलों की एक श्रृंखला का उपयोग करती है, जो सटीक कटौती को सक्षम करती है और सटीकता और दक्षता के लिए एक नया मानक स्थापित करती है। न्यूमेटिक वायर टेंशनिंग, हाइड्रोलिक सिलेंडर सपोर्ट और बेलो-प्रोटेक्टेड लिनियर रेल्स जैसी सुविधाओं के साथ, वायर-आधारित गैंगसॉ कचरे को काफी कम करता है, स्थायित्व बढ़ाता है, और पारंपरिक मशीनों की तुलना में काटने की प्रक्रिया को लगभग तीन गुना तेज कर देता है।

दिसंबर 2024 तक चालू होने की उम्मीद वाला यह रणनीतिक निवेश, परिचालन उत्कृष्टता को बढ़ाने वाली नवीन टेक्नोलॉजीजों को अपनाने के लिए ओटीएल के समर्पण का एक प्रमाण है। इससे कंपनी अपने ग्राहकों को, अद्वितीय गुणवत्ता प्रदान कर सकेगी, विशेष रूप से उच्च-स्तरीय रेसिडेंशियल और कमर्शियल कंस्ट्रक्शन सेगमेंट में।

2. ग्रेटर नोएडा में 21,000 वर्ग मीटर शोरूम के साथ विस्तार

बाजार में अपनी उपस्थिति को मजबूत करने के लिए ओरिएंटल ट्राइमेक्स लिमिटेड साइट-4, ग्रेटर नोएडा में बिल्डिंग मटेरियल मार्केट में 21,000 वर्ग फुट के विशाल शोरूम के आगामी लॉन्च की घोषणा करते हुए उत्साहित है। रणनीतिक रूप से गौतमबुद्ध नगर जिले के केंद्र में स्थित, यह शोरूम-कम-गोडाउन सभी फ्लोरिंग समाधानों के लिए वन-स्टॉप डेस्टिनेशन बनने के लिए तैयार है।

आगामी जेवर हवाई अड्डे और ग्रेटर नोएडा में परिकल्पित एयरोसिटी को देखते हुए, इस शोरूम का स्थान विशेष रूप से रणनीतिक है। इन विकासों से क्षेत्र में तेजी से विकास होने की उम्मीद है और ओटीएल क्षेत्र की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। कंपनी ने राइट इश्यू के माध्यम से धन जुटाने के बाद दिल्ली में एक नए शोरूम के साथ अपने पदचिह्न का विस्तार करने की भी योजना बनाई है, जिससे बाजार में उसकी स्थिति और मजबूत होगी।

द इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स (आईआईए) द्वारा डिज़ाइन एप्रिसिएशन नाइट का आयोजन

भोपाल। द इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स (आईआईए) भोपाल सेंटर ने होटल मैरियट में एक भव्य आयोजन किया, जिसमें दो प्रमुख कार्यक्रम डिज़ाइन यात्रा का शुभारंभ और प्रतिष्ठित डिज़ाइन एप्रिसिएशन नाइट 2024 शामिल थे। इस अवसर पर प्रदेशभर के आर्किटेक्ट्स, डिज़ाइन पेशेवर और वास्तुकला से जुड़े अन्य प्रमुख लोग उपस्थित थे।

आईआईए भोपाल सेंटर के चेयरमैन अक्षय सेलुकर ने बताया कि डिज़ाइन यात्रा एक नई पहल है, जिसमें देश के विभिन्न आर्किटेक्ट्स ने अपने अद्वितीय डिज़ाइन प्रस्तुत किए। इन डिज़ाइनों को आगे आर्किटेक्चर कॉलेजों और सार्वजनिक स्थलों पर प्रदर्शित किया जाएगा, ताकि छात्र और अन्य लोग इन पर अध्ययन कर सकें और अपनी रचनात्मकता को और अधिक निखार सकें। इस यात्रा में आईआईए अवार्ड्स की

शॉर्टलिस्टेड प्रविष्टियों को भी प्रदर्शित किया गया। इस पहल का मुख्य उद्देश्य आर्किटेक्चर में उत्कृष्टता को बढ़ावा देना और समाज में क्रिएटिविटी और नवाचार को प्रोत्साहित करना है।

डिज़ाइन एप्रिसिएशन नाइट 2024 में कई वास्तुकारों को उनके अद्वितीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में आर्किटेक्ट नारायण पाठे को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाज़ा गया। इसके अलावा, विभिन्न श्रेणियों में आर्किटेक्ट दिव्या सिंघल, गौरव उपाध्याय, कुलवीर सिंह, मायूरी सक्सेना, मोनिका चौहान, अपूर्व गुप्ता, दीपक कुमार, सौरभ सोनी, जया जैन, दीपा अग्रवाल, उत्कर्ष जैन, कमल रूप सिंह, दीपक झा, नवनीत पांडे, रोहित गिरी, अक्षत जैन, आयुषी ताम्रकार, एस.एम. हुसैन, अनुजा श्रीवास्तव, आशुतोष नेमा, हेमांगी वल्लभ, और अनुष्का जैन को उनके उत्कृष्ट डिज़ाइन के लिए अवार्ड दिए गए।

टी20 विश्व कप के लिए पाकिस्तान टीम का ऐलान, इसे मिली कप्तानी

लाहौर (एजेंसी)। तेज गेंदबाज फातिमा सना को आगामी महिला टी-20 विश्वकप के लिए पाकिस्तान की टीम का कप्तान बनाया गया है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने टी-20 विश्वकप 2024 के लिए तेज गेंदबाज फातिमा सना को 15 सदस्यीय टीम का कप्तान नियुक्त किया है। उन्हें निदा डार की जगह कप्तान बनाया गया है।

22 वर्षीय फातिमा के लिए यह पहला अवसर होगा जब वह किसी भी आईसीसी स्पर्धा इवेंट में पाकिस्तान की कप्तानी करेंगी। उन्होंने पहले दो बार एकदिवसीय पाकिस्तानी टीम का नेतृत्व किया है। इस मुकाबले में पाकिस्तान ने न्यूजीलैंड पर जीत हासिल की थी। राष्टीय चयन समिति के द्वारा कप्तानी में किए गए इस बदलाव के अलावा पाकिस्तान की टीम पहले की जैसी ही है।

पिछले महीने उनकी जो टीम महिला टी-20 एशिया कप कि लिए गई थी, उसमें बस एक बदलाव किया गया है। विकेटकीपर बल्लेबाज नाजिहा अल्वी की जगह बल्लेबाज सदफ शमास को टीम में शामिल किया गया है। सदाफ वर्ष 2023 के महिला टी-20 विश्वकप में भी टीम का हिस्सा थीं। उल्लेखनीय है कि महिला टी-20 विश्वकप तीन अक्तूबर से शुरू होगा। पाकिस्तान ग्रुप ए में ऑस्ट्रेलिया, भारत, न्यूजीलैंड और श्रीलंका के साथ है। बंगलादेश में राजनीतक अस्थिरता के कारण टूर्नामेंट को संयुक्त अरब अमीरात में स्थानांतरित कर दिया गया है लेकिन अभी तक टूर्नामेंट के संशोधित कार्यक्रम की घोषणा नहीं की गई है।

महिला टी-20 विश्वकप के लिए पाकिस्तान की टीम इस प्रकार है

फातिमा सना (कप्तान), आलिया रियाज, डायना बेग, गुल फिरोजा, इराम जावेद, मुनीबा अली (विकेटकीपर), नश्रा संधू, निदा डार, ओमाइमा सोहेल, सदफ शमास, सादिया इकबाल (फिटनेस के आधार पर), सिदरा अमीन, सैयदा अरूब शाह, तस्मीया रबाब और तूबा हसन।

युवा शटलर तन्वी पत्री ने जीता एशियाई अंडर-15 का खिताब

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय खिलाड़ी तन्वी पत्री ने चीन के चेंग्दू में रविवार को खेले गए फाइनल में वियतनाम की थि थू हुयेन गुयेन को सीधे गेम में हराकर बैडमिंटन एशिया अंडर-17 एवं अंडर-15 जूनियर चैंपियनशिप में अंडर-15 वर्ग में लड़कियों का एकल खिताब जीता। शीर्ष वरीयता प्राप्त 13 वर्षीय तन्वी ने 34 मिनट तक चले फाइनल मुकाबले में अपनी दूसरी वरीयता प्राप्त प्रतिद्वंद्वी पर 22-20 21-11 से जीत हासिल की। तन्वी इस जीत से सामिया इमाद फारूकी और तस्नीम मीर की सूची में शामिल हो गईं, जिन्होंने क्रमशः 2017 और 2019 में अंडर-15 लड़कियों का एकल खिताब जीता था। तन्वी ने पूरे टूर्नामेंट में अपना दबदबा बनाए रखा और उन्होंने जो पांच मैच खेले उनमें एक भी गेम नहीं हारा।

फाइनल के पहले गेम में तन्वी एक समय 11-17 से पीछे चल रही थी लेकिन इसके बाद वियतनाम की खिलाड़ी ने कई गलतियां की जिसका फायदा उठाकर भारतीय खिलाड़ी पहला गेम अपने नाम पर करने में सफल रही। तन्वी ने दूसरे गेम में अपनी प्रतिद्वंद्वी को कोई मौका नहीं दिया और मैच जीत कर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। इस तरह से भारत ने इस प्रतियोगिता में एक स्वर्ण और एक कांस्य पदक जीता। ज्ञान दत्तू टीटी ने शनिवार को अंडर-17 वर्ग में लड़कों की एकल स्पर्धा में कांस्य पदक जीता था।

ओलंपिक स्वर्ण पदक जीतने के बाद रिकॉर्ड 25वें ग्रैंड स्लैम खिताब पर नोवाक जोकोविच की निगाह

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। पेरिस ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने के बाद उत्साह से भरे नोवाक जोकोविच सोमवार से यहां शुरू होने वाले अमेरिकी ओपन टेनिस टूर्नामेंट में रिकॉर्ड 25वां ग्रैंड स्लैम खिताब जीतने के लिए कोर्ट पर उतरेंगे। जोकोविच ने पेरिस में पुरुष एकल में स्वर्ण पदक जीता। उनके नाम पर 24 ग्रैंड स्लैम सहित कुल 99 खिताब दर्ज हैं और वह यहां अपने खिताबों का शतक पूरा करने का प्रयास करेंगे।

इसके अलावा सबसे अधिक सप्ताह तक विश्व का नंबर एक खिलाड़ी बने रहने का रिकॉर्ड भी जोकोविच के नाम पर है। जोकोविच ने कहा, 'लोग मुझसे पूछते हैं कि अब तो आपने स्वर्ण पदक भी जीत लिया है तो फिर अब हासिल करने के लिए क्या बचा है लेकिन मेरे अंदर अब भी प्रतिस्पर्धा करने की भावना है। मैं आगे भी इतिहास बनाना चाहता हूं और अपने करियर के इस दौर का पूरा आनंद लेना चाहता हूं।

सर्बिया के इस 37 वर्षीय खिलाड़ी का अमेरिकी ओपन के पहले दौर में सामना मोल्दोवा के 138वीं रैंकिंग वाले राडू अल्बोट से होगा। अमेरिकी ओपन में रोजर फेडरर के बाद कोई भी खिलाड़ी लगातार टूर्नामेंट नहीं जीत पाया है और अब जोकोविच के पास यह मौका है। फेडरर ने 2004 से लेकर 2008 तक लगातार पांच खिताब जीते थे। जोकोविच को इस बार दूसरी वरीयता दी गई है। जोकोविच को स्पेन के 21 वर्षीय कार्लोस अल्कराज से कड़ी चुनौती मिलने की संभावना है, लेकिन वह अमेरिकी ओपन में अपना पांचवा खिताब जीतने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

आपकी खेल भावना और विशेष मुस्कान की कमी खलेगी, धवन के संन्यास पर बोले कोहली

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने लंबे समय तक अपने साथी रहे शिखर धवन को भारत के सबसे भरोसेमंद सलामी बल्लेबाजों में से एक करार दिया और कहा कि उनके उत्साह, खेल भावना और विशिष्ट मुस्कान की कमी खलेगी लेकिन उनकी विरासत हमेशा बनी रहेगी।

शीर्ष क्रम के प्रमुख बल्लेबाज धवन ने शनिवार को क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास की घोषणा की। कोहली ने एक्स पर लिखा, 'शिखर, आपके पदार्पण पर साहसिक प्रदर्शन से लेकर भारत के सबसे भरोसेमंद सलामी बल्लेबाजों में से एक बनने तक, आपने हमें अनगिनत यादें दी हैं। खेल के प्रति आपके जुनून, आपकी खेल भावना और आपकी ट्रेडमार्क मुस्कान की कमी खलेगी लेकिन आपकी विरासत हमेशा बनी रहेगी। पूर्व भारतीय कप्तान ने कई यादें देने के लिए 'गब्बर' के नाम से मशहूर धवन का आभार व्यक्त किया और इस 38 वर्षीय खिलाड़ी को भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा, 'ढेर सारी यादें देने, अविस्मरणीय प्रदर्शन करने और हमेशा जीजान से खेलने के लिए आपका आभार। गब्बर आपको मैदान के बाहर की अगली पारी के लिए शुभकामनाएं। धवन ने कोहली और रोहित शर्मा के साथ मिलकर सीमित ओवरों की क्रिकेट में लंबे समय तक भारतीय शीर्ष क्रम को मजबूती दी थी। कोहली और धवन दोनों पश्चिम दिल्ली के रहने वाले हैं और उन्होंने लगभग एक साथ अपने क्रिकेट करियर की शुरुआत की। कोहली और धवन लगभग एक दशक तक भारतीय टीम में साथी खिलाड़ी रहे।

जो रूट की 62 रन की पारी आई काम, इंग्लैंड ने पहले टेस्ट में श्रीलंका को हराया

मैनचेस्टर (एजेंसी)। जो रूट ने नाबाद 62 रन की पारी खेली जिसकी मदद से इंग्लैंड ने खराब शुरुआत से उबरकर श्रीलंका को पहले टेस्ट मैच में पांच विकेट से हराया। इंग्लैंड के सामने 205 रन का लक्ष्य था लेकिन उसकी टीम एक समय तीन विकेट पर 78 रन बनाकर संघर्ष कर रही थी। रूट ने यहीं से जिम्मेदारी संभाली। उन्हें हैरी ब्रूक (32) का अच्छा सहयोग मिला जिससे इंग्लैंड लगातार चौथा टेस्ट मैच जीतने में सफल रहा। इंग्लैंड ने पांच विकेट पर 205 रन बनाए। इंग्लैंड ने इससे पहले वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन टेस्ट मैच की श्रृंखला में क्लीन स्वीप किया था। इससे पहले श्रीलंका की टीम अपनी दूसरी पारी में 326 रन पर आउट हो गई थी। उसकी तरफ से सातवें नंबर पर बल्लेबाजी के लिए उतरे कामिंडु मेंडिस ने सर्वाधिक 113 रन बनाए। उनके आउट होने के बाद श्रीलंका की पारी बिखर गई। मेंडिस का यह चार टेस्ट मैच के अपने करियर का तीसरा शतक है। श्रीलंका ने अपने आखिरी चार विकेट 26 रन के अंदर गंवाए। दिनेश चंडीमल (79) आउट होने वाले अंतिम बल्लेबाज थे। इन दोनों टीम के बीच दूसरा टेस्ट मैच लॉर्ड्स में गुरुवार से खेला जाएगा।

ऑफ द फील्ड

इन कारोबार में इन्वेस्ट कर रहे हैं भारतीय क्रिकेटर

नईदिल्ली (एजेंसी)। पूर्व और वर्तमान क्रिकेटर खेल के साथ ही अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए इक्विटी और अन्य कम्पनियों में भी निवेश कर रहे इक्विटी निवेश कर रहे हैं। कुछ विभिन्न नए उपक्रमों के संस्थापक बन रहे हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक एमएस धोनी ने आईपीओ-बाउंड ज्वैलरी मेकर ब्लूस्टोन में हिस्सेदारी हासिल की है जबकि वेंचर फंड पीक एक्सवी पार्टनर्स स्टार बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर के स्पोर्ट्स शू स्टार्टअप का समर्थन करने के लिए तैयार है। फाइलिंग के अनुसार पूर्व क्रिकेटर युवराज सिंह ने स्पोर्ट्स एथलीजर फर्म एजिलिटास स्पोर्ट्स में हिस्सेदारी ली है जिसकी स्थापना अभिषेक गांगुली ने की थी जो प्यूमा इंडिया के प्रबंध निदेशक थे।

सौदों से अवगत एक व्यक्ति ने कहा, एंडोर्समेंट सौदों पर ध्यान केंद्रित करने से एथलीट अब इक्विटी सौदों में अधिक रुचि ले रहे हैं, साथ ही कंपनी के संचालन में गहरी भूमिकाएं भी निभा रहे हैं-खासकर वे जो अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले चुके हैं, लेकिन एक बड़ा ब्रांड मूल्य बना चुके हैं। यह वैश्विक सेलिब्रिटी सौदों की तरह ही रुचि का एक बड़ा क्षेत्र बन रहा है।

मीडिया ने पहली बार तेंदुलकर के पूर्व स्विगी इंस्टामार्ट प्रमुख कार्तिक गुरुमूर्ति के साथ उनके एथलेटिक ब्रांड को लॉन्च करने के लिए सहयोग के बारे में सूचना दी थी। मामले के जानकार लोगों ने कहा कि सेलेब क्रिकेटर नए उपभोक्ता व्यवसायों को भी विकसित कर रहे हैं, जो आने वाले महीनों में उभरने की संभावना है।

स्टार्टअप्स का समर्थन करने वाले शुरुआती सेलेब्रिटीज में से एक धोनी ने कई तरह के व्यवसायों में निवेश किया है, जिसमें ड्रोन स्टार्टअप गरुड़ एयरोस्पेस, बेंगलुरु स्थित फिटनेस स्टार्टअप तगड़ा रहो, कार प्लेटफॉर्म कार्स24 और डिजिटल लेंडिंग प्लेटफॉर्म खाताबुक शामिल हैं। 2015 में अपनी खुद की निवेश कंपनी यूवीकैन वेंचर्स बनाने वाले सिंह ने ईजीडाइनर, वेलवर्सड और हेल्थियंस सहित अन्य में निवेश किया है।

इन क्रिकेटरों ने किया निवेश

क्रिकेटर्स	स्टार्टअप्स	ब्रांड वैल्यू
सचिन तेंदुलकर	स्त्रञ्ञ 10 एथलीजर, जेटसिंथेसिस, स्पिनी	91.3 मिलिन डॉलर
एम एस धोनी	ब्लूस्टोन, गरुड़ एयरोस्पेस, खाताबुक	95.8 मिलिनय डॉलर
विराट कोहली	रोगन, वन8 (प्यूमा), रेज कॉफी	227.9 मिलियन डॉलर
रोहित शर्मा	लियो1, वीरूट्स वेलनेस, रैपिडोबोटिक्स	41 मिलियन डॉलर
हार्दिक पांड्या	हार्दिक पंड्या, अरेटो, लेंडेनक्लब	38.4 मिलियन डॉलर

सौरव गांगुली नहीं, युवराज सिंह हो सकते हैं दिल्ली कैपिटल्स के कोच

नईदिल्ली (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग के आगामी सीजन के लिए दिल्ली कैपिटल्स नए कोच के रूप में युवराज सिंह से बातचीत कर सकती है। दिल्ली कैपिटल्स ने बीते महीने ही रिकी पोंटिंग को कोचिंग पद से विदाई दे दी थी। इसके बाद सौरव गांगुली ने खुद आगे आकर यह संभावना जताई थी कि वह खुद दिल्ली की कोचिंग करने के इच्छुक है। लेकिन इसी बीच गांगुली की बजाय युवराज सिंह का नाम सामने आ रहा है। इससे पहले, रिपोर्टों में दावा किया गया था कि युवराज गुजरात टाइटंस के कोच के रूप में आशीष नेहरा की जगह ले सकते हैं लेकिन सूत्र बताते हैं कि नेहरा गुजरात में बने रहेंगे जिसके चलते युवराज पर सबकी नजरें आ गई थीं। युवराज के पास भले ही कोचिंग का कोई पूर्व अनुभव नहीं है, लेकिन उन्होंने पिछले कुछ वर्षों में शुभमन गिल, अभिषेक शर्मा और पंजाब के कुछ अन्य क्रिकेटरों के साथ मिलकर काम किया है। दिल्ली के पास अनुभवी कोच रिकी पोंटिंग थे। ऐसे में युवराज सिंह की एंट्री से दिल्ली अपने बल्लेबाजी विभाग को मजबूत कर सकती है। युवराज ने भारत के लिए 40 टेस्ट, 304 एकदिवसीय और 58 टी20ई खेले हैं। 2007 और 2011 में भारत की टी20 और वनडे विश्व कप टीम में उनकी प्रमुख भूमिका रही थी। दिल्ली कैपिटल्स की बात करें तो वह पिछले लगातार तीन सीजन से प्लेऑफ में नहीं पहुंच पा रही। आखिरी बार दिल्ली 2020 के आईपीएल फाइनल में पहुंची थी तब वहां उन्हें मुंबई इंडियंस के हाथों हार झेलनी पड़ी थी। अब क्योंकि रिकी पोंटिंग दिल्ली के साथ नहीं है तो ऐसे में फ्रेंचाइजी भी उनके जितने बड़े कद के क्रिकेटर को लाना चाहेगी।

सिंकिफील्ड कप शतरंज

अलीरेजा से जीत बाजी गुकेश के हाथ से निकली

सेंट लुईस (एजेंसी)। ग्रांड चैस टूर के अंतिम पड़ाव सिंकफील्ड कप क्लासिकल शतरंज सुपर ग्रांड मास्टर्स टूर्नामेंट के चौथे राउंड में भारत के डी गुकेश फ्रांस के अलीरेजा फिरौजा के खिलाफ एक लगभग जीती बाजी नहीं जीत पाये और मुक़ाबला बेनतीजा रहा , मार्च में फीडे कैंडिडैट के दौरान गुकेश को पहले भाग में अलीरेजा से हार का सामना करना पड़ा था और अंतिम राउंड के ठीक पहले गुकेश नें अलीरेजा को हराकर ही कैंडिडैट टूर्नामेंट जीतना काफी हद तक तय कर दिया था, इस मुक़ाबले में सफ़ेद मोहरो से खेल रहे गुकेश नें खेलो की 23वीं चाल में अपने हाथी को कुर्बान करते हुए खेल को काफी हद तक अपने पक्ष में कर किया था पर 50वीं चाल में हाथी की एक गलत चाल नें अलीरेजा को वापसी का मौका दे दिया और अंत में गुकेश के पास एक अतिरिक्त ऊंट होते हुए भी खेल तकनीकी तौर पर बेनतीजा रहा । अन्य मुकाबलों में यूएसए के वेसली सो नें रूस के यान नेपोमनिशी को पराजित करते हुए अपनी पहली जीत दर्ज की और अब वह अलीरेजा के साथ 2.5 अंक बनाकर सयुंक्त बढ़त में शामिल हो गए है । भारत के आर प्रज्ञानन्दा नें नीदरलैंड के अनीश गिरि के खिलाफ काले मोहरो से इंग्लिश ओपनिंग में 33 चालों में बाजी ड्रॉ खेली , अन्य दो मुकाबलों में भी चीन के डिंग लीरेन नें यूएसए के फबियानों करूआना से और फ्रांस के मकसीम लागरेव नें उज़्बेकिस्तान के अब्दुसत्तोरोव से ड्रॉ खेला । फिलहाल गुकेश और प्रज्ञानन्दा 2 अंक बनाकर सयुंक्त दूसरे स्थान पर चल रहे है ।

पाकिस्तान-बांग्लादेश टेस्ट

मुशफिकुर रहीम के 191 रन, बांग्लदेश ने बनाए 565 रन

करांची (एजेंसी)। मुशफिकुर रहीम ने 191 रन की शानदार पारी खेलने के साथ ही मेहदी हसन मिराज (77) के साथ 7वें विकेट के लिए 196 रन की रिकॉर्ड साझेदारी की जिससे बांग्लादेश ने शनिवार को यहां पहले टेस्ट में पाकिस्तान के तेज आक्रमण को कुंद करते हुए चौथे दिन अपनी पहली पारी में 565 रन बनाए। मुशफिकुर ने अपनी साढ़े 8 घंटे से अधिक की मैराथन पारी के दौरान 341 गेंद में एक छक्का और 22 चौके जड़कर बांग्लादेश को पहली पारी में 117 रन की बड़ी बढ़त दिलाई। यह बांग्लादेश का घर से बाहर तीसरा सबसे बड़ा स्कोर था। उसके बल्लेबाजों ने घास वाली पिच पर चार तेज गेंदबाजों के साथ उतरने की पाकिस्तान की योजना को विफल कर दिया।

पिच बल्लेबाजी के लिए आसान दिख रही है। अपनी पहली पारी छह विकेट पर 448 रन पर घोषित करने वाले पाकिस्तान ने दूसरी पारी में सलामी बल्लेबाज सैम अयूब का विकेट जल्दी खो दिया और स्टंप्स के समय उसका स्कोर एक विकेट पर 24 रन था। टीम अब भी बांग्लादेश से 94 रन पीछे है। अब्दुल्ला शफीक 12 रन जबकि कप्तान शान मसूद 9 रन बनाकर क्रीज पर मौजूद है। मुशफिकुर ने टेस्ट करियर की अपनी 11वीं शतकीय पारी के दौरान मैदान की हर दिशा में शॉट लगाए।

भारतीयों के लिए अपना क्रिकेट फॉर्मेट बदलने को मजबूर हुआ इंग्लैंड

लंदन (एजेंसी)। क्रिकेट का जन्मदाता इंग्लैंड अब भारतीय दर्शकों और निवेशकों को आकर्षित करने के लिए अपने घरेलू क्रिकेट लीगों में बड़े बदलाव की तैयारी कर रहा है। इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) अपनी घरेलू लीगों में न केवल फॉर्मेट में बदलाव करने की योजना बना रहा है, बल्कि वह भारतीय बाजार से जुड़े निवेशकों को लुभाने के लिए अपनी टीमों में 49 प्रतिशत हिस्सेदारी बेचने के लिए भी तैयार है। यह कदम अगले महीने से शुरू होने की संभावना है, जिसका मुख्य उद्देश्य भारतीय दर्शकों की संख्या में वृद्धि और निवेश को आकर्षित करना है।

मुख्य बदलाव और योजनाएं

घरेलू लीग का फॉर्मेट– ईसीबी वर्तमान में अपनी प्रमुख घरेलू प्रतियोगिता 'द हंड्रेड' को भारतीय दर्शकों की पसंद के अनुसार बदलने की योजना बना रहा है। इस प्रतियोगिता में अभी 100 गेंदों का फॉर्मेट है, लेकिन ईसीबी 2028 तक इसे पारंपरिक टी20 फॉर्मेट में बदलने के लिए तैयार है। यह बदलाव भारतीय दर्शकों की पसंद को ध्यान में रखकर किया जाएगा, जो कि टी20 फॉर्मेट के बड़े प्रशंसक हैं।

हिस्सेदारी और निवेश– ईसीबी अपनी टीमों में 49 प्रतिशत हिस्सेदारी बेचने की योजना बना रहा है, ताकि भारतीय निवेशकों को आकर्षित किया जा सके। भारतीय निवेशकों को लुभाने के लिए यह कदम उठाया जा रहा है, जिसमें आईपीएल फ्रेंचाइजी और अन्य बड़े भारतीय निवेशकों की भागीदारी की उम्मीद की जा रही है। इससे इंग्लिश क्रिकेट को बड़े निवेश प्राप्त होने की संभावना है।

फ्रेंचाइज़ी स्वामित्व– आईपीएल फ्रेंचाइजियों की इंग्लिश टीमों में हिस्सेदारी खरीदने में भारी रुचि है। ईसीबी इस दिशा में और कदम उठाने की योजना बना रहा है, जिसमें टीमों के नाम बदलने पर भी विचार किया जा रहा है, ताकि भारतीय निवेशकों को आकर्षित किया जा सके। यह एक बड़ा रणनीतिक बदलाव होगा, जिससे इंग्लिश क्रिकेट में पारंपरिक मॉडल से हटकर वैश्विक बाजारों की ओर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

भविष्य की योजनाएं– ईसीबी का यह रणनीतिक बदलाव इंग्लिश क्रिकेट को नए दिशा में ले जा सकता है, जहां भारतीय बाजार का महत्वपूर्ण प्रभाव रहेगा। यह कदम इस बात को दर्शाता है कि भारतीय दर्शक और निवेशक अब इंग्लिश क्रिकेट के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण हो गए हैं। ईसीबी भविष्य में भारतीय बाजार को ध्यान में रखते हुए और भी बदलाव कर सकता है, जो कि इंग्लिश क्रिकेट के विकास के लिए महत्वपूर्ण होंगे।

लंकाशायर क्रिकेट क्लब की रणनीति – लंकाशायर क्रिकेट क्लब ने भारतीय दर्शकों को आकर्षित करने के लिए पहले से ही कदम उठाने शुरू कर दिए हैं। क्लब ने अपने मैचों का भारत में प्रसारण शुरू किया है और जियो टीवी के साथ साझेदारी करके 25 लाख नए दर्शक जोड़े हैं। इसके अलावा, क्लब ने भारतीय खिलाड़ियों जैसे श्रेयस अय्यर, वॉशिंगटन सुंदर, और वेंकटेश अय्यर के साथ करार किया है, ताकि भारतीय दर्शकों से और गहरा संबंध बनाया जा सके। लंकाशायर की इस रणनीति का मुख्य उद्देश्य भारतीय बाजार में अपनी उपस्थिति को मजबूत करना है।

लंकाशायर क्लब के अतिरिक्त प्रयास – लंकाशायर क्लब ने भारतीय दर्शकों के साथ और जुड़ाव बढ़ाने के लिए अपने सुपर जायंट्स टीम के साथ भी बातचीत की है। क्लब के मालिक डेनियल गिडनी ने बताया कि उन्होंने 2019 में भारत-पाक मैच के दौरान भारतीय क्रिकेट की ताकत को पहचाना था। उस समय उन्होंने अपने होटल और मैदान में भारी भीड़ देखी, जिससे उन्हें भारतीय बाजार की महत्वपूर्णता का एहसास हुआ। अब वे इसे अपनी रणनीति का केंद्र मानते हैं। लंकाशायर क्लब के होटल का उल्लेख विशेष रूप से 2019 के भारत-पाकिस्तान विश्व कप मैच के संदर्भ में किया गया है। इस मैच के दौरान, लंकाशायर क्लब के होटल, जिसका नाम 'हिल्टन होटल' बताया गया है, में भारतीय दर्शकों की अत्यधिक भीड़ जुटी थी। इस दौरान, हिल्टन होटल में कमरों की मांग बहुत अधिक बढ़ गई थी। होटल के कमरों की कीमतें उस समय ?3 लाख (भारतीय रुपये) से भी अधिक हो गई थीं, जो सामान्य से काफी ज्यादा थीं। यह घटना इंग्लैंड में भारतीय दर्शकों की जबरदस्त उपस्थिति और उनकी खरीद क्षमता को दर्शाती है।

संक्षिप्त समाचार

मान सरकार के खिलाफ राज्य कर्मचारियों में रोष, पेंशनर्स संयुक्त मोर्चा ने किया विरोध प्रदर्शन

कपूरथला, एजेंसी। आम आदमी पार्टी शासित पंजाब में पेंशन से जुड़ी मांग को लेकर पंजाब कर्मचारी एवं पेंशनर्स संयुक्त मोर्चा की तरफ से प्रदेश सरकार के खिलाफ शनिवार को प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनकारियों ने बताया कि मुख्यमंत्री भगवंत मान प्रदेश के कर्मचारियों के साथ मुलाकात नहीं कर रहे हैं। सरकार द्वारा मानी गई मांगों को अब तक लागू नहीं किया गया। मौके पर मौजूद नेताओं ने बताया कि मुख्यमंत्री भगवंत मान बार-बार मीटिंग करते हैं और फिर लिए गए फैसलों से पीछे हट जाते हैं। पंजाब के कर्मचारियों और पेंशनरों से मिलने से सीएम के इनकार के बाद कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के संयुक्त मोर्चे के नेताओं में रोष है। शनिवार को मुख्यमंत्री पुतला फूंका गया। प्रदर्शन कर रहे नेताओं ने बताया कि मुख्यमंत्री ने विभाग में प्रमोशन करने, कच्चे कर्मचारियों को वेतन अवकाश का बकाया देने, वेतन आयोग की रिपोर्ट सही ढंग से लागू करने का वादा किया था, लेकिन सरकार सभी वादों से मुकर गई। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि कच्चे-पक्के कर्मचारियों की बहाली और पक्का करने की मांगें जल्द मान ली जाएं, नहीं तो पंजाब में बड़े स्तर पर संघर्ष होगा। इसके अलावा बठिंडा में शनिवार को रिटायर्ड पुलिस कर्मियों की ओर से अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन किया गया। मांगें समय से पूरा नहीं करने पर सरकार के खिलाफ संघर्ष तेज करने की चेतावनी भी दी। प्रदर्शनकारियों ने कहा जब से भगवंत मान पंजाब के मुख्यमंत्री बने हैं, उस दिन से पेंशनरों की कोई सुनवाई नहीं हो रही। सरकार डीए की किश्त और पिछला बकाया नहीं दे रही। जब तक मांगें पूरी नहीं होंगी, तब तक संघर्ष करते रहेंगे।

महाराष्ट्र में फिर दरिंदगी, पैरोल पर आए हत्या के आरोपी ने 15 वर्षीय लड़की से किया रेप

मुंबई, एजेंसी। पैरोल पर बाहर आए एक हत्या के आरोपी ने महाराष्ट्र के सांगली शहर में 15 वर्षीय एक लड़की के साथ कथित तौर पर बलात्कार किया। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। एक अधिकारी ने बताया कि आरोपी संजय प्रकाश माने (34) को सुबह गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने बताया कि माने 2011 में हुई हत्या के एक मामले में आरोपी है और दो महीने पहले ही पैरोल पर बाहर आया था। अधिकारी ने बताया कि शुक्रवार रात करीब साढ़े नौ बजे लड़की दुकान पर जाने के लिए निकली थी, तभी आरोपी ने उसे रास्ते में रोक लिया और जबरन अपने घर ले जाकर उसके साथ बलात्कार किया। उन्होंने बताया कि लड़की ने शनिवार को अपनी मां को इस घटना की जानकारी दी, जिसके बाद शिकायत दर्ज कराई गई और दो घंटे के भीतर आरोपी को पकड़ लिया गया। अधिकारी ने बताया कि माने ने पिछले महीने भी लड़की के साथ कथित तौर पर छेड़छाड़ की थी। उन्होंने बताया कि आरोपी के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता और यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (पोक्सो) अधिनियम के संबंधित प्रावधानों के तहत मामला दर्ज किया गया है। महाराष्ट्र के पालघर जिले में एक निजी स्कूल की कैंटीन में काम करने वाले एक नाबालिग ने सात वर्षीय छात्रा का कथित तौर पर यौन उत्पीड़न किया। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। नायगांव थाने के वरिष्ठ निरीक्षक रमेश भामे ने बताया कि शिकायत के आधार पर पुलिस ने शुक्रवार को उत्तर प्रदेश के रहने वाले 16 वर्षीय आरोपी को हिरासत में ले लिया और उसे 'रिमांड होम' भेज दिया। उन्होंने बताया कि कथित घटना नायगांव स्थित एक निजी स्कूल में घटी। जब दूसरी कक्षा में पढ़ने वाली बच्ची ने बृहस्पतिवार को स्कूल कैंटीन जाने से इनकार कर दिया और अपनी कक्षा अध्यापिका को बताया कि वहां काम करने वाला एक अंकल उसे परेशान करता है। उन्होंने बताया कि स्कूल के प्रधानाध्यापक को इसकी सूचना दी गई तथा बच्ची से आगे की पूछताछ में पता चला कि आरोपी ने पिछले 15 दिनों में तीन-चार बार उसका यौन उत्पीड़न किया।

मार्च 2026 तक देश को नक्सली हिंसा से मुक्त करा देंगे: अमित शाह

रायपुर, एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को कहा कि नक्सलियों से लड़ाई आखिरी चरण में है और यदि वे अपना रास्ता नहीं बदलते हैं तो अंतिम प्रहार होगा और हम देश को मार्च 2026 तक नक्सल समस्या से मुक्त कर देंगे। यह बात उन्होंने छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में नक्सल प्रभावित राज्यों की अंतरराज्यीय समीक्षा बैठक के बाद एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कही। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि नक्सलवाद के खिलाफ रूथलेस (निर्मम) रणनीति के साथ अंतिम प्रहार करने का वक्त आ गया है। हमारा मानना है कि वामपंथी उग्रवाद देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। पिछले चालीस सालों में करीब 17 हजार लोगों की जान गई है। जब से केंद्र में मोदी सरकार बनी इस समस्या को चैलेंज के रूप में स्वीकार किया। शाह ने कहा, जिनके हाथ में हथियार है उनके हाथ से हथियार छुड़ाना और जो नहीं छोड़ रहे हैं उन्हें इंगेज करने की दिशा में काम किया गया। इसके साथ ही वामपंथ उग्रवाद से प्रभावित क्षेत्र का विकास करना भी हमारी प्राथमिकता रही है। कई उपलब्धियां रही हैं। साल 2022 में चार दशकों में मृत्यु का प्रतिशत सबसे कम रहा। टॉप 14 नक्सली लीडर्स को मार गिराया गया। हमने दो उद्देश्यों को लेकर काम किया। पहला नक्सल क्षेत्रों में कानून का शासन स्थापित करना और दूसरा इन इलाकों को विकसित करना। केंद्रीय गृहमंत्री ने आगे कहा, बिहार, झारखंड, ओडिशा, मध्य प्रदेश और कुछ हद तक महाराष्ट्र नक्सल समस्या से मुक्त हुआ है। वर्ष 2004 से 2014 तक 16 हजार घटनाएं हुई थीं और 2014 के बाद से अब तक करीब सात हजार घटनाएं हुई हैं। करीब 53 प्रतिशत की कमी आई है। शाह ने आगे कहा, 'वामपंथी उग्रवाद की वजह से लोग निरक्षर रह गए हैं उन्हें साक्षर बनाने राज्य सरकार और केंद्र सरकार पहल करेगी। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) की तर्ज पर एसआईए बनाएंगे। राज्य सरकार जल्द नई सरेंडर पॉलिसी की घोषणा करेगी। नक्सलियों ने शांति वार्ता पर उन्होंने ने अपील करते हुए कहा कि नक्सली सरेंडर करें, हथियार छोड़े हम उनकी चिंता करेंगे। समीक्षा बैठक में छत्तीसगढ़ और उसके पड़ोसी राज्यों के मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक स्तर के अधिकारियों के अलावा छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय और केन्द्र तथा राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल थे। शाह ने कहा कि शनिवार को हुई बैठक में वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित जिलों में कल्याण और विकास की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने की दिशा में प्रगति और अवसंरचना विकास के कार्यों की समीक्षा भी की गई।

गला घोंटकर 3 हिस्सों में काटा शव; गाजियाबाद में लव ट्राएंगल में हुई इंटीरियर डिजाइनर की हत्या

गाजियाबाद, एजेंसी। गाजियाबाद के नंदग्राम थाना क्षेत्र में पिछले हफ्ते से लापता एक इंटीरियर डिजाइनर की हत्या के आरोप में पुलिस ने एक महिला समेत तीन लोगों को गिरफ्तार किया। इस बारे में जानकारी देते हुए पुलिस ने बताया कि आरोपियों ने गला घोंटकर जान लेने के बाद मृतक के शरीर को तीन टुकड़ों में बांटकर नहर में फेंक दिया था। पुलिस ने मृतक के शरीर का एक हिस्सा बरामद कर लिया है, जबकि अन्य दो टुकड़ों की तलाश जारी है।

आरोपियों ने पुलिस को बताया कि लड़की के चक्कर में उन्होंने युवक की जान ले ली। पुलिस के मुताबिक 35 वर्षीय इंटीरियर डिजाइनर तरुण पंवार 16 अगस्त को राजनगर एक्सटेंशन इलाके से लापता हो गए थे और इस संबंध में उनके बहनोई अमन स्वामी ने अगले दिन गुमशुदगी दर्ज कराई थी। स्वामी ने कहा कि पंवार किसी काम से पास के मोरटा गांव के बाजार गए थे, लेकिन वह वापस नहीं लौटे और उनका मोबाइल फोन भी काम नहीं कर रहा था। पुलिस ने बताया कि एक गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने तीन आरोपियों पवन, वंश और अंजलि को गिरफ्तार किया। पुलिस उपायुक्त नगर राजेश कुमार सिंह ने संवाददाताओं को बताया कि आरोपियों से मिली जानकारी के बाद पुलिस ने बुलंदशहर जिले से बहने वाली गंग नहर के रामगढ़ जलप्रपात से तरुण के कुछ अंग बरामद किए हैं तथा शरीर के बाकी हिस्सों की तलाश की जा रही है। सिंह के अनुसार हत्या में प्रयुक्त एक कुदाल और एक दरांती, खून से सने दो गद्दे और आरोपियों द्वारा इस्तेमाल की गई एक कार तथा मृतक पंवार की एक अन्य कार भी बरामद की गई है।

कुतिया के साथ अननेचुरल सेक्स, वीडियो लीक होने पर दबोचा गया हवसी दरिंदा

गाजियाबाद, एजेंसी। सोशल मीडिया पर गाजियाबाद का एक साढ़े पांच मिनट का वीडियो वायरल हो रहा है। वीडियो में एक युवक कमरे में एक कुतिया के साथ अननेचुरल सेक्स करता नजर आ रहा है। यह मोदीनगर के बलवंतपुरा कॉलोनी की घटना है। कॉलोनी के लोगों ने बताया कि आरोपी युवक लंबे समय से यह हैवानियत कर रहा है। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।

जानकारी के मुताबिक, बलवंतपुरा कॉलोनी का एक युवक काफी समय से फीमेल डॉग को हवस का शिकार बना रहा था। उसकी इस हरकत से कॉलोनी के लोग परेशान थे। काफी समझाने के बाद भी वह इस घिनौनी करतूत से बाज नहीं आ रहा था। इसके बाद कॉलोनी के लोगों ने वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। आरोपी का वीडियो कॉलोनी के लोगों ने लीक कर दिया। साढ़े पांच मिनट के वीडियो में उसकी दरिंदगी कैद हो गई है। वीडियो में युवक की हैवानियत से फीमेल डॉग चीखती हुई नजर आ रही है। किसी ने छिपकर यह वीडियो शूट कर लिया। बलवंतपुरा कॉलोनी निवासी एक युवक ने इस संबंध में मोदीनगर थाने में तहरीर दी है। एसीपी मोदीनगर ज्ञान प्रकाश राय ने बताया कि तहरीर के आधार पर रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। आरोपी युवक सुरेंद्र को पकड़ लिया गया है। कॉलोनी के लोगों ने बताया कि बहुत समझाने के बाद भी युवक ऐसी हरकतें बार-बार कर रहा था। लीक हुए वीडियो पर सोशल मीडिया पर लोगों ने भारी नाराजगी जताई है। एक यूजर ने लिखा कि इस युवक की हरकत बहुत घटिया है।

तोता सहित पक्षियों को कैद करने, खरीदने और बेचने पर सजा

रायपुर, एजेंसी। बीजेपी शासित एक राज्य में तोतों और अन्य पक्षियों की खरीद-बिक्री पर रोक लगा दी गई है। इसके बावजूद पक्षियों की हो रही खरीद-बिक्री पर वन विभाग ने कड़ा संज्ञान लिया है। राज्य के प्रधान वन संरक्षक एवं वन प्रमुख ने कानूनन संरक्षण पाए जाने वाले तोतों और अन्य पक्षियों की राज्य के समस्त क्षेत्रों में धड़ल्ले से हो रही बिक्री पर रोक लगा दी थी। विभाग ने माना है कि उस आदेश पर कार्रवाई न करने के कारण पक्षी प्रेमियों में व्यापक रोष है। उनके अनुमंडल क्षेत्र के अंतर्गत किसी भी स्थान में यदि तोतों एवं अन्य पक्षियों की, जो वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम में है, उनकी खरीदी एवं बिक्री पर तत्काल रोक लगाएं। इस संबंध में नियमानुसार आवश्यक कार्रवाई की जाए और आम जनता तक यह सूचना प्रसारित की जाए कि तोता एवं अन्य पक्षी को घरों में पालना एवं खरीदी बिक्री वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के तहत अपराध की श्रेणी में आता है। इसमें सजा का प्रावधान है।

बसपा का अब किसी चुनाव में सपा या कांग्रेस से कोई गठबंधन नहीं होगा: मायावती

लखनऊ, एजेंसी। बसपा सुप्रीमो मायावती ने दो टूक कहा है कि बसपा का अब किसी चुनाव में सपा या कांग्रेस से कोई गठबंधन नहीं होगा। मायावती के बारे में मथुरा के एक बीजेपी विधायक की कथित आपत्तिजनक टिप्पणियों पर अखिलेश यादव द्वारा निंदा किए जाने और इसके बाद बसपा सुप्रीमो द्वारा सपा मुखिया का आभार जताने के बाद गठबंधन सियासत को लेकर अटकलें तेज हो गई थीं। रविवार को मायावती ने ऐसी सारी अटकलों पर अपनी ओर से फुल स्टॉप लगा दिया।

सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर एक के बाद एक दो प्रतिक्रियाओं में मायावती ने शनिवार को प्रयागराज में आयोजित कांग्रेस के संविधान सम्मान समारोह पर भी सवाल उठाया। इस कार्यक्रम में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी आए थे। मायावती ने लिखा कि संविधान सम्मान समारोह करने वाली कांग्रेस पार्टी को बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर के अनुयायी कभी माफ नहीं करेंगे, जिसने संविधान के मुख्य निर्माता बाबा साहेब को उनके जीते-जी और देहान्त के बाद भी भारतरत्न की उपाधि से सम्मानित नहीं किया। उन्होंने लिखा, इसके साथ ही, बाबा साहेब के मूवमेन्ट को गति देने वाले मान्यवर श्री कांशीराम जी का देहान्त होने पर इसी कांग्रेस ने केन्द्र में अपनी सरकार के रहते इनके सम्मान में एक दिन का भी राष्ट्रीय शोक तथा सपा सरकार ने भी राजकीय शोक घोषित नहीं किया। इनकी ऐसी दोगली सोच, चाल, चरित्र से जरूर सजग रहें।

मायावती ने आगे लिखा, इसके इलावा, केन्द्र में बीजेपी की सत्ता आने से पहले कांग्रेस ने अपनी सरकार में राष्ट्रीय जातीय जनगणना क्यों नहीं कराई थी जो अब इसकी बात कर रहे हैं, जवाब दें जबकि बीएसपी इसके हमेशा ही पक्षधर रही है, क्योंकि इसका होना कमजोर वर्गों के हित में बहुत जरूरी है। उन्होंने लिखा, इतना ही नहीं, संविधान के तहत् एससी/एसटी को मिले आरक्षण में अब वर्गीकरण व क्रीमीलेयर के जरिये, इसे निष्प्रभावी बनाने व खत्म करने की चल रही साजिश के विरोध में कांग्रेस, सपा व बीजेपी आदि का भी चुप्पी साधे रखना क्या यही इनका दलित प्रेम है, सचेत रहें।

गठबंधन क्या उचित होगा: अपनी प्रतिक्रिया में बसपा सुप्रीमो ने स्पष्ट कर दिया कि अब सपा या कांग्रेस से उनकी पार्टी का गठबंधन नहीं होगा। उन्होंने लिखा, सपा व कांग्रेस आदि जैसी इन आरक्षण विरोधी पार्टियों के साथ अब किसी भी चुनाव में इनसे कोई गठबन्धन आदि करना क्या एससी, एसटी व ओबीसी वर्गों के हित में उचित होगा। यह कतई नहीं होगा ऐसे में अब इनको खुद अपने दम पर खड़े होना है, यही सलाह है।

रेड स्क्वायर का बीमार-बूढ़ा आदमी है पुतिन, जेलेंस्की ने उड़ाया रूस के राष्ट्रपति का मजाक

कीव, एजेंसी। यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन का मजाक उड़ाया है। जेलेंस्की ने पुतिन को रेडस्क्वायर का बीमार बूढ़ा आदमी बताया। जेलेंस्की शनिवार को सोवियत संघ से यूक्रेन की आजादी के 33 साल पूरे होने पर बोल रहे थे। इस दौरान उन्होंने नव-विकसित यूक्रेनी ड्रोन मिसाइल का प्रचार किया और कहा कि यह मिसाइल रूस को युद्ध से पीछे धकेल देगी।

जेलेंस्की ने कहा कि नया हथियार पलियानित्सिया, घरेलू रूप से निर्मित ड्रोन की तुलना में तेज और अधिक शक्तिशाली है, जिसका उपयोग कीव ने अब तक रूस के खिलाफ लड़ने, उसकी तेल रिफाइनरियों और सैन्य हवाई क्षेत्रों पर हमला करने के लिए किया है। उन्होंने कहा कि हमारा दुश्मन अब जानेगा कि जवाबी कार्रवाई का यूक्रेनी तरीका क्या है।

जेलेंस्की ने रूस के 71 वर्षीय राष्ट्रपति पुतिन और मॉस्को से आने वाली परमाणु बयानबाजी का वर्णन करने के लिए उपहासपूर्ण भाषा का इस्तेमाल किया। उन्होंने एक वीडियो में कहा, रेड स्क्वायर का एक बीमार बूढ़ा व्यक्ति जो लगातार लाल बटन से सभी को धमकी देता है, वह अपनी कोई भी लाल रेखा हमें निर्देशित नहीं करेगा।

जेलेंस्की ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, मैं एक बार फिर इस बात पर जोर देना चाहता हूं कि हमारे नए हथियार निर्णय, जिसमें पलियानित्सिया भी शामिल है, कार्य करने का हमारा यथार्थवादी तरीका है, जबकि हमारे कुछ साझेदार दुर्भाग्य से निर्णय लेने में देरी कर रहे हैं। उन्होंने कहा, पलियानित्सिया शब्द, जो यूक्रेनी ब्रेड का एक प्रकार है, रूसियों के लिए उच्चारण करना बहुत कठिन है। इसका उपयोग कभी-कभी विनोदी रूप से युद्ध के दौरान यूक्रेनियन और रूसियों को अलग बताने के तरीके के रूप में किया गया है। जेलेंस्की ने ड्रोन मिसाइल के बारे में कहा, रूस के लिए यह बताना भी मुश्किल होगा कि वास्तव में उस पर क्या हमला हुआ है। इसके अलावा, यूक्रेनी राष्ट्रपति जेलेंस्की ने अपने शीर्ष कमांडर कर्नल जनरल ऑलेक्जेंडर सिरस्की को जनरल के पद पर पदोन्नत किया। ऑलेक्जेंडर को पदोन्नति का यह तोहफा छह अगस्त को रूस के कुर्स्क क्षेत्र में यूक्रेन की सीमा पार से हुई घुसपैठ की ओर इशारा करता है। कीव के अनुसार, यूक्रेन के आक्रमण ने कुर्स्क क्षेत्र में 90 से अधिक बस्तियों पर कब्जा कर लिया है। पोलैंड और लिथुआनिया के नेताओं के साथ एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में बोलते हुए जेलेंस्की ने कहा, यह ऑपरेशन उत्तरी शहर सुमी पर कब्जा करने की रूसी योजनाओं को रोकने के लिए एक निवारक कदम था।

ब्रिटेन में आम जन-जीवन बेहतर होने से पहले बदतर हो जाएगा, प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने दी चेतावनी

लंदन, एजेंसी। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने अपने नागरिकों को एक चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि ब्रिटेन में आम जन-जीवन बेहतर होने से पहले बदतर हो जाएगा। चार जुलाई को स्टार्मर की लेबर पार्टी ने शानदार जीत के साथ सत्ता में आई। उन्होंने बताया कि उन्हें आर्थिक के साथ सामाजिक ब्लैक होल भी विरासत में मिला है।

पीएम स्टार्मर ने कहा, हमें आर्थिक ब्लैकहोल के साथ सामाजिक ब्लैक होल भी विरासत में मिला है। इसलिए, हमें कार्रवाई करनी होगी और चीजों को अलग तरीके से करना होगा। यह कितना कठिन होगा, ईमानदारी से कहूं तो यहां जीवन बेहतर होने से पहले बदतर हो जाएगा। वित्त मंत्री रशेल रीव्स ने हाल ही में पहले बजट के दौरान खर्च में कटौती और टैक्स में वृद्धि को लेकर कठिन निर्णय की चेतावनी दी थी। लेबर पार्टी की चुनावी जीत के बाद से ही रीव्स ने लगातार पूर्व प्रधानमंत्री ऋषि सुनक की पार्टी पर 29 बिलियन डॉलर का ब्लैक होल छोड़ने का आरोप लगाया।

विपक्ष का कहना है कि रीव्स को महीनों पहले देश की वित्तीय स्थिति के बारे में पता चल गया होगा और वह अब अलोकप्रिय घोषणाओं के बारे में योजना बना रही होंगी। पीएम कीर स्टार्मर लोगों को यह बताना चाहते हैं कि चीजें जितनी हमने कभी कल्पना की थी उससे भी बदतर है। उन्होंने आगे कहा, पिछले हफ्ते हमें 29 बिलियन डॉलर का ब्लैक होल मिला और हम यह किसी को कहने नहीं देना चाहते हैं कि यह कोई राजनीतिक खेल है।

बीआरओ (ऑफिस फॉर बजट रिस्पॉन्सिबिलिटी) को इसके बारे में जानकारी नहीं है। उन्होंने चिट्ठी लिखकर ऐसा कहा। उन्हें नहीं मालूम क्योंकि पिछली सरकार ने इसे छुपाया था। पीएम स्टार्मर हाल ही में सामूहिक चाकूबाजी से भड़के दंगों पर भी बात करेंगे, जिसमें टेलर स्विफ्ट थीम पर आधारित डांस क्लास में छह से नौ साल की उम्र की तीन युवा लड़कियों की मौत हो गई थी।

रूस और यूक्रेन के बीच युद्धबंदियों का आदान-प्रदान

मॉस्को, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पोलैंड और यूक्रेन के दौरे पर गए थे। उनकी वतन वापसी हो गई है। इससे पहले यूक्रेन में पीएम मोदी ने साफ कह दिया था वह युद्ध के पक्षधर नहीं हैं और शांति का संदेश लेकर आए हैं। पीएम मोदी ने यहां तक कह दिया था कि उन्होंने रूसी राष्ट्रपति की आंख में आंख डालकर कहा था कि युद्ध किसी भी समस्या का समाधान नहीं हो सकता, ऐसे में आमने-सामने बैठकर संवाद के जरिए ही इसका हल निकालना बेहतर होगा। इसके बाद अब खबर आई है कि युद्ध में उलझे रूस और यूक्रेन ने युद्धबंदियों के आदान-प्रदान का फैसला किया है और दोनों ही देशों के 230 युद्धबंदी अपने-अपने वतन वापस पहुंच गए हैं। वैसे खबर आ रही है कि रूस और यूक्रेन के बीच युद्धबंदियों का सफलतापूर्वक आदान-प्रदान संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) की मध्यस्थता के बाद हुआ है।

एक बयान में रूसी रक्षा मंत्रालय ने कहा, दोनों देशों के बातचीत के परिणामस्वरूप, कुर्स्क क्षेत्र में पकड़े गए 115 रूसी सैनिकों को कीव शासन द्वारा नियंत्रित क्षेत्र से वापस कर दिया गया है। बदले में, यूक्रेनी सशस्त्र बलों के 115 युद्धबंदियों को स्थानांतरित कर दिया गया।

इसमें उल्लेख किया गया है कि वर्तमान में, सभी रूसी सैनिक बेलारूस के क्षेत्र में हैं, जहां उन्हें आवश्यक मनोवैज्ञानिक और चिकित्सा सहायता मिल रही है, साथ ही अपने रिश्तेदारों से संपर्क करने का अवसर भी मिल रहा है। मंत्रालय ने कहा, सभी रिहा किए गए सैनिकों को रूसी रक्षा मंत्रालय के चिकित्सा संस्थानों में इलाज और पुनर्वास के लिए रूसी संघ में पहुंचाया जाएगा। संयुक्त अरब अमीरात ने कैद से रूसी सैनिकों की वापसी के दौरान मानवीय मध्यस्थता के प्रयास किए।

यह आदान-प्रदान तब हुआ जब यूक्रेन की स्वतंत्रता की 33वीं वर्षगांठ मनाई जा रही है। यूएई के विदेश मंत्रालय ने भी पिछली बार छोड़े गए युद्धबंदियों के आदान-प्रदान के एक महीने से भी कम समय बाद दोनों देश के द्वारा एक बार फिर उसकी मध्यस्थता प्रयासों में सहयोग के लिए रूसी और यूक्रेनी सरकारों की सराहना की। इसमें कहा गया है कि यूएई के द्वारा दोनों देशों के बीच किए गए मध्यस्थता प्रयासों के माध्यम से बदले गए बंदियों की कुल संख्या 1,788 तक पहुंच गई है। यूएई मंत्रालय ने इस बात पर जोर दिया कि नई मध्यस्थता की सफलता, इस साल की शुरुआत के बाद से सातवीं बार संभव हो पाया है। इसके पीछे की वजह यूएई का दोनों पक्षों के साथ मजबूत संबंध और साझेदारी है।

अमेरिका द्वारा उत्पन्न किसी भी परमाणु खतरे से निपटने के लिए उत्तर कोरिया तैयार - विदेश मंत्रालय

सियोल, एजेंसी। उत्तर कोरिया ने शनिवार को अमेरिका की परमाणु नीति की आलोचना करते हुए कहा कि वह अमेरिका द्वारा उत्पन्न किसी भी प्रकार के परमाणु खतरे का मजबूती से सामना करेगा। उत्तर कोरिया ने अमेरिका की परमाणु नीति की निंदा करते हुए कहा है कि संयुक्त राज्य अमेरिका एकतरफा परमाणु बढ़त हासिल करने की कोशिश कर रहा है और अन्य देशों को परमाणु खतरे के रूप में पेश कर रहा है। यह जानकारी समाचार एजेंसी शिन्हुआ ने कोरियन सेंट्रल न्यूज एजेंसी के हवाले से दी है। इसमें उत्तर कोरिया के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता द्वारा जारी प्रेस बयान का हवाला दिया गया है।

बयान में कहा गया है कि संयुक्त राज्य अमेरिका के परमाणु रुख में बदलाव से वैश्विक परमाणु संतुलन, सुरक्षा वातावरण और परमाणु निरस्त्रीकरण प्रणाली पर गंभीर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। संयुक्त राज्य अमेरिका के पास वर्तमान में विश्व का सबसे बड़ा परमाणु शस्त्रागार है। बयान में कहा गया कि अमेरिका ने दक्षिण कोरिया और जापान सहित एशिया-प्रशांत क्षेत्र में अपने सहयोगियों के साथ मिलकर एक परमाणु-आधारित सैन्य ब्लॉक बनाया है।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्र इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बलवान पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोट: प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129